20 अक्टूबर, 2022 * वर्ष 31, पृष्ठ संख्या 60, अंक-10

राजस्थान सुजस

लोक संस्कृति विशेषांक

गवरी

रक्षाबंधन के दूसरे दिन से आरंभ होने वाली गवरी लगभग सवा महीने तक मेवाड़ भर में खेली जाती है। उदयपुर, राजसमंद, प्रतापगढ़ और चित्तौड़गढ़ जिलों में गवरी का अच्छा खासा प्रचलन है। यह मेवाड़ के आदिवासियों का एक लोकनृत्य है जिसमें सामाजिक संदेश होते हैं। प्रदेश और देश में सुख, शांति और खुशी की कामना के लिए गवरी का आयोजन हर साल किया जाता है। मान्यताओं के अनुसार गवरी में भाग लेने वाले लोग सवा महीने तक अपने घर और परिवार को त्याग देते हैं। ये लोग नंगे पांव रहते हैं। दिन में एक ही बार भोजन करते हैं। गवरी मंचन में लगभग 9 अलग-अलग कहानियां नृत्य और गीतों द्वारा बताई जाती हैं।

आलेख व छायाः डॉ. कमलेश शर्मा, उपनिदेशक (जनसंपर्क)

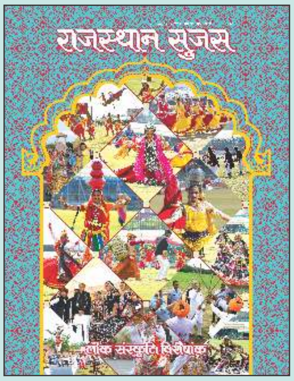

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तम शर्मा

•

सम्पादक
अलका सक्सेना

•

सह-सम्पादक
डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा

•

उप-सम्पादक
सम्पत राम चान्दोलिया
आशाराम खटीक

•

आवरण छाया
सूजस

राजस्थान सुजस में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने एवं आंकड़े परिवर्तनशील हैं। आवश्यक नहीं कि शासन उनसे सहमत हो। सुजस में प्रकाशित सामग्री का विभाग किसी भी रूप में उपयोग कर सकेगा।

ग्राफिक डिजाइनिंग
कृष्णा प्रिंटर्स

सम्पर्क
सम्पादक
राजस्थान सुजस (मासिक)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
सचिवालय, जयपुर-302005
मो. नं. 98292-71189
94136-24352
e-mail :
editorsujas@gmail.com
publication.dipr@rajasthan.gov.in
Website :
www.dipr.rajasthan.gov.in

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान का मासिक

वर्ष : 31 अंक : 10 | अक्टूबर, 2022

इस अंक में

लोक जीवन	02
सम्पादकीय	04
शेखावाटी का लोक नृत्य...	25
साक्षात्कार	26
बातचीत	28
पिछवाई कला...	29
राजस्थान की लोक लुभावनी संस्कृति	32
राजस्थान की गौरवमयी गाथा	34
लोक संस्कृति में लोक विश्वास	38
लोक संस्कृति का दिग्दर्शन...	40
थेवा कला	43
फड़ चित्रकला शैली	44
राजस्थान री पाग, बढ़ावे सब रो मान	46
लोक संस्कृति की समृद्ध...	48
सारणेश्वर महादेव का मेला	52
शिक्षा	53
लोक कला	54
पंच पर्वो का प्रतीक...	55
स्मृति शेष	56
मिशन सुरक्षित बचपन	58
धरोहर	59
तस्वीर बदलाव की	60

मरूधरा बनी निवेशधरा

05

खेलेगा राजस्थान, जीतेगा राजस्थान

09

सामयिकी

13

लोक संस्कृति

19

फोटो फीचर

30-31

आदि महोत्सव

22

सरहद पर दुर्लभ लोकवाद्यों...

50

राजस्थान सुजस के आगामी अंक के लिए मौलिक, अप्रकाशित सामग्री भिजवायें। कृपया अपने आलेख एवं फोटोग्राफ सम्पादक को e-mail : editorsujas@gmail.com पर अथवा डाक से भेजें।

राजस्थान: लोक संस्कृति का अद्भुत संगम

रंग-रंगीला राजस्थान, देश की आन, बान और शान है। यह भक्ति और शौर्य का संगम स्थल है। साहित्य, कला और संस्कृति की त्रिवेणी है। इस भू-भाग में पुरा-पाषाण युग से लेकर वैदिक सभ्यता खूब फली फूली, विभिन्न उत्खननों से प्राप्त अवशेष समृद्ध प्राचीन धरोहर का दिग्दर्शन करवाते हैं।

राजस्थान के इतिहास में लोक संस्कृति का अपना अलग स्थान है। इस पावन धरा पर ऐसे अनेक महान व्यक्तियों ने जन्म लिया, जिनके आचरण व दृढ़ता ने समाज को नई राह दिखाई। आम आदमी ने न केवल उनका अनुसरण किया वरन उनको लोक देवता, लोक देवियों व लोक संत का दर्जा प्रदान किया। हमारे यहां कहा जाता है पाबू, हड़बू, रामदे, मंगलिया मेहा। पांचू पीर पधारज्यो, गोगाजी गेहा।

स्थानीय संस्कृति की अभिव्यक्ति लोकोत्सवों में हम देख सकते हैं। त्योहार, मेले एवं उत्सव इस प्रकार रचे गए हैं कि समय, मौसम और लोक भावना का तालमेल दिखाई देता है। तीज त्योहारां बावड़ी, ले डूबी गणगौर। हमारे यहां त्योहारों की शुरुआत श्रावणी तीज से होती है तथा समापन गणगौर से होता है।

राजस्थानी लोक कला अपनी स्वाभाविक कलाकारी के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहां के कठपुतली, मांडणे, सांझी, पाने प्रसिद्ध हैं। राजस्थान की फड़ लोक कला पर तो भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया है। जनमानस के स्वाभाविक उद्गार के प्रतिबिंब लोक संगीत, लोक नाट्य, लोक कलाएं हमारे इतिहास, सामाजिक और नैतिक आदर्शों को संरक्षित करती हैं। यहां की गींदड़, कच्छी घोड़ी, बिंदोली गीत एवं ख्यालों ने खूब प्रशंसा बटोरी है। राजस्थान की रम्मत, गवरी जैसे लोकनाट्यों ने तो सामाजिक बुराइयों को हतोत्साहित करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। राजस्थान अपनी सांस्कृतिक संपदा की दृष्टि से समृद्ध है। यहां की बेजोड़ वैभवपूर्ण संस्कृति अपनी विशिष्ट पहचान रखती है।

राजस्थान सुजस का अक्टूबर माह का अंक लोक संस्कृति विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस अंक में राजस्थान में उद्योग निवेश की संभावनाओं, राजीव गांधी ओलम्पिक खेल प्रतियोगिताओं और लोक कल्याणकारी योजनाओं का भी समावेश किया गया है।

दीपों के पर्व दीपावली की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं,

(पुरुषोत्तम शर्मा)
प्रधान सम्पादक

मरुधरा बनी निवेशधरा

हेतप्रकाश व्यास
सहायक निदेशक, जनसंपर्क

जयपुर के जेईसीसी कैंपस में आयोजित 'इन्वेस्ट राजस्थान-2022' समिट प्रदेश के औद्योगिक विकास की नई इबारत गढ़ गई। लाखों-करोड़ों रुपये के निवेश के समझौतों से ना केवल रोजगार के अवसर बढ़ेंगे अपितु प्रदेश का औद्योगिक तंत्र भी कहीं ज्यादा मजबूत होगा। समिट की थीम 'कमिटेड-डिलिवर्ड रखी गई। पहली बार प्रदेश में ऐसा होगा कि जो राज्य सरकार ने वादा कर लिया उसे धरातल पर हर हाल में उतारा जाएगा। पहली बार ऐसा हुआ है जब किसी समिट में कोई एमओयू और एलओआई पर हस्ताक्षर करने की बजाए शिलान्यास और उद्घाटन किए गए।

हैप्पीनेस इंडेक्स में हुई बढ़ोतरी, स्थापित हो रहे विकास के नए आयाम

राज्य सरकार के प्रयासों से राजस्थान आज सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है। कोरोना महामारी में आई दिक्कतों के बावजूद राज्य की जीडीपी में 3 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई है। इससे राज्य की प्रति व्यक्ति आय के साथ-साथ हैप्पीनेस इंडेक्स में भी वृद्धि हुई है। रीको (राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रीयल डवलपमेंट एण्ड इन्वेस्टमेंट कॉरपोरेशन) की 390 इकाइयां राज्य में संचालित हैं तथा 147 नई खुलने जा रही हैं। इससे औद्योगिकीकरण का विस्तार उपखंड व तहसील स्तर तक हो जाएगा। राज्य सरकार सीआईआई (चैम्बर ऑफ इण्डियन इण्डस्ट्रीज) के साथ बेहतरीन समन्वय के साथ कार्य कर रही है। तकनीकी उद्योगों के लिए युवा विशेषज्ञ उपलब्ध कराने हेतु फिनटेक पार्क और राजीव गांधी फिनटेक डिजिटल इन्स्टीट्यूट का निर्माण किया जा रहा है। स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने के लिए जयपुर, जोधपुर व कोटा में इनोवेशन हब की स्थापना की जा रही है।

प्रदेश में निवेश के लिए है बेहतरीन माहौल

प्रदेश में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं। सिंगल विन्डो सिस्टम एवं वन स्टॉप शॉप से उद्योग स्थापित करने के लिए आवश्यक अनुमतियां मिलनी आसान हुई हैं। राज्य में लघु, सूक्ष्म एवं मध्यम उद्यम (स्थापना एवं प्रवर्तन का सुदृढ़ीकरण) अधिनियम के तहत नए उद्योग स्थापित करने के लिए जरूरी अनुमोदनों में 3 वर्ष की छूट दी गई। इसे अब बढ़ाकर 5 वर्ष कर दिया गया है। कोरोनाकाल में छोटे उद्योगों को बंद

होने से बचाने के लिए राज्य सरकार द्वारा आर्थिक संबल दिया गया। राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं के कारण राज्य में लैबर अनरेस्ट की भी कोई स्थिति नहीं है।

समावेशी संतुलित औद्योगिक विकास के लिए लागू की गई औद्योगिक नीति

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का सपना है कि निवेश की दृष्टि से राजस्थान अव्वल रहे और राजस्थान के लोगों को रोजगार मिले। डीएमआईसी का बड़ा हिस्सा राजस्थान से गुजरता है जो भविष्य में विकास की धुरी साबित होगा। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का 25 प्रतिशत भाग राज्य में आता है। देश के 40 प्रतिशत बाजारों तक हमारे राज्य की पहुंच है। खनिज सम्पदा की दृष्टि से राजस्थान का देश में दूसरा स्थान है। राज्य जिंक एवं लेड का एकमात्र उत्पादक राज्य है। सिरेमिक उद्योग के लिए आवश्यक अधिकांश खनिज यहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। समावेशी संतुलित औद्योगिक विकास के दृष्टिकोण से राज्य में औद्योगिक नीति लागू की गई है।

एनआरआर पॉलिसी और राजस्थान फाउंडेशन की वेबसाइट लॉन्च

मुख्यमंत्री ने एनआरआर सत्र के दौरान पहली नॉन रेजीडेंट राजस्थानी (एनआरआर) पॉलिसी और राजस्थान फाउंडेशन की वेबसाइट को लॉन्च किया। मुख्य सचिव श्रीमती उषा शर्मा के अनुसार राजस्थान के लोग कहीं भी रहें, राजस्थान उनसे दूर नहीं रह सकता। इन्वेस्ट समिट में प्रवासी राजस्थानियों की उपस्थिति उनके मातृभूमि के प्रति प्रेम व समर्पण को दर्शाती है। यह अपने आप में पहला ऐसा इन्वेस्टमेंट समिट है, जिसमें एक भी एमओयू साइन नहीं हो रहा है बल्कि समिट से पहले ही अधिकांश निवेश के एमओयू और एलओआई हस्ताक्षरित हो चुके हैं और 40 प्रतिशत से अधिक एमओयू फलीभूत भी हो चुके हैं। समिट में सामाजिक सरोकार से जुड़े करीब 300 करोड़ रुपये के एमओयू हस्ताक्षरित हुए हैं। प्रवासी राजस्थानियों ने प्रदेश के इतिहास को पन्नों से बाहर निकालकर विराट स्वरूप प्रदान किया है।

बिजनेस टायकूंस ने माना राजस्थान बन रहा सिरमौर

अडाणी ग्रुप के चेयरमैन श्री गौतम अडाणी के अनुसार सामाजिक उन्नयन में राजस्थान काफी आगे निकल चुका है। राज्य सरकार द्वारा आरम्भ की गई उड़ान और अनुप्रति कोचिंग जैसी योजनाएं सराहनीय है। राज्य सरकार की नीतियों से राज्य में उद्योग स्थापित करने में लगने वाला समय काफी कम हो गया है। हाल ही में सरकार द्वारा सभी अनुमतियां दिए जाने से सुपर थर्मल पावर प्लांट 36 महीने के रिकॉर्ड समय में लगकर तैयार हो गया। राज्य सरकार की नीतियों से राज्य का विषम भूगोल इसकी ताकत बनकर उभरा है। अडाणी ग्रुप राज्य में विंड सोलर हाइब्रिड पावर प्लांट में भारी निवेश करने जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की निवेश हितैषी नीतियों, दूरदर्शी सोच और सक्रियता का ही परिणाम है कि प्रदेश में 7-8 अक्टूबर को सम्पन्न हुए इनवेस्ट राजस्थान समिट-2022 में देश-दुनिया के उद्योगपतियों ने 11 लाख करोड़ रुपए के एमओयू और एलओआई कर प्रदेश को निवेशधरा के रूप में स्थापित कर दिया। इस निवेश से ना केवल प्रदेश में औद्योगिक विकास को अभूतपूर्व गति मिलेगी बल्कि 10 लाख लोगों के लिए रोजगार सृजन का भी अवसर मिल सकेगा।

वेदान्ता ग्रुप के चेयरमैन श्री अनिल अग्रवाल के अनुसार प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों में राजस्थान अग्रणी राज्य है। तेल के क्षेत्र में भी राज्य में अपार संभावनाएं हैं। खनन उद्योग भी यहां पर काफी विकसित है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के निर्णयों से उद्यमियों व सरकार के मध्य समन्वय बेहतर हुआ है। युवाओं व बालिकाओं के लिए जयपुर में उत्कृष्ट खेल सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए वेदान्ता ग्रुप राज्य सरकार के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। इसके अलावा आए सब उद्यमियों ने प्रदेश के विकास को मुक्तकंठ से सराहा।

अडाणी के सहयोग से 2 जिलों में बनेंगे मेडिकल कॉलेज

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की उपस्थिति में अडाणी ग्रुप के चेयरमैन श्री गौतम अडाणी ने अडाणी फाउंडेशन के द्वारा राज्य के दो जिलों में सिविल हॉस्पिटल के साथ मेडिकल कॉलेज बनाए जाएंगे। साथ ही उदयपुर में क्रिकेट स्टेडियम बनाने में राज्य सरकार का पूरा सहयोग भी किया जाएगा।

उद्यमियों को एक मंच पर लाने के लिए किया कॉन्क्लेव का आयोजन

समिट के अग्रणी व्यावसायिक उद्यमियों, निवेशकों, विचारकों एवं नीति निर्माताओं के विविध समूहों को एक मंच पर लाने के लिए विभिन्न कॉनक्लेव का आयोजन किया गया। इससे संबंधित सेक्टर्स में संभावनाओं और वर्तमान परिदृश्य पर व्यापक स्तर पर चर्चा हो सकी। समिट के पहले दिन पांच सेक्टोरल कॉनक्लेव के साथ पैनल डिस्कशंस का आयोजन किया गया। 'जेईसीसी' के ताल छापर हॉल में 'कनेक्टिंग रूट्स एंड फर्जिंग पार्टनरशिप्स' थीम पर 'एनआरआर कॉनक्लेव' आयोजित किया गया। एनआरआर कॉनक्लेव के समानान्तर केवलादेव हॉल में टूरिज्म कॉनक्लेव और मुकुंदरा हॉल में स्टार्टअप कॉनक्लेव का आयोजन किया गया। इसी प्रकार एग्री बिजनेस कॉनक्लेव का आयोजन 'फेसिलिटेटिंग एग्रीबिजनेस-रोल ऑफ स्टेट, प्राइवेट सेक्टर एंड स्टार्टअप्स' थीम पर किया गया। पहले दिन के कार्यक्रमों का समापन ताल छापर हॉल में आयोजित 'फ्यूचर रेडी सेक्टर्स कॉनक्लेव: एक्सप्लोरिंग इनवेस्टमेंट्स इन फ्यूचर रेडी सेक्टर्स' के साथ हुआ।

6 विभूतियों को मिला राजस्थान रत्न सम्मान

मुख्यमंत्री ने विभिन्न क्षेत्रों में अपने उत्कृष्ट व असाधारण कार्यों से देश विदेश में राजस्थान को गौरवान्वित करने वाली 6 विभूतियों को राजस्थान रत्न सम्मान से सम्मानित किया। इन सभी को प्रशस्ति पत्र, शॉल, मोमेन्टो व 1 लाख रुपये की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया। इनमें न्याय के क्षेत्र से अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय में नियुक्त न्यायधीश श्री दलवीर भंडारी, भारत के पूर्व मुख्य न्यायधीश श्री आरएम लोढ़ा, उद्योग के क्षेत्र से वेदान्ता ग्रुप के चेयरमेन श्री अनिल अग्रवाल, आर्सेलर मित्तल के चेयरमेन श्री एलएन मित्तल तथा कला के क्षेत्र में प्रसिद्ध निर्माता श्री केसी मालू व प्रसिद्ध उर्दू शायर श्री शीन काफ निजाम को 'राजस्थान रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रिप्स-2022 पॉलिसी का हुआ आगाज

उद्घाटन सत्र के दौरान मुख्यमंत्री द्वारा 51 एमओयू एवं एलओआई, 25 औद्योगिक क्षेत्र और राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2022 का भी शुभारंभ किया गया। रिप्स-2022 पॉलिसी राजस्थान को देश में सबसे पसंदीदा निवेश गंतव्य बनाने के दृष्टिकोण से बनाई गई है। यह नई नीति अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है और राज्य भर में हरित पहल, समावेशी विकास, रोजगार सृजन और भविष्य की प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने पर केन्द्रित है।

40 फीसदी एमओयू-एलओआई उतरे धरातल पर

दो दिवसीय इन्वेस्ट राजस्थान समिट-2022 कार्यक्रम के पहले दिन 7 अक्टूबर को पूर्वाह्न में इसका उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, देश-विदेश की हस्तियों के समक्ष किया। उद्घाटन सत्र के बाद विभिन्न हॉलों में एनआरआर, पर्यटन, स्टार्टअप, फ्यूचर रेडी सेक्टर, एग्री बिजनेस समानान्तर सेक्टोरल कॉनक्लेव आयोजित किए गए, जबकि अगले दिन 8 अक्टूबर को एमएसएमई कॉनक्लेव आयोजित किया गया, जिसमें उद्योगपतियों ने सक्सेज स्टोरीज साझा की। समिट के तहत नवीन बेंचमार्क स्थापित करते हुए राजस्थान सरकार द्वारा अब तक 10.44 करोड़ रुपये के निवेश के लिए 4,192 एमओयू / एलओआई पर सफलतापूर्वक हस्ताक्षर किये जा चुके हैं। प्राप्त हुए एमओयू / एलओआई में से 40 प्रतिशत पहले ही धरातल पर उतर चुके हैं अथवा क्रियान्वयन के उन्नत चरणों में हैं। समिट का उद्देश्य राजस्थान में विभिन्न निवेश क्षेत्रों में उपलब्ध निवेश अवसरों का व्यापक प्रचार कर नए निवेश को आकर्षित करना रहा। नए निवेश के साथ राज्य में रोजगार के अवसरों को सृजित करना तथा राज्य को एक औद्योगिक गन्तव्य के रूप में स्थापित करना भी इसका एक उद्देश्य है।

प्रदेश में एमएसएमई का भविष्य सुरक्षित और उज्जवल

एमएसएमई सेक्टर जितना मजबूत सेक्टर होगा, उतनी ही तेजी से आर्थिक प्रगति होगी। आज देश की जीडीपी में एमएसएमई का 30 प्रतिशत योगदान है। राजस्थान में लगभग 6 लाख से अधिक एमएसएमई उद्योग स्थापित है। यहां 1.35 लाख से अधिक निर्यातक हैं। इस सेक्टर में रोजगार की सबसे अधिक संभावनाएं हैं। राज्य सरकार ने इसी सोच के साथ एमएसएमई को बढ़ावा देने के लिए अनेक नीतिगत फैसले लिए हैं। प्रदेश में एमएसएमई का भविष्य सुरक्षित और उज्जवल है। राज्य में एमएसएमई के महत्त्व, उसकी जरूरतों और उनकी कठिनाइयों को समझते हुए 2019 में एमएसएमई एक्ट लागू किया, यह

वरदान साबित हुआ। वर्ष 2022-23 के बजट में इस अधिनियम के तहत एमएसएमई को सरकार की स्वीकृति, अनुमति, निरीक्षण से 3 वर्ष तक मिलने वाली छूट को बढ़ाकर 5 वर्ष कर दिया है। कोविड-19 के दौरान एमएसएमई को जो आर्थिक हानि हुई, उससे राहत दिलाने के लिए अहम फैसले लिए। एमनेस्टी योजना लाकर कई प्रकार की छूट प्रदान की गई।

इन दिग्गजों ने लिया समिट में हिस्सा

उद्घाटन समारोह में दुनिया भर से प्रतिष्ठित कॉर्पोरेट समूहों के दिग्गज लोगों ने भाग लिया, जिनमें श्री गौतम अडानी, संस्थापक एवं अध्यक्ष, अडानी समूह, श्री अनिल अग्रवाल, अध्यक्ष, वेदांता समूह, श्री सी के बिड़ला, अध्यक्ष, नेशनल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज लिमिटेड, डॉ. प्रवीर सिन्हा, सीईओ एवं प्रबंध निदेशक, द टाटा पावर कंपनी लिमिटेड; डॉ. अनीश शाह, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड; श्री बी संथानम, सीईओ एवं अध्यक्ष, एशिया प्रशांत एवं भारत क्षेत्र, सेंट-गोबेन इंडिया; श्री अजय एस श्रीराम, अध्यक्ष एवं वरिष्ठ प्रबंध निदेशक, डीसीएम श्रीराम लिमिटेड और श्री सुधीर मेहता अध्यक्ष एवं टोरेंट समूह शामिल थे। राज्य सरकार की ओर से विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री प्रतापसिंह खाचरियावास, राजस्थान लघु उद्योग विकास निगम के चेयरमेन श्री राजीव अरोड़ा, मुख्य सचिव श्रीमती उषा शर्मा, अतिरिक्त मुख्य सचिव उद्योग श्रीमती वीनू गुप्ता, आर्थिक सलाहकार श्री अरविंद मायाराम, रीको चेयरमैन श्री कुलदीप रांका, सीआईआई के महानिदेशक श्री चन्द्राजीत बनर्जी सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि, देश-विदेश के डेलिगेट व विभागाधिकारी उपस्थित रहे।

तीस लाख लोगों की भागीदारी ने रचा इतिहास, अब हर वर्ष होंगे आयोजन

खेलेगा राजस्थान, जीतेगा राजस्थान

मुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों को हॉकी और कबड्डी के लिए किया प्रोत्साहित

हरि शंकर आचार्य
सहायक निदेशक, जनसंपर्क

प्रवेश परदेशी
जनसंपर्क अधिकारी

ग्रामीण क्षेत्रों की खेल प्रतिभाओं को तराशने तथा इन्हें आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की अभिनव पहल पर राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों के तहत प्रदेश के सभी 33 जिलों में ग्राम पंचायत, ब्लॉक और जिला स्तरीय प्रतियोगिताएं आयोजित हुई।

हॉकी के जादूगर मेजर ध्यान चंद के जन्म दिवस 29 अगस्त से 1 अक्टूबर तक तीनों स्तर पर क्रमशः आयोजित प्रतियोगिताएं पूरे देश के लिए एक मिसाल थीं, क्योंकि इन खेलों में लगभग तीस लाख खिलाड़ियों की भागीदारी रही। इनमें 10 लाख महिलाएं भी शामिल रहीं। पूरे प्रदेश में 34 दिनों तक खेलों के प्रति उत्साह का माहौल रहा। इन खेलों में हर उम्र एवं वर्ग के लोग जात-पाँत के भेदभाव से ऊपर उठकर साथ खेलते दिखे।

ग्राम पंचायत स्तरीय प्रतियोगिताओं में सास-बहू, देवरानी-जेठानी, मां-बेटी का साथ खेलना नया अनुभव था, वहीं कहीं-कहीं तीन-तीन पीढ़ियों के लोगों ने एक साथ खेलकर आपसी सौहार्द को और अधिक मजबूत किया।

राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों ने प्रदेश में प्रेम, भाईचारे तथा साम्प्रदायिक सौहार्द को और अधिक प्रगाढ़ किया। ग्राम पंचायत स्तर पर लगभग दो लाख टीमों का गठन होना किसी कीर्तिमान से कम नहीं था। तीनों स्तर की स्पर्धाओं से पूर्व अभ्यास सत्रों का आयोजन भी राज्य सरकार का ऐतिहासिक निर्णय रहा। इस दौरान खिलाड़ियों में सकारात्मक स्पर्धा देखने लायक थी। उदीयमान खिलाड़ियों का उत्साह चरम पर रहा और इनमें जीत की ललक देखने को मिली।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जोधपुर जिले की लूणी पंचायत समिति की ग्राम पंचायत के पाल गांव से 29 अगस्त को इन खेलों का आगाज किया। ब्लॉक स्तर पर चूरू, सीकर, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़, उदयपुर, बूंदी और नागौर सहित विभिन्न जिलों में इन प्रतियोगिताओं का अवलोकन किया। इसी प्रकार एक अक्टूबर को जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं के समापन अवसर पर बीकानेर, हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर में मुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों के बीच पहुंचकर इनकी हौसला अफजाई की।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को अपने बीच पाकर खिलाड़ियों में भी जोश का संचार हुआ। इन खिलाड़ियों की खुशी का ठिकाना नहीं

था। मुख्यमंत्री ने भी इन खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया और इनके बीच बैठकर परम्परागत खेलों के इन मुकाबलों को देखा।

इसमें कोई संदेह नहीं कि राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेल प्रदेश में खेलों के प्रति सकारात्मक माहौल बनाने की मुख्यमंत्री की दूरगामी सोच का परिणाम है। मुख्यमंत्री इन खेलों के सफल आयोजन के लिए प्रतिबद्ध रहे और इसकी तैयारियों की नियमित समीक्षा करते रहे। ओलम्पिक जैसे स्तरीय मुकाबलों की तर्ज इन खेलों की मशाल पूरे प्रदेश से होकर गुजरी, जिससे खेलों का वातावरण बन सके। इसी श्रृंखला में खेलों का मस्कट 'शेरू' बनाया गया और थीम सांग के माध्यम से इसमें अधिक से अधिक भागीदारी का आह्वान किया गया। इसके परिणाम स्वरूप लाखों प्रदेशवासी इन खेलों के आयोजन के साक्षी बन सके।

ग्राम पंचायत स्तर पर विजेता रहने वाले लाखों खिलाड़ियों को टी-शर्ट और प्रमाण पत्र प्रदान करने के साथ खेल मैदानों में आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए संकल्पबद्ध तरीके से कार्य किया गया। इस श्रृंखला में प्रदेश भर में हजारों खेल मैदान तैयार हुए, जहां के नौनिहाल भविष्य में भी तैयारी कर सकेंगे। इन खेलों की बदौलत प्रदेश में बड़ी संख्या में खेल सामग्री भी खरीदी जा सकी, जो कि अभ्यास के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण साबित होगी।

यूं देखें तो, मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में खेलों के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने की नई इबारत लिखी है। प्रदेश में अब तक 229 खिलाड़ियों को आउट ऑफ टर्न नौकरियां दी जा चुकी हैं। ओलम्पिक खेलों के पदक विजेताओं की प्रोत्साहन राशि में बड़ा इजाफा करते हुए स्वर्ण पदक जीतने वाले खिलाड़ी को 3 करोड़, रजत पदक विजेता को 2 करोड़ और कांस्य पदक विजेता को एक करोड़ रुपये दिए जाने लगे हैं।

इसी प्रकार सरकारी नौकरियों में खिलाड़ियों का 2 प्रतिशत कोटा निर्धारित किया गया है। इस मामले में भी राजस्थान ने देश के समक्ष मिसाल प्रस्तुत की है। पदक विजेता खिलाड़ियों को 25 बीघा भूमि आवंटित की जा रही है। राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों के माध्यम से प्रदेश को हजारों खिलाड़ी मिलेंगे।

मुख्यमंत्री ने राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों का आयोजन प्रतिवर्ष करवाने तथा ग्रामीण खेलों की तर्ज पर ही शहरी क्षेत्रों में भी ओलम्पिक खेल आयोजित करवाने की महत्त्वपूर्ण घोषणा की। खिलाड़ियों के प्रदर्शन में निरंतरता आएगी। प्रदेश में खिलाड़ियों की नई पौध तैयार होगी, जो खेलों के मानचित्र पर प्रदेश का नाम रोशन करेंगी।

कुल मिलाकर राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों के माध्यम से प्रदेश में हुई अनूठी शुरुआत राजस्थान के खेल भविष्य का निर्धारण करेगी और मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की 'खेलेगा राजस्थान, जीतेगा राजस्थान' की परिकल्पना भी साकार हो सकेगी। यह खेल प्रदेश में खेलों के विकास की नई इबारत लिखेंगे और प्रदेश के आने वाले कल को स्वर्णिम बनाएंगे।

राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों का आयोजन समूचे राज्य में खेलों को प्रोत्साहन देने में मिसाल बना है। खुद मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत भी पीछे नहीं रहे और खिलाड़ियों के साथ खेलों में भाग लेकर उनका उत्साहवर्धन भी किया। उदयपुर जिले के गोगुन्दा उपखंड के सूरण गांव में आयोजित राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों की ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिता में खिलाड़ी उस समय हर्ष से फूले नहीं समाए जब खुद मुख्यमंत्री उनके साथ हॉकी और कबड्डी में सम्मिलित होने पहुंच गए।

मुख्यमंत्री उदयपुर जिले के गोगुन्दा ब्लॉक के गांव सूरण के एक दिवसीय दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने एक भव्य जन सभा को भी संबोधित किया जहाँ जिलेभर से लोग उन्हें सुनने पहुंचे। यहां उन्होंने प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए अपने विचार रखे, महत्त्वपूर्ण घोषणाएं कीं और साथ ही विकास कार्यो का लोकार्पण-शिलान्यास भी किया।

देश में हो प्रेम और भाईचारा

मुख्यमंत्री का मानना है कि देश में प्रेम, भाईचारा एवं शांति कायम रहना जरूरी है। देश के लोग सद्भाव के साथ अपना जीवनयापन करें। राजीव गांधी ग्रामीण ओलंपिक खेलों के माध्यम से भी हमने प्रदेश में भाईचारा बढ़ाने का प्रयास किया है। ग्रामीण ओलम्पिक से गांव-गांव में खेलों को लेकर अलख जगी है एवं हर वर्ग के लोग साथ मिल कर खेल रहे हैं। इन खेलों में 30 लाख से अधिक व्यक्तियों ने पंजीयन कराया है जो अपने आप में मिसाल है।

विभिन्न विकास कार्यों और सौगातों को किया साझा

वर्ष 2023 में भी ग्रामीण ओलंपिक खेलों का आयोजन किया जाएगा। सरकार ने मायरा की गुफा के जीर्णोद्धार के लिए 5 करोड़ 40 लाख रुपये स्वीकृत किए हैं। इसके अलावा सड़कों के सुधार के लिए जसवंतगढ़ से रणकपुर तक सड़क चौड़ाईकरण और सुदृढ़ीकरण के लिए 23 करोड़ 10 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। 13 अन्य नवीन सड़कों के लिए 12 करोड़ 50 लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं। मुख्यमंत्री श्री गहलोत ने गाँव सूरण स्थित खेल मैदान में 50 लाख रुपये की लागत से भव्य स्टेडियम बनाने की घोषणा की। साथ ही सायरा और गोगूंदा में मेजर ध्यानचंद स्टेडियम स्वीकृत किया है। सायरा और गोगूंदा में अंबेडकर भवन निर्माण के लिए 1-1 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए।

राजस्थान में हो रहा चहुंमुखी विकास

वर्तमान में लगभग 24 हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन राजस्थान में हो रहा है, जबकि आजादी के समय सिर्फ 13 मेगावाट बिजली का उत्पादन हुआ करता था। राज्य सरकार ने किसानों के लिए अलग बजट पेश किया है। किसानों को एक हजार रुपये का प्रतिमाह अनुदान बिजली बिलों में दिया जा रहा है, जिससे 8 लाख किसानों का बिजली बिल जीरो हुआ है। बिजली बिलों में अनुदान दिया गया, जिससे 45 लाख परिवारों का बिजली का बिल जीरो हो सका है। इसके अलावा अन्य परिवारों का बिजली बिल भी कम हुआ और महंगाई के इस दौर में उन्हें राहत मिली। राज्य सरकार ने इस कार्यकाल के तीन वर्षो में 210 महाविद्यालय खोले जिनमें 90 कन्या महाविद्यालय हैं।

फ्री इंटरनेट सेवा के साथ मोबाइल शीघ्र

राज्य सरकार 1 करोड़ 35 लाख परिवारों की महिला मुखियाओं को 3 वर्ष फ्री इंटरनेट सेवा के साथ फ्री स्मार्ट फोन देने जा रही है। इससे ऑनलाइन शिक्षा एवं राजकीय योजनाओं से महिलायें आसानी से जुड़ सकंगी। राज्य सरकार द्वारा 20 हजार छात्राओं को स्कूटी दी जा रही है। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से दस लाख रुपए का निःशुल्क उपचार निजी चिकित्सालयों में आमजन ले पा रहे हैं। इस योजना में 5 लाख रुपये का दुर्घटना बीमा भी शामिल किया गया है। उल्लेखनीय है कि सरकारी अस्पतालों में पहले ही आईपीडी और ओपीडी फ्री कर दी गई है।

गायों के लिए अलग विभाग का गठन

राज्य सरकार ने गायों के लिए अलग से विभाग का गठन किया है। राज्य सरकार 09 माह के लिए 750 करोड़ रुपये का अनुदान गौशालाओं को देने जा रही है। वर्तमान में रोजगार प्राप्त करने में अंग्रेजी की महत्ता को देखते हुए महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय खोले गए जो कि आज आकर्षण का केंद्र हैं। ओपीएस लागू होने से राज्य कर्मचारियों को सुरक्षा की भावना प्राप्त हुई है। किसान, मजदूरों और सभी वर्गो के लिए सामाजिक सुरक्षा की योजनाएं संचालित हैं। राज्य सरकार लम्पी की रोकथाम हेतु दिन-रात प्रयास कर रही है।

गांव, गरीब, आदिवासियों और पिछड़ों को प्राथमिकता

राज्य सरकार किसी भी क्षेत्र में कोई कमी नहीं रख रही है। मुख्यमंत्री ने गांव, गरीब, आदिवासियों और पिछड़ों को प्राथमिकता दी है। राजस्थान का कोरोना प्रबंधन उत्कृष्ट रहा, किसी व्यक्ति की मृत्यु

ऑक्सीजन की कमी से नहीं होने दी। राज्य सरकार ने सभी दलों के जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, धर्मगुरुओं को साथ लेकर कोरोना रोकथाम का कार्य बखूबी किया। इससे भीलवाड़ा मॉडल का नाम दुनियाभर में हुआ। 'कोई भूखा न सोए' अभियान के तहत सामूहिक प्रयासों से किसी भी व्यक्ति को राजस्थान में भूखा नहीं सोने दिया। शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क सहित समस्त क्षेत्रों में चहूंमुखी विकास की ओर राजस्थान आगे बढ़ रहा है।

विकास कार्यो का लोकार्पण व शिलान्यास

मुख्यमंत्री ने 1.75 करोड़ रुपये की लागत से तैयार केजीबीवी नांदेशमा ब्लॉक सायरा के आवासीय भवन का लोकार्पण किया। इसके अलावा 6.07 करोड़ रुपये की लागत से उदयपुर की 20 पंचायत समितियों में बनने जा रहे मेजर ध्यानचंद खेल स्टेडियम का शिलान्यास किया। 18.92 करोड़ रुपये की लागत से 88 ग्राम पंचायतों में खेल मैदान के विकास कार्यो का भी मुख्यमंत्री द्वारा शिलान्यास किया गया।

अरुण जोशी
अतिरिक्त निदेशक, जनसंपर्क

गांधी जयन्ती पर सर्वधर्म प्रार्थना सभा बनी विश्व रिकॉर्ड

गांधी जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में प्रदेशभर से लोगों ने एक साथ मिलकर सर्वधर्म प्रार्थना करने का विश्व रिकॉर्ड बनाया। इसके लिए वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस, लंदन के प्रतिनिधि द्वारा मुख्यमंत्री को प्रोविजनल सर्टिफिकेट दिया गया। विभिन्न विद्यालयों से आये बच्चों ने हाथों में तिरंगा लहराते हुए वैष्णव जन तो तेने कहिये, दे दी हमें आजादी सहित भजनों को सुना।

"महात्मा गांधी जी के विचारों और सिद्धांतों को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। आज देश में जो हिंसात्मक घटनाएं हो रही हैं इन्हें रोकने के लिए गांधी जी द्वारा दिखाए गए शांति और अहिंसा के रास्ते पर चलना होगा। आज देश में गांधी जी के सिद्धांतों के अनुसरण से ही लोकतंत्र कायम है। गांधीजी द्वारा मानवाधिकारों की रक्षा के लिए शांति का मार्ग अपनाने का संदेश दिया गया। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर राज्य सरकार द्वारा शांति एवं अहिंसा विभाग का गठन भी किया गया है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की सादगी, उनका संघर्ष और त्याग भरा जीवन हमें अभावों में भी शिखर पर पहुंचने की सीख देता है। युवा पीढ़ी उनके विचारों को अपनाकर आगे बढ़े। गांधी जी और शास्त्री जी के जीवन आदर्शो पर चलकर युवा पीढ़ी देश और प्रदेश की प्रगति में अहम भूमिका निभाएं। गांधी जी के विचार आज सारे विश्व के लिए प्रासंगिक है। उन्होंने अपने विचारों और जीवनशैली से विश्व को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अहिंसावादी विचारधारा ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया।"

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

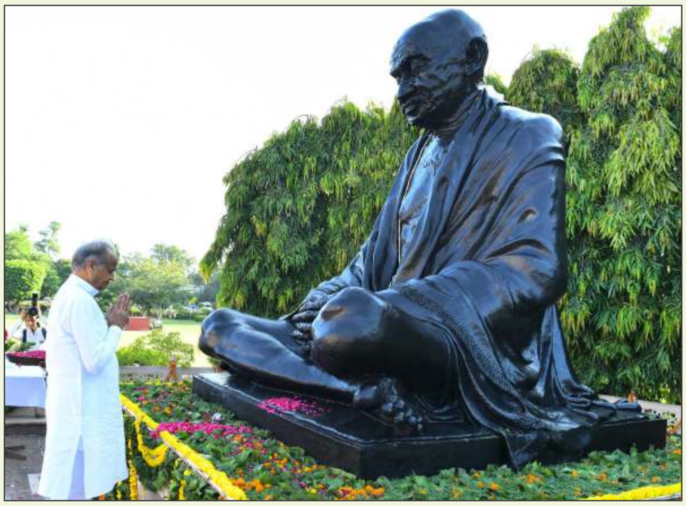

5 गांधीवादी विचारकों को मिला गांधी सद्भावना सम्मान

गांधी जयन्ती के अवसर पर मुख्यमंत्री ने गांधी जी की विचारधारा पर चलते हुए समाज की उत्कृष्ट सेवा करने वाले 5 गांधीवादी विचारकों को गांधी सद्भावना सम्मान से सम्मानित किया। इनमें प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक डॉ. एस.एन. सुब्बाराव (मरणोपरान्त), श्री नेमीचंद जैन (मरणोपरान्त), श्री अमरनाथ भाई जी, गांधी पीस फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री कुमार प्रशांत तथा भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के फाउंडर और चीफ पैटर्न श्री डी.आर. मेहता शामिल थे। इन्हें मुख्यमंत्री द्वारा 5 लाख रुपये की सम्मान राशि, मोमेन्टो, प्रशस्ति पत्र देकर व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। समाज के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाले गांधीवादी विचारकों को प्रतिवर्ष गांधी सद्भावना सम्मान दिया जाएगा। साथ ही उन्होंने सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के इंटीग्रेटेड पोर्टल www.schemes.rajasthan.gov.in का लोकार्पण किया। आमजन 61 विभागों की 482 योजनाओं के बारे में यहां से जानकारी ले सकते हैं।

शांति एवं अहिंसा विभाग एक अभिनव पहल

मुख्यमंत्री ने गांधी जी के विचारों को प्रसारित करने के लिए पहली बार अधिकारिक तौर पर एक अलग विभाग का निर्माण किया है। राजस्थान ऐसा करने वाला एकमात्र राज्य है। महात्मा गांधी के सिद्धांतों और आदर्शों पर चलते हुए हिंसामुक्त समाज की स्थापना के लिए शांति एवं अहिंसा विभाग की स्थापना की गई है। ये विभाग गांधी जी के विचारों को घर-घर तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है, ताकि आमजन सभी प्रकार की हिंसा के उन्मूलन के लिए प्रेरित हों।

अहिंसावादी विचारधारा से विश्व में भारत की अलग पहचान

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने कार्यकाल में संयुक्त राष्ट्र संघ में 2 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस घोषित करने का प्रस्ताव रखा। इसका सभी देशों ने अनुमोदन किया। आज इस दिन को पूरी दुनिया अहिंसा दिवस के रूप में मना रही है, यह देश के लिए गौरव का विषय है। पूरे विश्व में देश को गांधीवादी विचारधारा से एक अलग पहचान मिली है। आज विविधताओं से भरे हमारे देश में युवाओं की चेतना में गांधी जी के विचारों का व्यापक समावेश आवश्यक है। गांधी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर महान वैज्ञानिक आइन्स्टाइन का मानना था कि आने वाली पीढ़ियों को विश्वास नहीं होगा कि ऐसा महापुरुष कभी इस संसार में आया था।

गांधी जी से मिली शरणार्थियों की सेवा करने की प्रेरणा

1971 में देश की पूर्वी सीमा पर आए शरणार्थी संकट के दौरान शरणार्थी शिविरों में सेवा करने की प्रेरणा गांधी जी से मिली। गांधी जी की जीवनी से परपीड़ा को अपना समझने तथा इसके निवारण के लिए संकल्पित होकर कार्य करने की सीख प्राप्त हुई। गांधी जी के विचारों का संस्थान गांधी पीस फाउण्डेशन से लोग जुड़े रहे। इसके शिविरों में गांधी जी के अहिंसा, करुणा, दया व आपसी सद्भाव के सिद्धांतों को आत्मसात करने का अवसर मिलता है। मुख्यमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती पर श्रद्धांजलि दी। देश के विकास में उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। मुख्यमंत्री एसएमएस स्टेडियम में उपस्थित बच्चों के बीच जाकर उनसे मिले। वर्तमान परिदृश्य में जहां विभिन्न देशों के मध्य युद्ध और तनाव की स्थिति है, केवल महात्मा गांधी का अहिंसावादी दर्शन ही शांति की पुनर्स्थापना कर सकता है।

गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत पर चलकर ही एक आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयन्ती पर शासन सचिवालय तथा गांधी सर्किल स्थित बापू की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। शासन सचिवालय में मुख्यमंत्री ने महात्मा गांधी की प्रतिमा के समक्ष बैठकर गांधी जी के प्रिय भजन वैष्णव जन तो तेने कहिये, रघुपति राघव राजा राम, राम रतन धन पायो व राम धुन का श्रवण किया।

वंचितों एवं दलितों का उत्थान सरकार की प्राथमिकता

राज्य सरकार की संविधान में अटूट आस्था है। संविधान के नीति-निदेशक तत्वों के अनुसार सरकार को राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय सुनिश्चित करना चाहिए एवं सामाजिक असमानता का उन्मूलन करना चाहिए। राज्य सरकार संविधान प्रदत्त आरक्षण की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी ने संविधान संशोधन के माध्यम से स्थानीय व ग्रामीण निकायों में एससी-एसटी का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया था। प्रदेश सरकार ने राजकीय सेवाओं में पदोन्नति में आरक्षण को बरकरार रखा है ताकि एससी-एसटी वर्ग के कर्मचारी लाभान्वित हो सकें। इसके साथ ही डॉ. भीमराव अम्बेडकर दलित, आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना के माध्यम से दलित उद्यमियों को आर्थिक रूप से संबल देने का कार्य सरकार द्वारा किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा सामाजिक असमानता मिटाने के लिए अनेक जन कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। भारत के प्रथम कानून मंत्री डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा रचित संविधान के द्वारा देश में सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार सुनिश्चित किए गए हैं। समाज में समानता व समरसता सुनिश्चित करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है।

राजस्थान मॉडल को पूरे देश में लागू करने की आवश्यकता

स्वास्थ्य, बिजली, पानी, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, सड़क, रोजगार जैसे क्षेत्रों में राज्य सरकार की नीतियों से राजस्थान एक मॉडल स्टेट बन चुका है। युवाओं, महिलाओं, विद्यार्थियों, वृद्धजन, दिव्यांगों से लेकर सरकारी कर्मचारियों तक सभी को सामाजिक सुरक्षा देने का कार्य राज्य सरकार कर रही है। जनकेन्द्रित नीतियों के माध्यम से आमजन को ज्यादा से ज्यादा राहत पहुंचाना एक लोकतान्त्रिक सरकार का कर्तव्य है। आज देश में महंगाई और बेरोजगारी का एक बड़ा संकट है। आमजन को राहत देने के लिए राजस्थान मॉडल को पूरे देश में लागू किये जाने की आवश्यकता है।

विकास कार्यों से राजस्थान रच रहा है इतिहास

कोरोनाकाल में सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन के लिए 'भीलवाड़ा मॉडल' की पूरी दुनिया में सराहना हुई। भीलवाड़ा सहित प्रदेश में राज्य सरकार के साथ सामाजिक संस्थाओं, धर्मगुरुओं और आमजन ने मिलकर मजबूती के साथ कोरोना से लड़ाई लड़ी है। श्री गहलोत ने भीलवाड़ा के विकास कार्यों में बजट की कमी नहीं आने दी जाएगी। भीलवाड़ा में पूर्व विधायक स्व. श्री कैलाश त्रिवेदी ने अपने कार्यकाल में विकास की गंगा बहाई थी, वह जारी है और आगे भी जारी रहेगी। भीलवाड़ा के रायपुर में पूर्व विधायक स्व. श्री कैलाश त्रिवेदी की मूर्ति का अनावरण किया गया। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ 220 केवी ग्रिड सब स्टेशन का शिलान्यास कर क्षेत्रवासियों को मुख्यमंत्री ने सौगात दी। स्व. कैलाश चंद्र त्रिवेदी स्मृति संस्थान, रायपुर ट्रस्ट द्वारा मूर्ति निर्माण कराया जाना अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। उन्होंने अपने क्षेत्र के चहुंमुखी विकास के लिए हरसंभव प्रयास किए। श्री त्रिवेदी के योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उनकी मूर्ति से नई पीढ़ी को उनके जीवन आदर्शों को आत्मसात कर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। श्री गहलोत ने सहाड़ा विधायक श्रीमती गायत्री देवी त्रिवेदी की मांग पर स्व. श्री कैलाश त्रिवेदी की स्मृति में इनडोर स्टेडियम बनाने की घोषणा की। साथ ही क्षेत्र की अन्य मांगों को भी शीघ्र पूर्ण किये जाने के लिए आश्वस्त किया।

विभिन्न सड़क कार्यों के लिए 119.32 करोड़ की स्वीकृति

राज्य सरकार प्रदेश में एक सुदृढ़ सड़क तंत्र विकसित करने की दिशा में प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा प्रदेश में विभिन्न सड़क निर्माण एवं विकास कार्यो के लिए 119.32 करोड़ रुपये के वित्तीय प्रस्ताव को स्वीकृति दी गई है। मुख्यमंत्री की मंजूरी से नदियों पर पुल निर्माण, नवीन सड़क निर्माण, सड़कों के चौड़ाईकरण, सुदृढ़ीकरण, डामरीकरण एवं मरम्मत कार्यो तथा जर्जर सड़कों के पुनर्निर्माण जैसे 46 कार्य विभिन्न जिलों में जल्द शुरू होकर समयबद्ध रूप से पूर्ण हो सकेंगे।

मुख्यमंत्री ने पैलेस ऑन व्हील्स को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने गांधीनगर रेलवे स्टेशन पर पैलेस ऑन व्हील्स शाही ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पैलेस ऑन व्हील्स शाही रेलगाड़ी पर्यटन के क्षेत्र में दुनिया में एक मिसाल है। पिछले 40 वर्षो से चल रही इस ट्रेन का 2 वर्षो के अन्तराल के बाद पुन: प्रारम्भ होना एक शुभ संकेत है। यह इंगित करता है कि आने वाले दिनों में प्रदेश में पर्यटन क्षेत्र और मजबूती के साथ उभरेगा। मुख्यमंत्री ने रवानगी से पहले पैलेस ऑन व्हील्स शाही ट्रेन का अवलोकन कर सुविधाओं का जायजा लिया। उन्होंने यात्रियों को मंगलमय सफर के लिए शुभकामनाएं दी। पैलेस ऑन व्हील्स का पुन: संचालन हमारे लिए गर्व की बात है। शाही रेल में राजस्थान की हेरिटेज और सांस्कृतिक परम्परा को देखकर देश-विदेश के पर्यटक रोमांचित हो जाते हैं। रेलवे और आरटीडीसी के संयुक्त तत्त्वावधान में इस ट्रेन में आधुनिक साज-सज्जा और पर्यटकों की सुख-सुविधाओं का समावेश किया गया है। कोविड-19 महामारी के कारण इस शाही रेल का संचालन करीब 2 वर्ष बंद रहा। आरटीडीसी व पर्यटन विभाग की सकारात्मक पहल से यह ट्रेन पुन: शुरू हुई।

पर्यटन को उद्योग का दर्जा

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया है और अनेक प्रकार की रियायतें दी जा रही हैं। पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान की पुरानी हवेलियां, गढ़, किले और रेगिस्तान के साथ लोक कलाएं, हस्तशिल्प आदि की दुनिया भर में खास पहचान है। वर्ष 2022-23 के बजट में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। पर्यटन के क्षेत्र में राजस्थान देश

का सबसे सम्पन्न प्रदेश है और दिल्ली-आगरा के बाद विदेशी पर्यटक राजस्थान आना पसन्द करते हैं। यहां स्वदेशी पर्यटन की समृद्ध परम्परा रही है। उल्लेखनीय है कि प्रथम शाही रेल वर्ष 1982 में प्रारंभ हुई थी। रेलवे द्वारा समय-समय पर रेल की गेज परिवर्तन के फलस्वरूप मीटर गेज से ब्रॉड गेज ट्रेन वर्ष 1991 में दूसरी और 1995 में तीसरी शाही रेल का निर्माण किया गया।

शाही रेलगाड़ी में 7 दिन का राजसी सफर

दिल्ली व आगरा के अलावा राजस्थान के खूबसूरत शहरों जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर तथा भरतपुर जिलों में राजस्थान के गौरवशाली इतिहास के दर्शन कराती इस शाही रेल का सफर देशी और विदेशी पर्यटकों को आनंदित करता है। यहां पर पर्यटक अपने आप को राजसी माहौल में पाता है। इसमें आवभगत, स्वादिष्ट व्यंजन और पर्यटन निगम के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सेवा भावना व अतिथि सत्कार को देखकर पर्यटक रोमांचित होते हैं।

जयपुर में विकसित हो रहा देश का पहला कोचिंग हब

प्रदेश के युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए बेहतर सुविधाएं तथा कोचिंग संस्थाओं को सुनियोजित तरीके से स्थान उपलब्ध कराने की दिशा में राज्य सरकार ने एक महत्त्वपूर्ण पहल की है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की दूरदर्शी सोच के साथ राजस्थान आवासन मण्डल जयपुर द्वारा देश का पहला कोचिंग हब तैयार किया जा रहा है, जिसमें विद्यार्थियों के लिए सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

मण्डल द्वारा जयपुर के प्रताप नगर में 65 हजार वर्ग मीटर भूमि पर सुनियोजित तरीके से देश का पहला कोचिंग हब विकसित किया जा रहा है। करीब 228 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किए जा रहे इस कोचिंग हब में प्रथम चरण में 5 संस्थानिक ब्लॉक तथा 90 व्यावसायिक परिसर तैयार किए जा रहे हैं। साथ ही चारदीवारी, आंतरिक सड़क आदि विकास कार्य करवाए जा रहे हैं। अब तक करीब 100 करोड़ रुपये के कार्य पूर्ण हो चुके हैं।

करीब 70 हजार विद्यार्थियों की होगी क्षमता

यह राज्य सरकार की एक अनूठी परियोजना है, जिसके माध्यम से देश-प्रदेश के छात्र-छात्राओं को एक ही परिसर में सभी शिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। पार्किंग, ट्रैफिक जाम आदि की समस्या से परे यह स्थान प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए शांत वातावरण वाला अनुकूल स्थान होगा। यहां करीब 70 हजार विद्यार्थी शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ लेकर अपना कॅरियर बना सकेंगे। कोचिंग सेंटर संचालकों को भी यहां आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होने से कोचिंग संचालन में काफी सुविधा होगी।

स्थानीय निवासियों को मिलेंगे रोजगार के अवसर

कोचिंग हब योजना में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगारों के नवीन अवसरों का भी सृजन होगा, जिससे स्थानीय निवासी भी लाभान्वित होंगे। योजना में केंद्रीयकृत पुस्तकालय, साइबर लैब, मनोरंजन केंद्र , जिम, हेल्थ क्लब, फूड कोर्ट एवं रेस्टोरेंट की सुविधाओं के अतिरिक्त जॉगिंग, साइक्लिंग ट्रैक, छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों हेतु पृथक-पृथक हॉस्टल एवं सिक्योरिटी सर्विलांस इत्यादि सुविधाएं भी विकसित की जा रही हैं।

परियोजना को लेकर लोगों को खासा उत्साह

कोचिंग हब के बाहरी हिस्से में निर्मित कुल 90 व्यावसायिक परिसर में से 30 का सफलतापूर्वक ई-ऑक्शन हाल ही में किया गया है। लोगों में इस परियोजना को लेकर काफी उत्साह है। इसी का परिणाम है कि मंडल को निर्धारित न्यूनतम मूल्य से कई गुना अधिक नीलामी मूल्य प्राप्त करने में सफलता मिली है। ग्राउंड फ्लोर के व्यावसायिक परिसर तीन गुना अधिक कीमतों पर तथा लोअर ग्राउन्ड फ्लोर और फर्स्ट फ्लोर के व्यावसायिक परिसर न्यूनतम बोली से दोगुने मूल्य पर नीलाम हुए हैं। कोचिंग हब आर्केड में गेस्ट हाउस, हॉस्टल एवं स्टूडियो अपार्टमेंट की उपयोग श्रेणी के 2 भूखंड भी न्यूनतम बोली से डेढ़ गुना अधिक दाम पर बिके हैं। कोचिंग हब के प्रथम चरण में निर्मित संस्थानिक संपत्तियों का लॉटरी के माध्यम से आवंटन किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना में अब तक लगभग 50 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान

राज्य सरकार की मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना, दुर्घटनावश अपनी जान गंवा चुके लोगों के बीमित परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के क्षेत्र मे एक बड़ा कदम है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की पहल पर शुरू की गई यह योजना ना केवल अपनी जान गंवा चुके लोगों के बीमित परिवारों को बल्कि दुर्घटना के कारण स्थायी अपंगता से जूझ रहे लोगों को भी आर्थिक संबल प्रदान करने में कारगर सिद्ध हो रही है।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की संवेदनशील सोच है कि दुर्घटना के कारण अपनी जान गंवा चुके लोगों और दुर्घटना के कारण अपंगता का सामना कर रहे दिव्यांगजन की क्षति को तो पूरा नहीं किया जा सकता है परन्तु उनके बीमित परिवारों को आर्थिक संबल प्रदान करने के लिए इस योजना की शुरुआत की गई है।

एक हजार सात बीमित परिवारों को किया गया भुगतान

प्रदेश सरकार की इस जनकल्याणकारी योजना में अब तक लगभग 3 हजार 380 बीमित परिवारों के माध्यम से आवेदन किया जा चुका है। प्राप्त आवेदनों में से एक हजार 440 आवेदन स्वीकृत किए गए, जिनमें से एक हजार सात बीमित परिवारों को बीमा राशि का भुगतान किया जा चुका है,साथ ही 483 आवेदन प्रकियाधीन हैं।

बीमित परिवारों को आर्थिक संबल प्रदान करने के जिस उद्देश्य के साथ इस योजना की शुरुआत की गई थी उस दिशा में यह योजना तेजी से आगे बढ़ रही है। उल्लेखनीय है कि योजना में बीमा राशि का भुगतान बीमित परिवार को 30 से 60 दिनों के भीतर कर दिया जाता है। प्रदेश सरकार की इस जनकल्याणकारी योजना के माध्यम से अब तक लगभग 50 करोड़ 24 लाख रुपये की राशि का भुगतान किया जा चुका है। बीमित परिवारों को अगस्त माह से ऑनलाइन भुगतान किया जा रहा है। राज्य सरकार की इस जनकल्याणकारी योजना का लाभ प्राप्त करने के मार्ग को और भी सरल और सुगम बनाया गया है ताकि आम नागरिकों को ज्यादा सुविधा प्रदान की जा सके। इसलिए योजना में प्रदेशवासियों को अलग से पंजीकरण कराने की आवश्यकता नहीं है। जो नागरिक मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में पंजीकृत हैं वे सभी नागरिक इस योजना का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में अब तक लगभग 1.34 करोड़ परिवार पंजीकृत हो चुके है वे सभी इस योजना के सदस्य होंगे। एक मई 2022 से शुरू हुई प्रदेश सरकार की इस योजना में पात्र परिवारों से कोई भी अंशदान की राशि वसूल नहीं की जायेगी।

बीमित परिवारों को संबल प्रदान करने के लिए इस योजना के माध्यम से दुर्घटना के कारण मृत्यु होने पर बीमित परिवार को 5 लाख रुपये तक की बीमा राशि प्रदान की जाती है। साथ ही स्थायी अपंगता जैसे कि दुर्घटना में दोनों हाथ या दोनों पैर अथवा दोनों आंखो को गंवा देने एवं एक हाथ या एक पैर या एक आंख की पूर्ण क्षति या इन अंगों के पूर्णतः निष्क्रिय होने पर 3 लाख रुपये तक का बीमा राज्य सरकार के माध्यम से वहन किया जाता है।

इस योजना के माध्यम से दुर्घटना में हाथ,पैर और आंख की पूर्ण क्षति या निष्क्रिय होने और इन अंगों के पार्थक्य (अलग) होने की स्थिति में 1.5 लाख रुपये तक की बीमा राशि प्रदान की जाती है। इस योजना से आर्थिक रूप से कमजोर बीमित परिवारों को सहायता मिल रही है। राज्य सरकार गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) की सहायता से दुर्घटनाओं को कम करने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

सिरोही में दो नदियों पर हाई लेवल ब्रिज निर्माण के लिए 22 करोड़ की स्वीकृति

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने सिरोही जिले में झाबुआ एवं गोमती नदियों पर हाई लेवल ब्रिज निर्माण कार्य के लिए 22 करोड़ रुपये के वित्तीय प्रस्ताव को मंजूरी दी है। ये दोनों पुल सांचौर-रानीवाड़ा-मण्डोर-आबूरोड राज्य-राजमार्ग पर स्थित होंगे। श्री गहलोत के इस निर्णय से स्थानीय निवासियों तथा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले लोगों को बेहतर परिवहन सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। पुल निर्माण से आमजन का जीवन सुगम होने के साथ-साथ क्षेत्र के विकास को भी गति मिलेगी। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने 2022-23 के बजट में प्रत्येक जिले की महत्वपूर्ण सड़कों के मेजर रिपेयर एवं उन्नयन कार्यों के लिए 3 हजार 133 करोड़ रुपये के वित्तीय प्रावधान की घोषणा की थी। इसी घोषणा की क्रियान्विति में श्री गहलोत द्वारा पुल निर्माण के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है।

अनुकम्पा नियुक्ति के 47 प्रकरणों में शिथिलता

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने राजकीय कार्मिक की मृत्यु के उपरांत आश्रित द्वारा अनुकम्पा नियुक्ति के लिए आवेदन के 47 प्रकरणों में शिथिलता प्रदान की है। श्री गहलोत के इस संवेदनशील निर्णय से मृतक आश्रित परिवारों को संबल मिल सकेगा। श्री गहलोत ने कार्मिक की मृत्यु उपरान्त निर्धारित अवधि निकलने के बाद बालिग होने के उपरांत 3 वर्ष तक की विलम्ब अवधि में शिथिलन के 17 प्रकरण, आवेदन में विलम्ब के 28 प्रकरण तथा अधिकतम आयु सीमा में शिथिलन के 2 प्रकरणों में सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए यह शिथिलता दी है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री द्वारा बीते करीब 3 साल में अनुकम्पा नियुक्ति के 1282 प्रकरणों में शिथिलता प्रदान कर आवेदकों को राहत प्रदान की जा चुकी है। इस अवधि में 3702 मृतक आश्रितों को अनुकम्पा नियुक्तियां भी दी गई हैं।

बांसवाड़ा में अनास नदी पर 182.56 करोड़ रुपये की लागत से बनेंगे एनिकट व पुल

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने बांसवाड़ा के गराड़िया में अनास नदी पर एनिकट व पुल बनाने के लिए 182.56 करोड़ रुपये के बजट को मंजूरी दी है। श्री गहलोत की इस मंजूरी से क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार होगा। साथ ही पुल के निर्माण से ग्रामीणों को आवागमन में सहूलियत होगी। मुख्यमंत्री ने 152.56 करोड़ रुपये की लागत से गराड़िया एनिकट का निर्माण व 30 करोड़ रुपये की लागत से डूब क्षेत्र में आने वाले महुड़ी पुल के नवीन निर्माण हेतु यह स्वीकृति दी है। एनिकट के माध्यम से नदी के व्यर्थ बहने वाले पानी को रोककर कृषि कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा।

सामाजिक ताने–बाने का मूल आधार: समृद्ध लोक संस्कृति

ईश्वरदत्त माथुर
पूर्व संयुक्त निदेशक, जनसंपर्क

भारत को अपना कर्म क्षेत्र बनाने वाले बीबीसी के मार्क टुली ने अपनी पुस्तक ''इंडियास ऑन अवॉइडिंग जर्नी – फाइंडिंग बैलेंस इन ए टाइम'' में भारत को यह सलाह दी गई है कि उसे आधुनिकता के मोह में अपनी संस्कृति और परंपरा को अनदेखा नहीं करना चाहिए। उनका यह भी मानना था कि भूमंडलीकरण के कारण प्रगति की दौड़ में परंपराओं की अनदेखी करना घातक होगा। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि संस्कृति यदि नदी है तो परंपराएं उसका प्रवाह।

राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं की मूल विशेषता उसके आंचलिक स्वरूप में दिखाई पड़ती है। यहां का सांस्कृतिक वैभव बेजोड़ है। भौगोलिक और प्राकृतिक विषमताओं के बावजूद यहां का जन –जीवन समृद्ध परंपराओं के कारण अपनी विशेष छाप बनाए हुए हैं। तीज त्यौहार और गीत संगीत समाज की धड़कन है। आंचलिक विशेषताओं को दर्शाता है पहनावा। चटक रंग, पारंपरिक आभूषण और रस्मो रिवाज यहां के सामाजिक ताने–बाने को एक सूत्र में पिरोए हुए हैं। राजस्थान परंपराओं का प्रदेश है। यहां की सामाजिक और धार्मिक परंपराएं और आस्थाएं पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तगत होती रही हैं। यहां की विभिन्न चित्र शैलियों में जनजीवन के साथ–साथ ऐतिहासिक आख्यानों ऋतुओं, वन्यजीवों तथा नायक–नायिकाओं का सुंदर चित्रण किया गया है। राजस्थान का जनजीवन धार्मिक, दार्शनिक मान्यताओं और आस्थाओं के बहुरंगी ताने–बाने में गुंथा हुआ है। लोक देवी –देवताओं ने इन आस्थाओं को और बलवती बनाया है।

प्रदेश में शिव और शक्ति की पूजा के अलावा वल्लभ संप्रदाय, निंबार्क संप्रदाय, गोंडीय संप्रदाय, निर्गुण संप्रदाय, विश्नोई, जसनाथी, दादूपंथी, रामस्नेही, दरियापंथ, लालदासी संप्रदाय, आर्य समाज के अलावा पाबूजी, हड़बूजी, गोगा चौहान, रामदेव जी आदि लोक देवी–देवताओं की भी मान्यताएं हैं। प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर लोक देवी–देवताओं के नाम पर मेले लगते हैं और लाखों की संख्या में श्रद्धालु इन में भाग लेकर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

राजस्थान का स्थापत्य और शिल्प आज विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अपनी विशेष पहचान रखता है। यहां अनेक हवेलियां किले, छतरियां, बावड़ियां, कुण्ड, मंदिर, अपनी अद्भुत कलात्मक

शिल्प और स्थापत्य के लिए दर्शनीय हैं। किलों में फव्वारे, जलाशय, बाग-बगीचों के अलावा तोपखाना, शस्त्रागार भंडार और मंदिरों के साथ साथ भव्य चित्रशालाएं, बारह दरियां, गवाक्ष -झरोखे, रंग महल आदि कला के उत्कृष्ट नमूने हैं । उदयपुर का सिटी पैलेस, जोधपुर का मेहरानगढ़, बीकानेर का लालगढ़ पैलेस, अलवर-कोटा का राज महल, बूंदी का किला और जैसलमेर का सोनार किला पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण के केंद्र हैं। शेखावाटी अंचल के रामगढ़, नवलगढ़, फतेहपुर, मुकुंदगढ़, पिलानी, रतनगढ़ आदि कस्बों में स्थित हवेलियां अपने उत्कृष्ट स्थापत्य की कहानी कह रही है। जैसलमेर में सालम सिंह की हवेली, नथमल की हवेली, पटवों की हवेली, पत्थर की जाली और कटाई के कारण जग प्रसिद्ध है। बूंदी में रानी जी की बावड़ी, चौरासी खंभों की छतरी और किले के भित्ति-चित्र किसे आकर्षित नहीं करते। चित्तौड़ और रणथंभोर का दुर्ग सीना ताने आज भी अपने वैभव का बखान कर रहे हैं।

राजस्थान की विभिन्न चित्र शैलियों में भी आंतरिक सौंदर्य समाया हुआ है। आदिम काल से आज तक चित्रकला की अपनी एक परंपरा रही है। यहां की चित्रशैलियां भी भारतीय चित्रशैलियों से पोषित हुई। मेवाड़ स्कूल में चावंड, उदयपुर, नाथद्वारा, देवगढ़ आदि शैलियां विकसित हुई। मारवाड़ स्कूल में जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, किशनगढ़, अजमेर, पाली, नागौर, ढूंढार में आमेर, शेखावाटी, अलवर, उनियारा, करौली तो हाडोती में बूंदी, कोटा, झालावाड़ अंचल की चित्र शैलियां पल्लवित हुई जो स्थानीय स्थापत्य में आज भी दिखाई देती हैं। यहां की चित्र शैलियों में लोक देवी-देवताओं के साथ-साथ लोक जीवन को भी उकेरा गया है। चित्र शैलियां रस एवं भाव प्रधान हैं। विषय वस्तु की विविधताएं तथा देश काल के अनुरूप प्राकृतिक परिवेश का भी समावेश किया गया है। किशनगढ़ की बणी-ठणी और पाबूजी की फड़ लोक चित्र शैली के अनुपम उदाहरण है। आधुनिक चित्रकारों ने पारंपरिक चित्र शैलियों को आधार मानकर अब नए प्रयोग भी शुरू किए हैं।

राजस्थान का समृद्ध लोक संगीत यहां के जनजीवन और सामाजिक ताने-बाने का मूल आधार है। लोक गीत इस संस्कृति के पहरेदार हैं। सामाजिक रीति-रिवाजों में शायद ही कोई ऐसी रस्म हो, जिसके विषय में गीत ना हो। राजस्थान में पेशेवर लोकगायक कलाकार हैं जो आज भी अपनी यजमानी परंपरा का निर्वाह करते हुए अपना भरण-पोषण करते हैं। लोक जीवन में संस्कार संबंधी, त्योहार संबंधी, ऋतु, देवी-देवताओं के अलावा रजवाड़ी गीत भी प्रचलित हैं। तीज त्योहारों पर गणगौर, घूमर, चौमासा और ऋतु के गीत गाए बजाए जाते हैं। इसके अलावा लोक देवी-देवताओं की मनौतियों के लिए भी आंचलिक भाषाओं में लोक गीत गाए जाते हैं। लोक स्वर लहरियों में आकर्षक मिठास है, वही लोक वाद्य राजस्थान की अनूठी धरोहर है। लोक वाद्यों में कई तरह की सारंगियां, जंतर, रावण हत्था, रबाब, तंदूरे, चौतारा, इकतारा, भपंग, कमायचा, अलगोजा, बांसुरी, पूंगी, शहनाई, सतारा, मशक, मोरचंग, मृदंग, ढोलक, ढोल, नगाड़ा, बांकिया, नौबत, मांदल, खंजरी, मंजीरा, झांझ, खड़ताल आदि प्रमुख लोक वाद्य प्रमुखता से बजाए जाते हैं। राजस्थान के लोक कलाकारों ने अपनी उत्कृष्टता का परिचय देते हुए विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है और इसी कारण इन्हें आज सांस्कृतिक दूत की उपाधि देते हैं। लेकिन आज के इस अर्थयुग में अनेक इवेंट मैनेजर इन कलाकारों को लुभावने प्रलोभन देकरअपनी जाजम पर बिठाने के लिए लालायित रहते हैं।

लोक जीवन में खुशी का इजहार लोक नृत्यों के माध्यम से करता है। शास्त्रीय नृत्य कत्थक का उद्भव शेखावाटी में हुआ। होली के अवसर पर शेखावाटी की चंग धमाल और गींदड़, मारवाड़ की गैर और डांडिया, जालौर का ढोल, जसनाथी सिद्धों का अग्नि नृत्य, मेवात का बम रसिया मांगलिक अवसरों पर घूमर, चरी और वनवासी जातियों द्वारा किया जाने वाला गरासिया नृत्य लोक जनजीवन को सरसता प्रदान करते हैं। घुमंतू जातियों में भी लोकगीत और लोकनृत्यों के माध्यम से अपनी परंपराओं का निर्वाह किया जाता है। रामदेव जी की आराधना करने वाले कामड़ जाति के लोग तेरहताली तथा व्यावसायिक प्रदर्शन

कर जीविका कमाने वाले कलाकार भवाई नृत्य करते हैं, जो लयकारी के साथ अद्भुत चमत्कारी होता है।

राजस्थान की लोक नाट्य परंपराएं अनेक विशेषताएं लिए हुए हैं। इनमें कुचामनी ख्याल, शेखावटी ख्याल, जयपुरी ख्याल, तमाशा, अली बक्शी ख्याल, तुर्रा कलंगी, नौटंकी, रासलीला आदि प्रमुख हैं। रात भर खेले जाने वाले इन लोकनाट्यों के कथानक ऐतिहासिक और धार्मिक होते हैं। जिनमें बीच-बीच में हास्य पात्रों का समावेश होता है। जिससे यह अधिक रोचक बन पडते हैं। लोकनाट्य में लच्छी राम जी, दूलिया राणा, नैणूराम जी, उगमराज आदि के नाम प्रसिद्ध है। लोक नाट्यों में हीर रांझा, राजा हरिश्चंद्र, भृर्तहरि जगदेव कंकाली, ढोला मरवण, जोगी जोगन, कान गूजरी, रसीली तमोलन आदि नाम प्रमुख है। मेवाड़ क्षेत्र के वनवासियों द्वारा गवरी खेली जाती है। इसके अलावा स्वांग, फड़गायन, बहरूपिये, भांड आदि भी राजस्थान में लोकानुरंजन के प्रमुख माध्यम रहे हैं और इनकी समृद्ध परंपरा है।

यहां का समृद्ध स्थानीय साहित्य भाषा और बोलियां विविधता लिए हैं, जिनका अपना अलग महत्त्व है। राजस्थान में मेवाड़ी, वागड़ी, शेखावाटी, मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ोती, मेवाती, और ब्रज भाषा बखूबी बोली जाती है। कहते हैं कि हर 10 कोस पर पगड़ी का पेच और बोली में सहजता से अंतर आ जाता है। यहां का समृद्ध लोक साहित्य वीर कथाओं, धार्मिक आस्थाओं, पौराणिक मान्यताओं, प्रेम व सांसारिक विषयों से परिपूर्ण नीतिगत बातों से भरा हुआ है।

राजस्थान की हस्तकला में कपड़े की बुनाई, छपाई, जवाहरात उद्योग, आभूषण, बंधेज, हाथी दांत और चंदन की लकड़ी पर खुदाई, गलीचा बुनाई, पीतल व धातु की कारीगरी, मिट्टी तथा चीनी मिट्टी के बर्तन, लाख का काम, चमड़े की जूतियां आदि प्रमुख हैं। ब्लू पॉटरी और पत्थर पर खुदाई का काम यहां की प्रमुख विशेषता है। नीलगरों द्वारा महिलाओं के लिए ऋतु के अनुसार आढ़निया और पोमचें तैयार किए जाते हैं जो अपने अंदर प्राकृतिक रंगों को समेटे होते हैं।

मेले और त्योहार राजस्थान के जनजीवन की प्राणवायु हैं। कार्तिक में पुष्कर का मेला, सीकर में जीण माता का मेला, अलवर में भृर्तहरि का मेला, डिग्गी में कल्याण जी का मेला, महावीर जी में भगवान महावीर जी का मेला, चाकसू में शीतला माता का मेला, करौली में कैला मैया का मेला, रणथंभौर में गणेश जी का मेला, डूंगरपुर में आदिवासी बेणेश्वर मेला, इसी तरह लोक देवी देवताओं में तेजाजी, करणी माता, रामदेव जी, केसरिया नाथजी आदि के प्रमुख मेले जग प्रसिद्ध हैं। गणगौर और तीज़ महिलाओं के लिए बड़े त्यौहार है। होली के अवसर पर राजस्थान का आंचलिक सौंदर्य अपने शिखर पर दिखाई देता है।

राजस्थान के जनजीवन में कला, साहित्य और संस्कृति की गहरी पकड़ है और इसी कारण यहां के लोग परंपराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों के प्रति आस्थावान भी हैं। राजस्थान में साहित्य, कला और संस्कृति को उत्तरोत्तर बढ़ावा देने तथा कलाकारों और सृजनधर्मियों को संरक्षण देने के उद्देश्य से राज्य सरकार में पृथक से साहित्य, कला और संस्कृति का महकमा कार्यरत है। जिसके अधीन अनेक अकादमी, प्रशिक्षण केंद्र तथा जवाहर कला केंद्र जैसे कला संस्थान कलाकारों को संरक्षण देने की दिशा में सतत क्रियाशील हैं। विभाग द्वारा कलाकारों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से सहायता राशि के अलावा अनुदान भी दिया जाता है। इसके अलावा देश भर में बनाए गए सांस्कृतिक केंद्रों में से एक पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र का मुख्यालय उदयपुर में स्थित है। इसके अलावा उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र इलाहाबाद तथा उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र पटियाला में भी राजस्थान की भागीदारी है।

आदि महोत्सव

जनजाति कलाकारों की प्रस्तुतियां देख पर्यटक मन्त्रमुग्ध

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जनजाति समुदाय के कल्याण हेतु विभिन्न योजनाओं की प्रभावी क्रियान्विति एवं जनजाति संस्कृति का संरक्षण सुनिश्चित कर उनके सर्वांगीण उत्थान हेतु दिन-रात प्रयास कर रहे हैं। उन्हीं से प्रेरणा लेकर उदयपुर के जनजाति समुदाय की संस्कृति एवं छिपी हुई विभिन्न कलाओं को विश्वभर में पहचान दिलाने और जनजाति अंचल के लोक कलाकारों को मंच देकर प्रोत्साहित करने के लिए उदयपुर शहर से 130 किमी दूर स्थित जनजाति बाहुल गांव 'कोटड़ा' में विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन, जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध संस्थान एवं पर्यटन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में भव्य 'आदि महोत्सव 2022 (कोटड़ा)' का आयोजन धूमधाम से हुआ। देशी-विदेशी पावणे लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां देख मन्त्रमुग्ध हो गए और एक ही स्वर निकला- 'आदिवासी कलाकार भी किसी से पीछे नहीं...'

डॉ. कमलेश शर्मा
उपनिदेशक, जनसंपर्क

कई आकर्षक गतिविधियों का साक्षी बना 'आदि महोत्सव'

आदि महोत्सव में राजस्थान सहित विभिन्न राज्यों के लोक कलाकारों द्वारा आकर्षण प्रस्तुतियां दी गई। इसमें विभिन्न लोक नृत्य, लोक गीत एवं लोक नाट्य प्रस्तुत किये गये। इसके साथ ही आयोजन स्थल पर विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल्स लगाईं गई जिसमें जनजाति अंचल की जड़ी बूटियों, दवाओं, फल-सब्जी, जनजाति नर एवं नारियों के आभूषण, औजार, वस्त्र आदि प्रदर्शित किए गए। इसके साथ ही विभिन्न जनजाति खान-पान जैसे- मक्की की पानिया, मक्की की रोटी, मेवाड़ी दाल-बाटी, राब, मोटे अनाज की रोटी, मौसमी सब्जियां, छाछ, पकौड़े आदि की भी स्टॉल्स लगाई गई जिसका देशी और विदेशी मेहमानों ने आनंद लिया। पानरवा वन क्षेत्र में एडवेंचर स्पोर्ट्स, ट्रेकिंग, ट्री वॉक तथा नाल सांडोल में जीप लाईन, वाटर रोलिंग आदि का भी

पर्यटकों ने लुत्फ उठाया। पर्यटकों के लिए जनजाति अंचल के परम्परागत खेल जैसे–कबड्डी, खो–खो, रस्साकस्सी का भी आयोजन किया गया।

स्टॉल्स एवं प्रदर्शनी में भी उमड़े पर्यटक

आदि महोत्सव में कई विभागों ने अपनी प्रदर्शनी और स्टॉल्स लगाई जो आकर्षण का केंद्र रही। पशुपालन विभाग द्वारा स्टॉल में लंपी रोग से बचाव व उपचार से संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारी पशुपालकों को प्रदान की गई। चिकित्सा विभाग द्वारा मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना सहित अन्य योजनाओं, कृषि विभाग द्वारा सीताफल के उन्नत बीजों से आधुनिक तौर तरीके अपनाकर खेती करने की जानकारी स्टॉल पर प्रदान की गई। इसके अलावा राजीविका, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा, ग्रामीण मदद काशी फाउंडेशन की जैविक खेती विषयक प्रदर्शनी, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, आर्थिकी, वन विभाग सहित अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा लोककल्याण से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी लोगों को प्रदान की गई। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा प्रकाशित प्रचार सामग्री जैसे सुजस और फ्लैगशिप योजनाओं के फोल्डर का वितरण भी यहाँ आए पर्यटकों एवं ग्रामवासियों को किया गया।

ऐसे हुई आदि महोत्सव की शुरुआत

लेकसिटी के रूप में उदयपुर विश्वपटल पर अपनी पहचान रखता है एवं प्रतिदिन यहां दुनिया के विभिन्न देशों से सैकड़ों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों को जिले के जनजाति अंचल के दर्शन हेतु भव्य आयोजन किया जाता है। यह भी कि उदयपुर में जनजाति समुदाय बड़ी संख्या में है एवं उनकी अनूठी संस्कृति, लोक नृत्य, लोक गीत, वाद्य यन्त्र, आभूषण आदि से यहां आने वाले पर्यटकों को परिचित करवाया जाए तो न सिर्फ जनजाति क्षेत्र में पर्यटन बढ़ेगा बल्कि जनजाति समुदाय के निर्धन परिवारों एवं कलाकारों के लिए आय के नए स्रोतों का सृजन भी हो सकेगा।

लोक कलाकारों ने इन नृत्यों की दी प्रस्तुति

आदि महोत्सव में राज्य के विभिन्न जिलों एवं देश के सात राज्यों के जनजाति कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी गई। पश्चिम बंगाल के जनजाति कलाकारों द्वारा नटुआ नृत्य, ओड़ीसा के जनजाति कलाकारों द्वारा सिंगारी नृत्य, लाख के कलाकारों द्वारा याक नृत्य, गुजरात के कलाकारों द्वारा राठवा नृत्य, महाराष्ट्र के कलाकारों द्वारा सौंगी मुखोवटे नृत्य, मध्यप्रदेश के कलाकारों द्वारा गुटुम्ब बाजा नृत्य एवं छत्तीसगढ़ के कलाकारों द्वारा सिलाधरना नृत्य प्रस्तुत किया गया। राज्य के बारां के कलाकारों ने स्वांग नृत्य, बांसवाड़ा के कलाकारों ने गैर नृत्य एवं घूमर नृत्य, उदयपुर के कलाकारों ने गवरी नृत्य, कच्छी घोड़ी एवं मावलिया नृत्य, सिरोही के कलाकारों ने रायन नृत्य की प्रस्तुति दी। इसके अलावा कोटड़ा और आस–पास के गांवों के स्थानीय जनजाति कलाकार द्वारा भी विभिन्न प्रकार की प्रस्तुतियां दी गई।

आजादी के आंदोलन के जनजाति गीत गाए

खेरवाड़ा निवासी अमृतलाल मीणा की टीम ने आजादी के आंदोलन के समय गाए गए जनजाति गीत प्रस्तुत किए। आजादी के

आंदोलन में आदिवासी भी पीछे नहीं थे और आदिवासी इलाकों में भी देशभक्ति गीत गाए गए। उन्होंने साइमन कमीशन को भगाने के लिए उस समय आदिवासी समुदाय द्वारा गाया गया गीत 'जाजे थारे वाले देस' की प्रस्तुति दी जिस पर पांडाल में मौजूद लोगों ने भारत माता की जय के नारे लगाए। दूसरे दिन प्रस्तुतियों का समापन कोटड़ा के स्थानीय ढोल कुंडी नृत्य से हुआ।

दर्शकों और पर्यटकों से खचाखच भरा पांडाल

आदि महोत्सव में पर्यटकों और स्थानीय लोगों की इतनी भीड़ रही कि पैर रखने की जगह तक नहीं बची। यहां तक कि उत्साह से लबरेज ग्रामीण महिलाएं मंच के आगे तक जा बैठी और परफॉर्मेंस का आनंद लिया। इधर कलाकारों ने भी अपनी प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया। पांडाल में लगातार तालियों की गूंज सुनाई दी और लोगों ने

हाथ ऊपर उठा कर कलाकारों का अभिवादन किया। स्थानीय ग्रामीण जन खुद को थिरकने से रोक नहीं सके एवं बड़ी संख्या में स्थानीय ग्रामीण जन मंच और मंच के नीचे मौजूद स्पेस में पहुंच गए यहां सभी एक साथ नृत्य करने लगे और यह सिलसिला करीब 1 घंटे तक चलता रहा।

लोक कला मण्डल में हुआ समापन

आदि महोत्सव का भव्य समापन भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर के मुक्ताकाशी रंगमंच पर हुआ। समारोह का समापन नगाड़ा वादन से हुआ। लोक परंपरा कला व संस्कृति के संरक्षण के लिए ऐसे आयोजनों की महती आवश्यकता है। लोक कला मंडल जिला अधिकारियों के प्रयासों की सराहना की गई। स्थानीय संस्कृति के साथ देश के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति का समन्वय स्थापित कर इस प्रकार का आयोजन उदयपुर जिले में होना गौरव की बात है। देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये कलाकारों ने स्थानीय लोक संगीत का भरपूर आनन्द लिया।

शेखावाटी का लोक नृत्य: गींदड़

पूरण मल
सहायक निदेशक, जनसम्पर्क

राजस्थान के शेखावाटी अंचल में बसंत पंचमी से ही ढफ बजने लगते हैं तथा धमालें गाई जाने लगती हैं। कुछ धमाल भक्ति प्रधान एवं कुछ धमाल शृंगार प्रधान होती हैं। जब होली में 15 दिन रह जाते है तो गांव- गांव में गींदड़ के कार्यक्रम होते है। होलिका दहन से दो दिन पहले रात भर गींदड़ होते हैं। इन आयोजनों में सैकड़ों लोग भाग लेते हैं। गींदड़ शेखावाटी अंचल का लोकनृत्य है।

सुजानगढ़, चूरू, रामगढ़, लक्ष्मणगढ़, सीकर और उसके आसपास के क्षेत्रों में होली से पन्द्रह दिन पहले से इस नृत्य के सामूहिक कार्यक्रम आयोजित होने लगते हैं। इस नृत्य में आयु, वर्ग एवं जाति-पांति का भेद नहीं रखा जाता है। परम्परागत रूप से यह नृत्य चांदनी रात में होता है। लेकिन अब बिजली के प्रकाश में भी किया जाता है।

नगाड़ा इस नृत्य का मुख्य वाद्य होता है। नर्तक अपने हाथों में छोटे-छोटे डण्डे लिये हुए होते है। नगाड़े की ताल के साथ इन डंडों को परस्पर टकराते हुए घूमते हैं तथा आगे बढ़ते है। चार मात्रा का ताल धीमी गति के नगाड़े पर बजती है। धीरे-धीरे उसकी गति तेज होती है। जैसे-जैसे नृत्य गति पकड़ता है, नगाड़े की ध्वनि भी तीव्र होती है। इस नृत्य में विभिन्न प्रकार के स्वांग बनाये जाते हैं जिनमें साधु, शिकारी, सेठ-सेठानी, डाकिया, दूल्हा-दुल्हन आदि प्रमुख है। प्रत्येक नृतक अपने पैरों में घुंघरू बांधकर नृत्य करते हैं।

यह मारवाड़ के डांडिया तथा गुजरात के गरबा नृत्य से मिलता - जुलता है। गींदड़ में गरबा की तरह ही कई पुरुष अपने दोनों हाथों में लकड़ी के डांडियां लेकर अपने आगे व पीछे के साथियों की डांडियों से टकराते हुए गोल घेरे में चलते हुए आगे बढ़ते हैं। घेरे के केन्द्र में एक ऊंचा मचान बनाया जाता है जिस पर ऊंचा झंडा भी लगाया जाता हैं। मचान पर बैठा हुआ व्यक्ति नगाड़ा बजाता है। नगाड़े, चंग, धमाल व डंडियों की सम्मिलित ध्वनियों से आनंददायक संगीत बजाया जाता है जिसकी ताल पर नृत्य होता है। गरबा और गींदड़ में मुख्य भेद डंडियों का होता है, गींदड़ की डांडियां गरबा के डांडियों से आकार में अधिक लम्बाई लिए होती हैं। गरबा में स्त्री-पुरुषों के जोड़े होते हैं जबकि गींदड़ में मुख्य रूप से पुरुष ही स्त्रियों का स्वांग रचकर नाचते हैं।

शेखावाटी क्षेत्र में रामगढ़ शेखावाटी, लक्ष्मणगढ़ सहित कई स्थानों पर गींदड़ महोत्सव का आयोजन किया जाता हैं। बहुत से स्थानों पर गींदड़ खेलने की प्रतियोगिताएं होती हैं। गींदड़ को कहीं-कहीं गींदड़ी भी कहा जाता है। इस लोकनृत्य के साथ विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाए जाते हैं-''कठैं सैं आई सूंठ कठैं सैं आयो जीरो, कठैं सैं आयो ए भोळी बाई थारो बीरो।''

कला और संस्कृति की समृद्ध विरासत से सराबोर ''आपणो राजस्थान''

"कला, साहित्य और संस्कृति की विरासत से सुसमृद्ध धरा है राजस्थान। सुनहरी धोरों की धरती राजस्थान की कलाएं तथा आन, बान और शान की संस्कृति हमारी थाती हैं। ''पधारो म्हारे देश'' की परिकल्पना को साकार करती राजस्थान की कलाएं देश–विदेश के पर्यटन को आकर्षित करती है। देशाटन के लिए विदेशी पावणे और पर्यटक यहां की कला, स्थापत्य और संस्कृति से अनायास ही अभिभूत हो उठते हैं। प्रदेश सरकार कला और संस्कृति की इस अमूल्य विरासत के संरक्षण, संवर्धन एवं उन्नयन को लेकर सजग एवं प्रतिबद्ध है।"

कला एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी. डी. कल्ला का प्रदेश के सांस्कृतिक विकास पर दृष्टिकोण
जनसम्पर्क अधिकारी, आशाराम खटीक द्वारा लिए गए साक्षात्कार के महत्त्वपूर्ण अंश

बजट घोषणा वर्ष 2020–21 में राजकीय संग्रहालयों को डिजिटली एम्पावर्ड करने की घोषणा की गई थी, इससे क्या लाभ होगा ?

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा बजट घोषणा वर्ष 2021–22 के बिन्दु संख्या 53 के अंतर्गत राजकीय संग्रहालयों यथा अलवर, बूंदी, बारां, चित्तौड़गढ़ व भरतपुर को डिजिटल संग्रहालयों के रूप में विकसित किए जाने का नीतिगत निर्णय लिया गया था। इस दिशा में उपर्युक्त पांचो संग्रहालयों को डिजिटल संग्रहालयों के रूप में विकसित किए जाने के कार्य प्रगति पर हैं। डिजिटली एम्पावर्ड होने से निश्चित रूप से पर्यटकों को डिजिटल कंटेंट आसानी से उपलब्ध हो सकेगा जिससे आगन्तुकों को उनकी जिज्ञासाओं के शमन में मदद मिलेगी और वे इन संग्रहालयों के बारे में रुचिकर व्यापक जानकारियां सुविधापूर्वक हासिल कर पाएंगे। पुरास्थल जूना खेड़ा, नाडोल, पाली में पुरातात्विक उत्खनन भी किया गया है, इससे राजस्थान के इतिहास के पुनर्निर्धारण एवं इतिहास के अनछुए पहलुओं व नवीन ऐतिहासिक तथ्यों को आलोक में लाने में मदद मिलेगी।

कला और संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं उन्नयन के लिए सरकार की ओर से क्या विशेष प्रयास किए जा रहे हैं ?

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुःपुच्छ विषाणहीनः।

अर्थात्:– जो मनुष्य साहित्य, संगीत और कला से विहीन है वह साक्षात् पूंछ और सींगों से रहित पशु के समान है।

राज्य सरकार कला, साहित्य और संस्कृति को लेकर सदैव सजग रही है। प्रदेश में कला और संस्कृति के जरिये पर्यटन की प्रचुर संभावनाएं मौजूद हैं। राजस्थान में जहां खनिजों के प्रचुर भण्डार हैं, वहीं यहां बर्फ और समुद्र के अलावा सब कुछ विद्यमान है। यहां के किले, हवेलियां, स्थापत्य, शिल्प, कारीगरी, नक्काशी, हस्तकला, दस्तकारी, खादी व कुटीर उद्योग जगप्रसिद्ध हैं। कोविड वैश्विक महामारी के बाद अब लोग पर्यटन की ओर पुनः उन्मुख हुए हैं। कला व संस्कृति से पर्यटन के प्रति इस बढ़े रुझान से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने की दिशा में सरकार की सोच सकारात्मक है। राजस्थान में विदेशी पर्यटकों के भ्रमण से मुद्रार्जन द्वारा देश और प्रदेश में रोजगार व आय के अवसरों

में इजाफे के साथ ही अर्थव्यवस्था को भी गति मिल रही है। पर्यटन विभाग भी समय-समय पर पर्यटन मेलों का आयोजन कर देशी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है।

लोक कला और संस्कृति से युवा वर्ग की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने की दिशा में सरकार ने क्या प्रयत्न किए हैं ?

युवा वर्ग की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के लिए लोक कलाकारों एवं नए रंगकर्मियों को अलग-अलग विधाओं के विभिन्न कार्यक्रमों से जोड़कर उनकी सक्रिय जनसहभागिता सुनिश्चित की जा रही है। नौजवानों को संगीत, नाट्य आदि विधाओं से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किए जा रहे हैं। इससे युवाओं में कला और संस्कृति के प्रति आकर्षण बढ़ा है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में राज्य सरकार कला व संस्कृति के संरक्षण को लेकर कटिबद्ध है। कोविड वैश्विक आपदा के समय लोक कलाकारों को राहत देने की दिशा में संवेदनशील निर्णय लेते हुए कलाकारों को संबल प्रदान के लिए 5-5 हजार रुपये की एकमुश्त आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

प्रदेश में बन्धेज कार्य, सांगानेरी, अजरक एवं बगरू प्रिंट आदि एम्ब्रोडरी विश्व विख्यात है? इनके व्यापारियों के लिए एवं एक्सपोर्ट को बढ़ावा देने के लिए सरकार क्या प्रयास कर रही है?

राज्य सरकार प्रदेश में बंधेज, सांगानेरी, अजरक, बगरू प्रिन्ट एवं एम्ब्रोडरी आदि उद्योग से संबंधित संवर्धन, उत्पादन एवं निर्यात को बढ़ाने के लिए समय-समय पर प्रदर्शनियों का आयोजन करती है। इन उद्योगों से संबंधित कारीगरों को पुरस्कृत कर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सरकार सतत सहयोग कर रही है। विभिन्न संस्थानों यथा रीको औद्योगिक क्षेत्र, राजस्थान वित्त निगम तथा सहकारी बैंकों के माध्यम से ऋण आदि की सुविधाओं के जरिये कला संबंधी व्यवसायों को लगातार प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

राजस्थानी लोक कला और संस्कृति के कारण पर्यटन उद्योग में भी अपार संभावनाएं हैं, लोक कलाकारों के संबलन के लिए सरकार की इस दिशा में क्या सोच है?

"We promote tourism through culture" राज्य सरकार संस्कृति के माध्यम से पर्यटन को बढ़ावा दे रही है। जवाहर कला केन्द्र एवं रवीन्द्र रंगमंच पर समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों व सांस्कृतिक समारोहों का आयोजन कर इस दिशा में उल्लेखनीय सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अलावा संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर से पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के सहयोग से कई कार्यक्रम आयोजित करवाये जाते हैं और कलाकारों को मानदेय अथवा सम्मान राशि दी जाती है। इन केन्द्रों के माध्यम से संगीत एवं अन्य वे कलाएं जो विलुप्त हो रही हैं, उन्हें संरक्षण प्रदान किया जा रहा है। लोक कलाकारों के संबलन के लिए सरकार के अथक प्रयास निरन्तर जारी हैं। बीकानेर में मांड राग का शिविर, मेड़ता नागौर में तुर्रा-कलंगी ख्याल से संबंधित शिविर, रम्मत (नुक्कड़ नाटक) आदि क्रियाकलापों के साथ ही साथ विभिन्न सांस्कृतिक शिविरों का समय-समय पर आयोजन करवाया जाता है, जिससे युवा वर्ग लाभान्वित हो रहा है।

साहित्यसंगीतकलाविहीन: साक्षात्पशु:पुच्छ विषाणहीन:।

अर्थात्:- जो मनुष्य साहित्य, संगीत और कला से विहीन है वह साक्षात् पूंछ और सींगों से रहित पशु के समान है।

राज्य सरकार कला, साहित्य और संस्कृति को लेकर सदैव सजग रही है। प्रदेश में कला और संस्कृति के जरिये पर्यटन की प्रचुर संभावनाएं मौजूद हैं। राजस्थान में जहां खनिजों के प्रचुर भण्डार हैं, वहीं यहां बर्फ और समुद्र के अलावा सब कुछ विद्यमान है। यहां के किले, हवेलियां, स्थापत्य, शिल्प, कारीगरी, नक्काशी, हस्तकला, दस्तकारी, खादी व कुटीर उद्योग जगप्रसिद्ध है। कोविड वैश्विक महामारी के बाद अब लोग पर्यटन की ओर पुन: उन्मुख हुए हैं।

विभिन्न भाषा अकादमियों के लिए एवं प्राचीन भारतीय मनीषा के आलोक में हमारी समृद्ध ज्ञान परम्परा व वैदिक संस्कृति के लिए भी सरकार यदि कोई कार्य कर रही हो तो उसके बारे में बताएं?

संस्कृत भाषा अकादमी के माध्यम से हमारी पुरातन सभ्यता व वैदिक संस्कृति को बचाने व इसको बढ़ावा देने की दिशा में सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। विभिन्न वेद विद्यालय प्रारम्भ किए गये हैं तथा प्राचीन वैदिक संस्कृति के वेद विद्वानों के माध्यम से वेदों की ऋचाओं का सस्वर मंत्रोच्चार पाठ करवाया जाकर उनकी रिकॉर्डिंग करवाई जा रही है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर संस्कृत अकादमी और स्वयंसेवी संस्थाओं अथवा गैर सरकारी संस्थानों के माध्यम से वैदिक संस्कारों तथा पांडित्य परम्परा से संबंधित शिविरों का आयोजन करवाकर पुरोहित एवं पंडित तैयार करने का कार्य किया जा रहा है। कला व संस्कृति विभाग के अन्तर्गत संबंधित भाषा के साहित्यकारों व कलाकारों को कला एवं साहित्य के प्रदर्शन के आधार पर सम्मानराशि से पुरस्कृत किया जाता है जिससे उन्हें प्रोत्साहन मिलता है।

लोक संस्कृति के संवर्धन हेतु प्रतिबद्ध राज्य सरकार

" प्रदेश की लोक संस्कृति के संवर्धन हेतु प्रयास किए जा रहे है। प्राचीन संपदा व पुरातत्व स्मारकों का संरक्षण, विभिन्न प्रकार की राजस्थानी लोक कलाओं, परंपराओं, विधाओं, नाट्य, गायन, वादन शैलियों का संवर्धन के लिए विभिन्न भाषाओं के कार्यक्रम व प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे हैं। पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, ललित कला अकादमी, संगीत नाटक अकादमी, रविन्द्र मंच, जवाहर कला केन्द्र, लोक कला मंडल और विभिन्न भाषा की अकादमियों द्वारा इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं। "

कला और संस्कृति विभाग की सचिव श्रीमती गायत्री राठौड़ से उपनिदेशक, जनसम्पर्क सम्पत राम चान्दोलिया द्वारा की गई बातचीत के महत्वपूर्ण अंश......

राजस्थान की लोक कला और संस्कृति के संवर्धन में युवा कलाकारों के लिए कौनसी योजनाएं है ?

विभाग द्वारा युवा कलाकारों के लिए अनेक तरह से प्लेटफार्म उपलब्ध करवाकर उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है। सम्मान एवं पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। युवा महोत्सव आयोजित किये जाते हैं।

राजस्थानी सिनेमा और फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य में क्या कदम उठाए गए हैं ?

राजस्थानी सिनेमा एवं फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन के लिये राजस्थानी सिनेमा फिल्म पॉलिसी 2022 जारी की गई है। पुरस्कृत फिल्मों को पुरस्कार एवं अच्छी फिल्मों को ग्रांट उपलब्ध करवाई जाती है, टैक्स में छूट दी जाती है तथा राजस्थान की विभिन्न लोकेशन्स पर फिल्म की शूटिंग हेतु सुविधा प्रदान की जाती है।

लोक कलाओं के जी. आई. टैग हेतु प्रदेश सरकार की क्या योजना है ?

लोक कलाकारों एवं लोक कलाओं के जी.आई टैगिंग एवं उनके डेटाबेस के लिए विभाग निरंतर कार्यरत है। लंगा आदि कलाकारों की जियो टैगिंग आदि कार्यवाही विभाग द्वारा की जा रही है। इसके अतिरिक्त भी कलाकारों के चिह्नीकरण, संरक्षण के कार्य विभाग उनके कल्याण हेतु कर रहा है।

लोक कलाओं के संरक्षण के लिए क्या प्रयास किये जा रहे हैं ?

प्रदेश की लोक कलाओं के संरक्षण हेतु कोरोना काल में 10 हजार से अधिक लोक कलाकारों को मुख्यमंत्री कलाकार सहायता योजना से लाभान्वित किया गया। हाल ही में लोक कलाकारों के मानदेय में 25 प्रतिशत की वृद्धि की गई है, ताकि उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके। लोक कलाओं के संरक्षण हेतु विभाग द्वारा लोकरंग, रसरंग, रवीन्द्र रंगोत्सव, गजल उत्सव, चित्रकार शिविर, विभिन्न नाट्य समारोह, लोक कला संरक्षण हेतु कलाकारों को विभिन्न अनुदान, सहायता, संबलन के कार्य निरंतर विभाग द्वारा किए जा रहे हैं।

लोक संस्कृति से युवाओं के जुड़ाव हेतु क्या प्रयास किए जा रहे हैं ?

भावी पीढ़ी को ए.वी., एनिमेशन, वीडियो आर्ट, फिल्मस के द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मिनिएचर पेन्टिंग, पिछवाई, रियलिस्टिक कलर्स, क्रियेटिव स्टार्टअप स्क्रीन राइटिंग, पैनल डिस्कशन, मोलेला, कावड़, पोडकास्ट, थेवाकला, फायर आर्ट, मेहन्दी वर्कशॉप, लाख, मीनाकारी, नाइट स्काई ट्यूरिज्म आदि अनेक ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रशिक्षण भावी पीढ़ी के लिए आयोजित किए जा रहे हैं।

ऐतिहासिक विरासत को सहेजने हेतु क्या नवाचार किए जा रहे हैं ?

लोक देवी देवता, संत महात्मा, योद्धाओं, महापुरुषों की राजस्थानी की गौरवशाली ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को सहेजने हेतु विभाग द्वारा राज्य भर में पैनोरमा/स्मारकों का निर्माण करवाया जा रहा है। इससे राज्य की जनता का जुड़ाव और मेले, धार्मिक तीर्थाटन एवं पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है। 48 पेनोरमाओं का निर्माण राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण, जयपुर द्वारा किया गया है। वैशाख उत्सव, तेजा मेला, गोगा मेला, मीरा उत्सव, पाबूजी मेला, माघ उत्सव, भर्तृहरि का मेला, जम्भेश्वर मेला आदि में विभिन्न प्रदर्शनियां आयोजित कर महापुरुषों के बारे में जागरूकता अभिवृद्धि जैसे नवाचार किये जा रहे है।

कलाकार परिवारों के लिए प्रदेश में क्या प्रयास हो रहे हैं ?

लोक कला, संस्कृति, हस्तकला, कठपुतली, लंगा, मांगणियार आदि कलाकारों को जीविकोपार्जन हेतु प्रदेश में प्रदर्शनियां, नाट्य एवं कला प्रदर्शन, संगीत नृत्य समारोह, कार्यशालाओं, शिविरों, गोष्ठियों का आयोजन कर उन्हें मंच उपलब्ध करवाया जा रहा है। समय-समय पर विभिन्न संगीत संगोष्ठियों, नृत्य प्रस्तुतियों के माध्यम से युवा एवं उभरते कलाकारों को भी मंच उपलब्ध करवाया जाता है। शास्त्रीय संगीत, ध्रुवपद, हवेली संगीत, हास्य कलाएं एवं फिल्म्स, शिल्पग्राम, शिल्प मेलों द्वारा रोजगार एवं जीविकोपार्जन हेतु लोक कलाओं का संरक्षण एवं संवर्धन किया जा रहा है।

पिछवाई कला को सहेजते भीलवाड़ा के कलाकार

डॉ. देवदत्त शर्मा
पूर्व उप निदेशक, जनसंपर्क

पुष्टिमार्गीय पिछवाई को बचाये रखने तथा उसके संवर्धन के लिए भीलवाड़ा के कलाकारों को न केवल राष्ट्रीय पहचान मिली है बल्कि सुनहरी वरक छपाई की पिछवाई में यहां के कलाकारों ने नये आयाम भी उद्घाटित किये हैं।

पिछवाई कई तरीकों से बनाई जाती हैं। उनमें रंगीन पिछवाई और वरक छपाई, जरदोजी, कशीदे, आरितारी, पेच वर्क, खड़िया की छपाई, गोलकुंडा की पिछवाई, कलमकारी की पिछवाई मुख्य रूप से उल्लेखनीय है। वरक छपाई की पिछवाई में सोने-चांदी के पतले-पतले वरक का ही उपयोग किया जाता है। इसकी विधि बहुत ही जटिल और श्रमसाध्य होती है। पुराने जमाने में जैन मंदिरों में चंदवाजी यानी छत पर शामियाने और मुगल काल में राजाओं के शामियाने छतर आदि और मंदिरों में सोने-चांदी के वरक की छपाई के वस्त्र काम में लिए जाते थे। मंदिरों में भगवान के श्रृंगार के वस्त्रों पर भी वरक की छपाई की जाती थी। रंगीन पिछवाई और वरक छपाई की पिछवाई वैष्णव एवं वल्लभ संप्रदाय के मंदिरों में विग्रह के पीछे लगाई जाती थी।

पिछवाई शब्द मूलरूप से ब्रज भाषा के पछुआई अर्थात पीछे से आई से संबंध रखता है जो धीरे-धीरे आम बोलचाल से पछवाई और पिछवाई हो गया। गुजराती में इसे पछेड़ी कहा जाता है। लुप्त होती इस कला को आज के आधुनिक युग में पूरी उदीयमान कलाकारों का प्रेरणा स्रोत बने, इसी सोच को कायम रखते हुए वरक छपाई की कलाकृति का निर्माण किया जो भारत सरकार के वस्त्रमंत्रालय के राष्ट्रीय मेरिट पुरस्कार के लिए 2018 में चयनित हुई इसी वरक छपाई की कलात्मक पिछवाई कलाकृति का वर्ष 2019 के राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चयन हुआ। इसके लिए उन्हें सिद्धहस्त शिल्पी का सम्मान दिया जाएगा।

पिछवाई का इतिहास करीब 300 वर्ष पुराना है यह वैष्णव मंदिरों में राधा-कृष्ण और श्रीनाथ जी के पीछे लगाई जाती है जो बहुत ही सुंदर श्रृंगार लिए होती है। कृष्ण की लीलाओं से संबंधित उनकी पिछवाई देखते ही मन को मोह लेती है। वर्तमान में घरों मे साज-सज्जा के लिए इसकी मांग बढ़ी है। पिछवाई औद्योगिक घरानों व कला प्रेमियों की पसंद का विषय है और आजकल कला के कद्रदान इसे बहुत पसंद कर रहे हैं। पिछवाई बड़े सूती कपड़े पर अलग-अलग आकारों में बनाई जाती है। प्रत्येक उत्तत की अलग-अलग पिछवाई होती हैं। जैसे शरद पूर्णिमा, रास, लीला, जलकमल, शृंगार, गोपाष्टमी, संध्या आरती, श्रीजी स्वरूप की पिछवाई। दिनेश सोनी के काम में पिछवाई की मूल बारीकियों का सैद्धांतिक मिश्रण देखने को मिलता है।

पिछवाई को विभिन्न शैलियों में बनाया है जिनमें मुख्यत: कोटा, बूंदी, किशनगढ़ और नाथद्वारा शैली है। समय-समय पर नवीन प्रयोग भी कलाकार करते रहते हैं। प्रत्येक कपड़े पर बनने वाला चित्र पिछवाई नहीं होता। इसलिए कोई भी कलाकृति खरीदने से पूर्व उसके और उसके स्तर के बारे में जानकारी होना आवश्यक है। प्राचीन पिछवाइयां देश-विदेश के कला संग्रहालयों में उपलब्ध हैं, उन्हें देखना समझना बहुत जरूरी है।

पुराने कलाकारों ने बहुत ही उत्तम दर्जे का काम किया है। उनकी कलम बहुत ही बारीक और सधी हुई होती थी। रंग संयोजन भी सीखने लायक है। रंगों में मुख्य रंग हिंगलू यानी लाल, पियावड़ी यानी पीला, सफेदा यानी सफेद, काजल यानी काला, नील यानी नीला, हडमच यानी भूरा, अलकतक यानी रानी रंग, हरा भाटा और साथ ही सोने की स्याही या वरक और चांदी के लिए कथीर मुख्य रूप से प्रयोग में लिया जाता है। वरक छपाई के लिए भिन्न विधि का उपयोग किया जाता है। उसके लिए काले, लाल या सफेद सूती कपड़े का प्रयोग होता है जिसमें स्टेंसिल, ब्लॉक, ट्रेस पद्धति के साथ कलम का भी प्रयोग होता है। वरक चिपकाने के लिए चंद्रस का सरेस का बट्ट ठीकरी पीसकर तैयार किया जाता है। यह विधि अति प्राचीन है। कई बड़ी-बड़ी आकारों में मंदिर और गृह सज्जा हेतु पिछवाई का निर्माण किया है और कई महानगरों में प्रदर्शनी के माध्यम से कला का प्रदर्शन किया जाता है जिसे बहुत सराहा गया है। पिछवाई का मूल्य उसके कार्य को समझने वाले को पता होता है कि यह इतनी महंगी क्यों है।

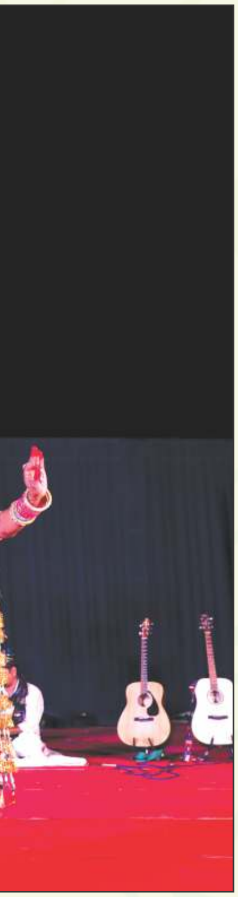

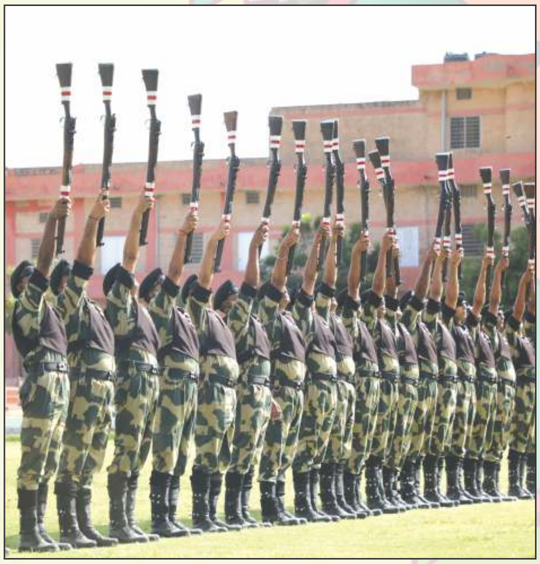

मारवाड़ उत्सव

मेहरानगढ़ दुर्ग स्थित जयपोल में अरुणिम सूर्य आराधना कार्यक्रम में वैदिक ऋचाओं तथा मंत्रोच्चारण की गूंज के साथ सूर्य दर्शन–अभिवादन तथा सूर्य नमस्कार से प्रतिवर्ष सूर्यनगरी (जोधपुर) में दो दिवसीय मारवाड़ उत्सव का शुभारंभ होता है। हेरिटेज वॉक जयपोल, फतेह पोल से होती हुई घंटाघर पहुंचती है। उम्मेद राजकीय स्टेडियम में आकर्षक कार्यक्रम तथा रोचक स्पर्धा होती है जो पर्यटकों का मन मोह लेती है। बीएसएफ की ओर से कैमल म्यूजिकल शो एवं राइडिंग शो आकर्षण का केंद्र रहता है।

आलेख व छाया: डॉ. दीपक आचार्य व आकांक्षा पालावत

राजस्थान की लोक लुभावनी संस्कृति

पंकज कुमार ओझा (RAS)
संयुक्त शासन सचिव

राजस्थान की धरती आन-बान और शान की धरती है। राजस्थान के लिए लिखते हुए इतिहासकार कर्नल टॉड अपनी पुस्तक एनल्स एंड एन्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान में लिखते है कि- ''यहां की कोई धरती ऐसी नहीं है, जो थर्मोपोली न हो एवं ऐसा कोई नगर नहीं है, जहां लियोनिडॉस जैसा वीर पैदा नहीं हुआ हो।''

प्रकृति की विभीषिका के बाद भी राजस्थान का हर एक क्षेत्र अपनी विलक्षणता एवं विशेषता समेटे है, यहां पूर्वी राजस्थान में हाड़ौती, ब्रज, मेवात जैसे क्षेत्र हैं तो पश्चिमी राजस्थान में मारवाड़ है, तो मेवाड़, वागड़ की अपनी विशेषता है तो शेखावाटी क्षेत्र की अपनी ही शान है। राजस्थान में शायद ही ऐसा कोई महीना जाता होगा, जब कोई उत्सव न होता हो। राजस्थान की धरती उल्लास की धरती है। राजस्थान की धरती वीरों की धरती है, जहां, कुम्भा, राणा प्रताप, हम्मीरदेव जैसे मेवाड़ के शासक हुए तो रणथम्भौर के राजा हम्मीर ने शरणागत वत्सलता की नई मिसाल कायम की मालदेव, कान्हडदेव, बीकाजी, शेखाजी, मानसिंह, जसवंत सिंह, पृथ्वीराज, बप्पा रावल जैसे वीरों ने राजस्थान के शौर्य को दिग्दिंगत तक प्रसिद्ध कर दिया।

राजस्थान की नारियों ने भी कार्यो से नारी जाति को अद्भुत सम्मान प्रदान किया यथा पन्नाधाय का पुत्र बलिदान, हाड़ी रानी का शौर्य और भक्तिमयी नारी मीरा की भक्तिधारा के साथ पर्यावरण की रक्षा के लिए अमृतादेवी का बलिदान कभी न भुलाए जा सकने वाले इतिहास के वो पृष्ठ हैं, जो हमेशा के लिए अमर हो गए हैं। राजस्थान की नारियां पालना झुलाते हुए अपने बच्चे को वीरता की घुट्टी पिला देती हैं। वे पालना झुलाते हुए कहती हैं कि-

इला न देनी आपणी, हालरिया हुलराय।

पूत सिखावे पालणे, मरण बड़ाई मांय।।

राजस्थान संगीत नृत्य, स्थापत्य, पर्यटन, वास्तु, वेशभूषा, खानपान, शिल्प, कलाओं की दृष्टि से वैविध्य समेटे हुए है। राजस्थान के मेले विश्वस्तर पर प्रसिद्ध हैं, पुष्कर मेला, जैसलमेर का मरू महोत्सव, तेजाजी के मेले, रामदेवरा मेला, बेणेश्वर का मेला, गणेश मेला सवाईमाधोपुर, जम्भेश्वर जी का मेला, फूलडोल का मेला, नागौर का मेला, मानगढ़ धाम मेला, कोटा का दशहरा मेला, कैलादेवी का मेला, गालियाकोट का उर्स, महावीर जी का मेला, करणीमाता का मेला, खाटूश्यामजी का मेला आदि राजस्थान के प्रसिद्ध मेले हैं। राजस्थान की सांस्कृतिक वैभिन्यता की बड़ी विशेषता यहां की विभिन्न बोलियां हैं, यहां के लिए कहावत है कि हर थोडी दूरी पर यहां ''पाणी और ''वाणी'' बदल जाती है, राजस्थान की प्रमुख बोलियों में मेवाड़ी, मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाडौती, वागड़ी, शेखावटी, ब्रज आदि विभिन्न बोलियां हैं तो डिंगल और पिंगल में भी शास्त्र रचे गए हैं।

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता एवं संतों में गोगाजी, तेजाजी, पाबूजी, रामदेवजी, मीराबाई, दादूदयाल जी, जम्भोजी, जसनाथ जी, पीपाजी, धन्नाजी, करमाबाई सुंदरदास जी, रामदेव जी आदि ऐसे संत हुए जिन्होंने अपने कमंडल से भक्ति की धारा बहाई है। राजस्थान के विशिष्ट त्योहारों में तीज, शीतला अष्टमी, आखातीज, गणगौर, जलझूलनी एकादशी, सिंजारा, मकर संक्रांति, तेजादशमी आदि है। इसी प्रकार राजस्थान का लोक संगीत संपूर्ण विश्व में अपनी पहचान रखता है। राजस्थान के लंगा और मांगणियार गायकों ने संसार में अपने विशिष्ट गायन से राजस्थान को अलग पहचान दिलाई है। राजस्थान की मांड शैली एवं मांड गायन विश्व में अलग ही पहचान रखते हैं। मांड शैली का ''पधारो म्हारे देश'' राजस्थान की पहचान बन चुका है। शहनाई, मोरचंग, अलगोजे, खड़ताल, चांग, घुंघरू, रावणहत्था, मजीरा, नगाड़ा आदि राजस्थान के प्रमुख वाद्ययंत्र है।

राजस्थान के नृत्यों में कच्छी घोड़ी, चरी, भवाई, पणिहारी, घूमर, गैर, गवरी, वालर, लूर, घुड़ला, गरवा, तेरहताली, कालबेलिया, अग्निनृत्य आदि प्रमुख स्थान रखते हैं। राजस्थान अपने

विशिष्ट स्थापत्य, किले, महल, बावडियां, मंदिरों आदि के लिए विश्व में अद्वितीय पहचान रखता है। चित्तौड़ का किला, जालौर का किला, तारागढ़, जैसलमेर भटनेर का किला, अमेद्य, रणथम्भौर का किला, आमेर का किला, नाहरगढ़, जयगढ़, गागरोन का किला, बीकानेर का जूनागढ़ एवं लालमहल, भरतपुर का लोहागढ़, हवामहल, रणकपुर, माउंट आबू के देलवाड़ा जैन मंदिर, मेहरानगढ़ दुर्ग, अचलगढ़, कुंभलगढ़, सज्जनगढ़ आदि महत्त्वपूर्ण हैं, तो जैसलमेर की पटवों की हवेली, सम के रेतीले धौरे, सहेलियों की बाड़ी, फतेहसागर झील, पिछोला झील, माउन्ट आबू की नक्की झील, आनासागर, सिलीसेढ़ झील, राजसमंद, जयसमंद झील पर्यटन हेतु प्रसिद्ध है।

राजस्थान अपने नयना भिराम मंदिरों एवं उनके स्थापत्य के साथ विभिन्न विशिष्टताओं हेतु प्रसिद्ध है, ब्रह्मा मंदिर पुष्कर, पुष्कर की पवित्र झील एवं घाट, खाटूश्याम मंदिर, हर्षनाथ मंदिर, जीणमाता मंदिर सीकर, कैलादेवी करौली, सांवलिया सेठ मंदिर, सालासर बालाजी, करणीमाता देशनोक, एकलिंग जी मंदिर, त्रिपुर सुंदरी मंदिर, श्री महावीर जी, श्रीनाथ जी नाथद्वारा, शिलादेवी मंदिर, तनोट माता, मेहन्दीपुर बालाजी, मेहन्दीपुर बालाजी, सवाईभोज मंदिर, सवाईमाधोपुर का गणेश मंदिर, लक्ष्मण एवं गंगा मंदिर भरतपुर, देलवाड़ा के जैन मंदिर, रणकपुर मंदिर आदि औसियां, किराडू, हर्ष मंदिर, रणकपुर, अजमेर, आबू, चन्डावती, बाडोली, मेनाल, चित्तौड़, जालौर, भीनमाल, मण्डोर आदि के मंदिरों के स्थापत्य एवं मूर्ति शिल्प कला दर्शनीय है। चित्तौड़ का कीर्ति स्तम्भ एवं राज्य की बावड़ियां अलग पहचान रखती है। राजस्थान के खान-पान में भी विशिष्टता पाई जाती है यहां का दाल बाटी चूरमा, कैर सांगरी, अलवर का मिल्क केक, जयपुर के घेवर और फीणी, ब्यावर के तिल पपड़ी, नसीराबाद का कचौरा, अजमेर की कचौरी एवं सोहन पपड़ी, जोधपुर की कचौरी, मिर्ची बड़े, बीकानेर की नमकीन, गंगापुर के खीरमोहन, चिड़ावा के

पेड़े, पुष्कर के मालपुए, बीकानेरी रसगुल्ला, आदि अलग ही विशेषता रखते हैं। राजस्थान के पहनावों में धोती, कुर्ता, बगतरी, साफा, लूगड़ी, बिरजीस, कमरबंद, कोटा डोरिया साड़ी, बगरू प्रिंट, सांगानेरी प्रिंट, घाघरा, चोली, ओढ़नी, कुर्ती, कांचली, चूनर, पगड़ी, पट्टा, पोमचा, प्रसिद्ध है, राजस्थान की कम वजन की रजाइयां जगत प्रसिद्ध हैं। राजस्थान अपने गोडावण राज्य पक्षी, राज्य पशु ऊंट के साथ, पशु पक्षियों के लिए भी विशिष्टता रखता है, यहां की मालाणी, राढ़ी, थारपारकर गाय, भैस, ऊंट, घोड़े, भेड़ें अपनी विशिष्ट नस्लों हेतु प्रसिद्ध है तो केवलादेव घना उद्यान अपने पक्षियों हेतु प्रसिद्ध है, रणथम्भौर, सरिस्का, मुकंदरा, तालछापर आदि प्रसिद्ध अभयारण्य है।

पधारो म्हारे देश के गान के साथ विश्व को आवाज लगाती राजस्थान की सतरंगी संस्कृति सारे विश्व को आवाज लगाती है, पर्यटक यहां आकर अपनी सुध-बुध भुला देते हैं। 33 जिलों को अपने आंचल में समेटे राजस्थान की धरती विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराओं का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है, अतिथि सत्कार, शरणागत वत्सलता, अप्रतिम शौर्य, और विशिष्ट स्थापत्य यहां की अमिट विशेषताएं बन गए हैं, विरासत से जुड़े स्थल, पुरातन कालीबंगा, बैराठ, नगरफोर्ट, आहड़, पीलीबंगा, नाडोल, चंडावती, प्रकृति एवं वन्य जीव की विविधता, दैदीप्यमान इतिहास पर्यटकों हेतु खुला आमंत्रण है। समग्र लोक संस्कृति के ध्वजावाहक तीज-त्यौहार, मेले, धार्मिक और विश्वास के प्रतीक लोक देवता एवं संत राजस्थान के नृत्य, धोरों में गूंजता सुरीला लोकसंगीत पर्यटकों को अंतर्मन तक अभिभूत कर देता है। राजस्थान की कला, संस्कृति, शिल्प, स्थापत्य, रहन-सहन की विभिन्नता, अप्रतिम शौर्य, त्याग और बलिदान की कहानियां, महानायकों के चरित्र और परंपराएं, राजस्थान की विशिष्ट चित्रकला, शैलियां, विशिष्ट लोक संगीत, भव्य प्रसाद, कलात्मक मंदिर, बावड़ियां, हवेलियां, दुर्ग, स्तम्भ, उत्सव आदि ने राजस्थान को विश्व में अलौकिक पहचान प्रदान की है। राष्ट्रकवि कन्हैयालाल सेठिया राजस्थान की धरती के लिए लिखते हैं कि-या तो सुरगां नै शरमावे, इण पर देव रमण नै आवे, धरती धोरां री, आ धरती धोरां री।

राजस्थान की गौरवमयी गाथा

Some Interesting Facts about Rajasthan

स्थापत्य कला, मुद्रा कला, मूर्ति कला, चित्र कला, धातु एवं काष्ठ कला, लोक संगीत और नाट्य

राजस्थान का कला संसार

डॉ. गोरधन लाल शर्मा
राजस्थान प्रशासनिक सेवा

शिलालेख, पुरालेख, कला और साहित्य के द्वारा हमें मानव की मानसिक प्रवृतियों का ज्ञान ही प्राप्त नहीं होता वरन् उनका कौशल भी दिखलाई देता है। यह कौशल तत्कालीन मानव के विज्ञान तथा तकनीक के साथ-साथ समाज, धर्म, आर्थिक और राजनीतिक विषयों का तथ्यात्मक विवरण प्रदान करने में इतिहास का स्रोत बन जाता है। इसमें स्थापत्य कला, मूर्ति कला, चित्र कला, मुद्रा कला, वस्राभूषण कला, शृंगार-प्रसाधन, घरेलू उपकरण इत्यादि जैसे कई विषय समाहित हैं, जो कई स्वरूपों में देखे जा सकते हैं।

लोककला के अन्तर्गत वाद्य यंत्र, लोक संगीत और नाट्य ये सभी सांस्कृतिक इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं जो इतिहास का अमूल्य अंग हैं। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक राजस्थान में लोगों का मनोरंजन का साधन लोक नाट्य व नृत्य रहे थे। रामलीला, रासलीला जैसे नाट्यों के अतिरिक्त प्रदेश में ख्याल, रम्मत, नृत्य, भवाई, ढोला-मारु, तुर्रा-कलंगी, आदिवासी गवरी या गौरी नृत्य नाट्य, घूमर, अग्नि नृत्य, कोटा का चकरी नृत्य, डीडवाणा पोकरण के तेराताली नृत्य, मारवाड़ की कच्छी घोड़ी का नृत्य, पाबूजी की फड़ तथा कठपुतली प्रदर्शन के नाम उल्लेखनीय हैं।

राजस्थानी स्थापत्य कला

राजस्थान में प्राचीन काल से ही हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा मध्यकाल से मुस्लिम धर्म के अनुयायियों द्वारा मंदिर, स्तम्भ, मठ, मस्जिद, मकबरे, समाधियों और छतरियों का निर्माण किया जाता रहा है। इनमें कई भग्नावशेष के रुप में तथा कुछ सही हालत में अभी भी विद्यमान हैं। इनमें कला की दृष्टि से सर्वाधिक प्राचीन देवालयों के भग्नावशेष हमें चित्तौड़ के उत्तर में नगरी नामक स्थान पर मिलते हैं। प्राप्त अवशेषों में वैष्णव, बौद्ध तथा जैन धर्म की तक्षण कला झलकती है।

तीसरी सदी ईसा पूर्व से पांचवीं शताब्दी तक स्थापत्य की विशेषताओं को बतलाने वाले उपकरणों में देवी-देवताओं, यक्ष-यक्षिणियों की कई मूर्तियां, बौद्ध, स्तूप, विशाल प्रस्तर खण्डों की चारदीवारी का एक बाड़ा, एवं ''गरुड़ स्तम्भ'' यहां देखा जा सकता है। गुप्तकाल के पश्चात् कालिका मन्दिर सूर्य मन्दिर, भ्रमरमाता का मन्दिर, बाड़ौली का शिव मन्दिर तथा इनमें लगी मूर्तियां तत्कालीन कलाकारों की तक्षण कला के बोध के साथ जन-जीवन की अभिक्रियाओं का संकेत भी प्रदान करती हैं। चित्तौड़ जिले में स्थित मेनाल, डूंगरपुर जिले में अमझेरा, उदयपुर में डबोक के देवालय अवशेषों की शिव, पार्वती, विष्णु, महावीर, भैरव तथा नर्तकियों का शिल्प इनके निर्माण काल के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का क्रमिक इतिहास बतलाता है।

सातवीं शताब्दी से राजस्थान की शिल्पकला में राजपूत प्रशासन का प्रभाव हमें शक्ति और भक्ति के विविध पक्षों द्वारा प्राप्त होता है। बांदीकुई का आभानेरी मन्दिर (हर्षदमाता का मंदिर), जोधपुर में ओसियां का सच्चियां माता मन्दिर, बाडमेर में किराडू मंदिर इत्यादि राजस्थान के सांस्कृतिक इतिहास पर विस्तृत प्रकाश डालने वाले स्थापत्य के नमूने हैं। तेरहवीं शताब्दी के पश्चात् स्थापत्य प्रतीक का अद्वितीय उदाहरण चित्तौड़ का ''कीर्ति स्तम्भ'' है, जिसमें उत्कीर्ण मूर्तियां का वृहद् संग्रहालय है। सत्रहवीं शताब्दी के पश्चात् भी परम्परागत आधारों पर मन्दिर बनते रहे जिनमें मूर्ति शिल्प के अतिरिक्त भित्ति चित्रों की नई परम्परा ने प्रवेश किया।

मुद्रा कला

राजस्थान के प्राचीन प्रदेश मेवाड़ में मज्झमिका (मध्यमिका) नामधारी चित्तौड़ के पास स्थित नगरी से प्राप्त ताम्रमुद्रा इस क्षेत्र को शिवि जनपद घोषित करती है। तत्पश्चात् छठी-सातवीं शताब्दी की स्वर्ण मुद्रा प्राप्त हुई। जनरल कनघम को आगरा में मेवाड़ के संस्थापक शासक गुहिल के सिक्के प्राप्त हुए तत्पश्चात ऐसे ही सिक्के ओझाजी को भी मिले। इसके उर्ध्वपटल तथा अधोवट के चित्रण से मेवाड़ राजवंश के शैवधर्म के प्रति आस्था का पता चलता है। राणा कुम्भाकालीन सिक्कों में ताम्र मुद्राएं तथा रजत मुद्रा का उल्लेख जनरल कनघम ने किया है।

परवर्ती काल में आलमशाही, मेहताशाही, चांदोडी, स्वरुपशाही, भूपालशाही, उदयपुरी, चित्तौड़ी, भीलवाड़ी त्रिशूलिया, फींतरा आदि कई मुद्राएं भिन्न-भिन्न समय में प्रचलित रहीं। सामन्तों की मुद्रा में भीण्डरीया पैसा एवं सलूम्बर का ठींगला व पद्मशाही नामक ताम्बे का सिक्का जागीर क्षेत्र में चलता था। ब्रिटिश सरकार का ''कलदार'' भी व्यापार-वाणिज्य में प्रयुक्त किया जाता रहा था। जोधपुर अथवा मारवाड़ प्रदेश के अन्तर्गत प्राचीनकाल में ''पंचमार्क'' मुद्राओं का प्रचलन रहा था। ईसा की दूसरी शताब्दी में यहां बाहर से आए क्षत्रपों की मुद्रा ''द्रम'' का प्रचलन हुआ जो लगभग सम्पूर्ण दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान में आर्थिक आधार के साधन-रूप में प्रतिष्ठित हो गई। बांसवाड़ा जिले के सरवानियां गांव से प्राप्त वीर दामन की मुद्राएं इसका प्रमाण हैं। प्रतिहार तथा चौहान शासकों के सिक्कों के अलावा मारवाड़ में ''फदका'' या ''फदिया'' मुद्राओं का उल्लेख भी हमें प्राप्त होता है।

राजस्थान के अन्य प्राचीन राज्यों में जो सिक्के प्राप्त होते हैं वह सभी उत्तर मुगलकाल या उसके पश्चात् स्थानीय शासकों द्वारा अपने-अपने नाम से प्रचलित कराए हुए मिलते हैं। इनमें जयपुर अथवा ढूंढ़ाड़ प्रदेश में झाड़शाही, रामशाही मुहर मुगल बादशाह के के नाम वाले सिक्कों में मुम्मदशाही, प्रतापगढ़ के सलीमशाही बांसवाड़ा के लछमनशाही, बून्दी का हाली, कटारशाही, झालावाड़ का मदनशाही, जैसलमैर में अकेशाही व ताम्र मुद्रा ''डोडिया'' अलवर का रावशाही आदि मुख्य कहे जा सकते हैं।

मूर्ति कला

राजस्थान में काले, सफेद, भूरे तथा हल्के सलेटी, हरे, गुलाबी पत्थर से बनी मूर्तियों के अतिरिक्त पीतल या धातु की मूर्तियां भी प्राप्त होती हैं। गंगानगर जिले के कालीबंगा तथा उदयपुर के निकट आहड़-सभ्यता की खुदाई में पकी हुई मिट्टी से बनाई हुई खिलौनाकृति की मूर्तियां भी मिलती हैं। किन्तु आदिकाल से मूर्ति कला की दृष्टि से ईसा पूर्व पहली से दूसरी शताब्दी के मध्य निमत लालसोट में ''बनजारे की छतरी'' नाम से प्रसिद्ध चार वेदिका स्तम्भ मूर्तियों का लक्षण द्रष्टव्य है।

राजस्थान में सौराष्ट्र शैली, महागुर्जन शैली एवं महामास शैली का उदय एवं प्रभाव परिलक्षित होता है जिसमें महामास शैली केवल राजस्थान तक ही सीमित रही। इस शैली को मेवाड़ के गुहिल शासकों, जालौर व मण्डोर के प्रतिहार शासकों और शाकम्भरी (सांभर) के चौहान शासकों को संरक्षण प्रदान कर आठवीं से दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक इसे विकसित किया।

पन्द्रहवीं शताब्दी राजस्थान में मूर्तिकला के विकास का स्वर्णकाल था जिसका प्रतीक विजय स्तम्भ (चित्तौड़) की मूर्तियां हैं। सोलहवीं शताब्दी का प्रतिमा शिल्प प्रदर्शन जगदीश मंदिर उदयपुर में देखा जा सकता है। यद्यपि इसके पश्चात् भी मूर्तियां बनीं किंतु उसमें शिल्प वैचित्रय कुछ भी नहीं है किंतु अठाहरवीं शताब्दी के बाद परम्परावादी शिल्प में पाश्चात्य शैली के लक्षण हमें दिखलाई देने लगते हैं। इसके फलस्वरुप मानव मूर्ति का शिल्प का प्रादुर्भाव राजस्थान में हुआ।

चित्रकला

राजस्थान में प्राचीन काल से ही चित्रकला के प्रति लोगों में रुचि रही थी। मुकन्दरा की पहाड़ियों व अरावली पर्वत श्रेणियों में कुछ शैल चित्रों की खोज इसका प्रमाण है। कोटा के दक्षिण में चम्बल के किनारे, माधोपुर की चट्टानों से, आलनिया नदी से प्राप्त शैल चित्रों का जो ब्योरा मिलता है उससे लगता है कि यह चित्र बगैर किसी प्रशिक्षण के मानव द्वारा वातावरण प्रभावित, स्वाभाविक इच्छा से बनाए गए थे। इनमें मानव एवं जानवरों की आकृतियों का आधिक्य है। कोटा के जलवाड़ा गांव के पास हाथी, घोड़ा सहित घुड़सवार एवं हाथी सवार के चित्र मिले हैं। यह चित्र उस आदिम परम्परा को प्रकट करते हैं जो आज भी राजस्थान में ''मांडणा'' नामक लोक कला के रुप में घर की दीवारों तथा आंगन में बने हुए देखे जा सकते हैं।

कालीबंगा और आहड़ की खुदाई से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों पर किया गया अलंकरण भी प्राचीनतम मानव की लोक कला का परिचय प्रदान करता है। ज्यामितिक आकारों में चौकोर, गोल, जालीदार, घुमावदार, त्रिकोण तथा समानान्तर रेखाओं के अतिरिक्त काली व सफेद रेखाओं से फूल-पत्ती, पक्षी, खजूर, चौपड़ आदि का चित्रण बर्तनों पर पाया जाता है। उत्खनित-सभ्यता के पश्चात् मिट्टी पर किए जाने वाले लोक अलंकरण कुम्भकारों की कला में निरंतर प्राप्त होते रहते हैं किन्तु चित्रकला का चिह्न ग्यारहवीं सदी के पूर्व प्राप्त नहीं हुआ। बारहवीं शताब्दी तक निर्मित ऐसी कई चित्र पट्टिकाएं हमें राजस्थान के जैन भण्डारों में उपलब्ध हैं। इन पर जैन साधुओं, वनस्पति, पशु-पक्षी, आदि चित्रित हैं। 13वीं सदी में लिखा गया ''श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूण'' नामक ग्रन्थ मेवाड़ शैली (आहड़) का प्रथम उपलब्ध चिह्न है, जिसके द्वारा राजस्थानी चित्र कला के विकास का अध्ययन किया जाता है। मेवाड़ के अनुरूप मारवाड़ में भी चित्रकला की परम्परा प्राचीन काल से पनपती रही थी। किंतु महाराणा मोकल से राणा सांगा तक मेवाड़-मारवाड़ कला के राजनीतिक प्रभाव के फलस्वरुप साम्य दिखलाई होता है। राव मालदेव ने पुन: मारवाड़ शैली को प्रश्रय प्रदान कर चित्रकारों को इस ओर प्रेरित किया। इस शैली का उदाहरण 1591 ई. में चित्रित ग्रन्थ उत्तराध्ययन सूत्र है। मारवाड़ शैली के भित्तिचित्रों मे जोधपुर के चोखेला महल को छतों के अन्दर बने चित्र दृष्टव्य हैं। राजस्थान में सत्रहवीं शती से मुगल शैली और राजस्थान की परम्परागत राजपूत शैली के समन्वय ने कई प्रांतीय शैलियों को जन्म दिया, इनमें मेवाड़ और मारवाड़ के अतिरिक्त बूंदी, कोटा, जैसलमेर, बीकानेर, जयपुर, किशनगढ़ और नाथद्वारा शैली मुख्य है। फलस्वरूप चित्रों के विषय होली के खेल, बाग-बगीचे, घुड़सवारी, हाथी की सवारी आदि रहे। मारवाड़ शैली में उपलब्ध ''पंचतंत्र'' तथा ''शुकनासिक चरित्र'' में कुम्हार, धोबी, नाई, मजदूर, चिड़ीमार, लकड़हारा, भिश्ती, सुनार, सौदागर, पनिहारी, ग्वाला, माली, किसान आदि से सम्बन्धित जीवन-वृत का चित्रण मिलता है। किशनगढ़ शैली में राधा कृष्ण की प्रेमाभिव्यक्ति के चित्रण मिलते हैं। इस क्रम में बनी-ठणी का एकल चित्र प्रसिद्ध है। किशनगढ़ शैली में कद व चेहरा लम्बा नाक नुकीली बनाई जाती रही, वहीं विस्तृत चित्रों में दरबारी जीवन की झांकियों का समावेश भी दिखलाई देता है।

मुगल शैली का अधिकतम प्रभाव हमें जयपुर तथा अलवर के चित्रों में मिलता है। बारामासा, राग माला, भागवत आदि के चित्र इसके उदाहरण हैं। 1671 ई. से मेवाड़ में पुष्टि मार्ग से प्रभावित श्रीनाथजी के धर्म स्थल नाथद्वारा की कलम का अलग महत्त्व है। यद्यपि यहां के चित्रों का विषय कृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित रहा है फिर भी जन-जीवन की अभिक्रियाओं का चित्रण भी हमें इनमें सहज दिख जाता है। 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश प्रभाव के फलत: राजस्थान में पोट्रेट भी बनने शुरू हुए। यह पोट्रेट तत्कालीन रहन-सहन को अभिव्यक्त करने में इतिहास के अच्छे साधन हैं। चित्रकला के अन्तर्गत भित्ति चित्रों का आधिक्य हमें अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से दिखलाई देता है, किन्तु इसके पूर्व भी मन्दिरों और राज प्रासादों में ऐसे चित्रांकन की परम्परा विद्यमान थी। चित्तौड़ के प्राचीन महलों में ऐसे भित्ति चित्र उपलब्ध हैं जो सौलहवीं सदी में बनाए गए थे। सत्रहवीं शताब्दी के चित्रणों में मौजमाबाद (जयपुर), उदयपुर के महलों तथा अम्बामाता के मंदिर, नाडोल पाली के जैन मंदिर, जूनागढ़ (बीकानेर), मारोठ के मान मन्दिर आदि शामिल हैं। अठाहरवीं शताब्दी के चित्रणों में कृष्ण विलास (उदयपुर) आमेर महल की भोजनशाला, गलता के महल, पुण्डरीक जी की हवेली (जयपुर) सूरजमल की छतरी (भरतपुर), जालिम सिंह की हवेली (कोटा) और मोती महल (नाथद्वारा) के भित्ति चित्र मुख्य हैं। यह चित्र आलागीला पद्धति या टेम्परा से बनाए गए थे। शेखावटी, जैसलमेर एवं बीकानेर की हवेलियों में इस प्रकार के भित्ति चित्र अध्ययनार्थ अभी भी देखे जा सकते हैं।

धातु एवं काष्ठ कला

इसके अन्तर्गत तोप, बन्दूक, तलवार, म्यान, छुरी, कटारी, आदि अस्त्र-शस्त्र भी इतिहास के स्रोत हैं। इनकी बनावट इन पर की गई खुदाई की कला के साथ-साथ इन पर प्राप्त सन् एवं अभिलेख हमें राजनीतिक सूचनाएं प्रदान करते हैं। ऐसी ही तोप का उदाहरण हमें जोधपुर दुर्ग में देखने को मिला जबकि राजस्थान के संग्रहालयों में अभिलेख वाली कई तलवारें प्रदर्शनार्थ भी रखी हुई हैं। पालकी, काठियां, बैलगाड़ी, रथ, लकड़ी की टेबल, कुर्सियां, कलमदान, सन्दूक आदि भी मनुष्य की अभिवृत्तियों का दिग्दर्शन कराने के साथ तत्कालीन कलाकारों के श्रम और दशाओं का ब्यौरा प्रस्तुत करने में हमारे लिए महत्वपूर्ण स्रोत सामग्री हैं।

लोकनाट्य

लोकनाट्य जनसाधारण के मनोरंजन के लिए जनसाधारण के द्वारा अभिनीत होते हैं। इनका रंगमच खुला होता है। गांव का चौराहा, किसी देवालय का चबूतरा या कोई बड़ा आंगन ही इनके अभिनीत होने का स्थान है। लोकनाट्यों के कथानक ढोला मारु, हीर-रांझा, वीर दुर्गादास, अमरसिंह राठौड़, सुल्तान निहालदे आदि लोककथाएं हैं।

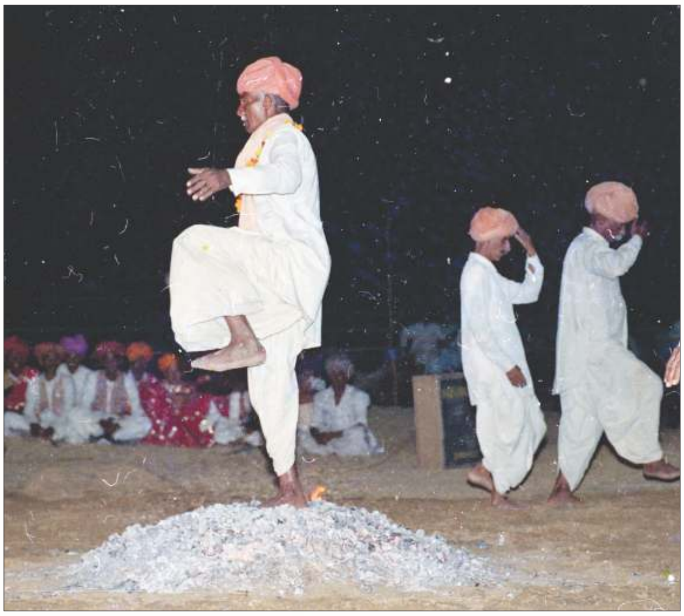

ख्याल – ऐतिहासिक एवं पौरागणिक कहानियों पर संगीत के माध्यम से अभिनय किया जाता है। ख्याल के सूत्रधार को हलकारा कहा जाता है। कुचामनी ख्याल में केवल पुरुष भाग लेते हैं, इसके संस्थापक एवं प्रवर्तक लच्छीराम, मुख्य कलाकार उगमराज, मुख्य कहानियां – मीरा मंगल, राव रिडमल, चांद नीलगिरी हैं। अलीबख्शी ख्याल – ये ख्याल मुंडावर अलवर के नवाब अली बख्श के समय शुरू हुआ। अली बख्श को अलवर का रसखान कहा जाता है। हेला ख्याल – लालसोट (दौसा) एवं सवाईमाधोपुर, मुख्य वाद्य यंत्र – नौबत।

नौटंकी

भरतपुर में लोकप्रिय, हाथरस शैली से प्रभावित लोकनाट्य जिसमें तीन प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते हैं। प्रवर्तक भूरीलाल जी, मुख्य कलाकार – गिरिराज प्रसाद, कृष्णा कुमारी। मुख्य कहानियां – अमर सिंह राठौड़, आल्हा उदल, सत्यवान सावित्री।

तमाशा

मूल रूप से महाराष्ट्र का लोकनाट्य जो सवाई प्रताप सिंह के समय जयपुर में लोकप्रिय हुआ। इसके लिए बंशीधर भट्ट को महाराष्ट्र से लेकर आये, जिसे खुले मैदान में तमाशा का आयोजन होता है उसे अखाड़ा कहा जाता है। जयपुर की प्रसिद्ध नृत्यांगना गौहर जान तमाशा में भाग लेती थी। मुख्य कहानियां – जुठठ्न मियां का तमाशा, जोगी-जोगण का तमाशा। मुख्य कलाकार – गोपी जी भट्ट।

चारबैंत

मूल रूप से अफगानिस्तान का लोकनाट्य है। पहले यह पश्तो भाषा में प्रस्तुत किया जाता था। राजस्थान में टोंक क्षेत्र में लोकप्रिय है। नवाब फैजुल्ला खां के समय करीम खां ने इसे स्थानीय भाषा में प्रस्तुत किया था। मुख्य वाद्य यंत्र – डफ।

भवाई

उदयपुर संभाग की भवाई जाति का लोकनाट्य, इसमें मुख्य महिला व पुरुष पात्रों को कहा जाता है। इसमें कलाकार मंच पर आकर अपना परिचय नहीं देते हैं। शान्ता गांधी के नाटक जसमल ओडवा पर भवाई लोकनाट्य किया जाता है जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। मुख्य कलाकार – बाघजी, यह एक व्यावसायिक लोकनाट्य है।

रामलीला

इसे तुलसीदासजी द्वारा शुरू किया गया था। बिसाऊ (झुन्झुंनू) में मूक रामलीला होती है। अटरू (बारां) में धनुष को भगवान राम नहीं तोड़ते बल्कि जनता द्वारा तोड़ा जाता है। भरतपुर में वेंकटेश रामलीला होती है। रासलीला – वल्लभाचार्यजी द्वारा प्रारम्भ किया गया था। मुख्य केन्द्र – कामां भरतपुर, फुलेरा जयपुर।

लोक संस्कृति में लोक विश्वास

डॉ. मोहनलाल गुप्ता
पूर्व उपनिदेशक, जनसंपर्क

लोक विश्वास कुछ समय में ही नहीं बन जाते, इनके पीछे सदियों से चली आ रही परम्पराओं का जुड़ाव होता है। प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों, महामारी, अकाल, दुर्घटना, मृत्यु आदि के सम्बन्ध में विश्व के प्रत्येक देश में तरह-तरह के लोकविश्वास प्रचलित होते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि उन विश्वासों का आधार वैज्ञानिक ही हो। अधिकांश लोक-विश्वास पीढ़ी दर पीढ़ी चलते रहते हैं, उन्हें सत्यासत्य की कसौटी पर नहीं कसा जाता। लोक विश्वासों की भावभूमि तर्क की बजाय आस्था पर टिकी होती है। समय के साथ लोकविश्वास समाज द्वारा भुला भी दिए जाते हैं।

राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम में स्थित जालौर जिले में लोक विश्वास व्यापक है। सम्पूर्ण राजस्थान की तरह जालौर जिले में भी वीर-पुरुषों को लोकदेवता की तरह सम्मान दिया जाता है।

गोगाजी

वीर गोगा बीकानेर के ददरेवा गांव को बसाने वाले चौहान वंश के क्षत्रिय थे। इनके बलिदान स्थल पर गोगामेढ़ी में प्रतिवर्ष भाद्रपद वदी नवमी को बड़ा मेला भरता है। इस दिन गोरक्षार्थ प्राणोत्सर्ग करने वाले गोगाजी की अश्वारोही एवं भालाधारी योद्धा के प्रतीक रूप में अथवा सर्प के प्रतीक रूप में पूजा की जाती है। इनका पाषाणोत्कीर्ण सर्प-मूर्ति-युक्त-स्थल गांवों में खेजड़ी वृक्ष के नीचे होता है। इनके सम्बन्ध में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है- 'गांव-गांव खेजड़ी ने गांव-गांव गोगो।'

जब किसान खेतों में हल चलाना आरम्भ करते हैं तब हल को और हल चलाने वाले को नौ गांठों वाली गोगाजी की राखी बांधी जाती है जिसे 'गोगा राखड़ी' कहते हैं। इन्हें खीर, लपसी और चूरमा का सात्विक भोग चढ़ता है।

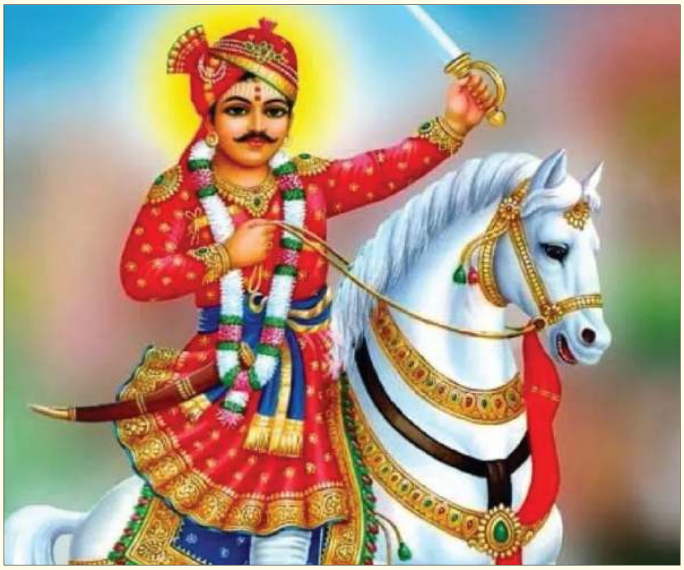

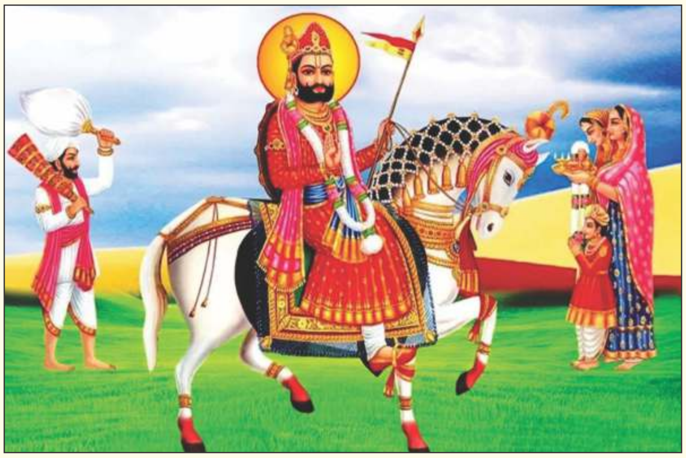

रामदेवजी

रामदेवजी मुख्यत: राजस्थान तथा गुजरात में पूजे जाते हैं किंतु अन्य प्रांतों में भी इनके मंदिर एवं थान मिलते हैं। रामदेवजी दिल्ली के तंवर अनंगपाल के वंशज और मारवाड़ के जूंजाल गांव के निवासी एवं सत्यवादी वीर थे। इनकी माता का नाम मैणादे और पिता का नाम अजमाल था। इनका जन्म ई.1352 में हुआ। ये मल्लीनाथजी के समकालीन थे। इन्होंने बाल्यकाल में ही अपने पराक्रम का परिचय देकर मल्लीनाथजी से पोकरण की जागीर प्राप्त की थी। रामदेवजी ने भैरव नामक दुष्ट को मारकर लोगों की रक्षा की जिसने पोकरण तथा आसपास के गांव उजाड़ दिये थे। इससे इनका नाम दूर-दूर तक फैल गया। इनके मुख्य स्थान रामदेवरा में प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में प्रदेश का सबसे बड़ा मेला लगता है जिसमें भाग लेने के लिये राजस्थान, गुजरात तथा अन्य प्रान्तों के लोग प्रतिवर्ष आते हैं। लाखों श्रद्धालु पैदल ही रूणेचा की यात्रा करके अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। रामदेवरा में इनके पुजारी तंवर राजपूत होते हैं जो दुष्काल में रामदेवजी का (कपड़े का) घोड़ा कंधे पर लेकर दूर-दूर तक यात्रा करते हैं और आजीविका एकत्र करते हैं। इन्हें चूरमा, मिठाई, दूध, नारियल, धूप चढ़ता है। भाद्रपद माह में पूरे महीने रामदेवजी के भजन-कीर्तन तथा रात्रि-जागरण होते हैं। इनके प्रतीक चिह्न के रूप में गावों में प्राय: किसी वृक्ष के नीचे चबूतरे पर खुले ताक में पगलिये (पद चिह्न) स्थापित किये जाते हैं। वृक्षों पर पदचिह्नों से युक्त श्वेतध्वजा फहराई जाती है। इनके पूजास्थल को रामदेवजी का थान कहते हैं। इनका फूल (चांदी अथवा सोने के पतरे पर उत्कीर्ण रामदेवजी की अश्वारोही मूर्ति) लोग गले में पहनते हैं। लोक विश्वास में इन्हें सर्व सिद्धिदाता, सद्बुद्धि एवं कामनापूरक देवता माना जाता है।

हड़बूजी

वीर हड़बूजी नागौर परगने की भूंडेल जागीर के राजा सांखला के पुत्र थे और राव जोधाजी के समकालीन थे। पिता के देहान्त के बाद ये फलौदी में रहने लगे तथा रामदेवजी की प्रेरणा से इन्होंने अस्त्र-शस्त्र त्यागकर उनके गुरु बालीनाथ से दीक्षा ली। जोधाजी ने इन्हें बेंगटी गांव अर्पण कर इनके प्रति अपनी श्रद्धा का परिचय दिया। ये रामदेवजी की मौसी के बेटे थे।

पाबूजी

इनका जन्म फलौदी तहसील के कोलूमण्ड गांव में ई.1239 में धांधलजी राठौड़ के यहां हुआ था। ये बाल्यकाल से ही बड़े पराक्रमी थे। पाबूजी ने आना बघेला के यहाँ से भागकर आए सात थोरी भाइयों को शरण दी। पाबूजी का विवाह अमरकोट के राजा सूरजमल सोढा की पुत्री से हुआ था। विवाह के तुरन्त बाद उनके प्रतिद्वन्दी बहनोई जायल के राजा जींदराव खींची ने पूर्व बैर रखने के कारण देवली चारणी की गायों को घेर लिया। देवल ने पाबूजी से गायें छुड़ाने की प्रार्थना की। कडे. संघर्ष में पाबूजी (ई.1276 में) अपने साथियों सहित वीरगति को प्राप्त हुए। इनका प्रतीक चिन्ह हाथ में भाला लिये अश्वारोही के रूप में प्रचलित है। इन्हें ऊंटों के देवता के रूप में पूजा जाता है। ग्रामीण जनमानस में इन्हें लक्ष्मणजी का अवतार माना जाता है।

मल्लिनाथजी

मल्लिनाथजी का जन्म ई.1358 में मारवाड़ के राव सलखा राठौड़ के यहां हुआ। पिता की मृत्यु के बाद ये अपने चाचा कान्हड़दे के यहाँ महेवा में रहने लगे। कालान्तर में कान्हड़दे के छोटे भाई त्रिभुनसी को जालौर के पठान शासक की सहायता से पदच्युत कर ई.1374 में महेवा के स्वामी बन गये। ई.1378 में मल्लिनाथ ने आक्रमणकारियों के तेरह दलों को मार भगाया। इससे इनका मान बहुत अधिक बढ़ गया। इस सम्बन्ध में एक लोकोक्ति कही जाती है- 'तेरा तुंगा भांगिया माले सलखाणी।' इन्होंने अपने भतीजे चूण्डा राठौड़ को मण्डौर और नागौर जीतने में सहायता दी। इन्होंने अपने कुल के लोगों को सिवाना, खेड़ और ओसियां की जागीरें दीं। मल्लीनाथ की रानी रूपादे भगवान की बड़ी भक्त थीं। उसने धारू मेघवाल नामक व्यक्ति को अपना गुरु बनाया था जो भगवान का बड़ा भक्त था। जालौर जिले की आहोर तहसील में डोडियाली गांव के पास मल्लीनाथजी का प्रसिद्ध मंदिर है। इनका एक बड़ा मंदिर बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा गांव में है जहाँ चैत्र मास में मेला लगता है। इन्हें केसर चढ़ता है।

मामाजी

मामाजी वीर-पुरुष को लोकदेवता की तरह पूजा जाता है। जालौर जिले में स्थान-स्थान पर मामाजी के थान बने हुए हैं। लोगों में मामाजी की बड़ी भारी मान्यता है। जो वीर पुरुष गायों तथा स्त्रियों की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए, उन्हें मामाजी कहकर उनके स्थान बना दिये गये जो मामाजी के थान कहलाते हैं। इन्हें मिट्टी के घोड़े भेंट स्वरूप चढ़ाये जाते हैं।

जुंझारजी

जुंझारजी भी मामाजी की भांति गौओं, स्त्रियों, बच्चों तथा असहाय लोगों की रक्षा करते हुए अपने प्राण गंवा देने वाले जुझारू वीर हैं जिन्हें लोक आस्था ने ग्राम देवता का सम्मान देकर उनके स्थान स्थापित कर दिये। यहां भी ग्रामीण पूजा-अर्चना करते हैं।

वीर बापजी

वीर बापजी के थान उज्जैनी वीर के थान भी कहलाते हैं। थांवला गांव में तथा जालौर नगर में तिलक द्वार के अंदर भी उज्जैनी वीर का थान बना हुआ है। इनका पुजारी भोपा कहलाता है।

खेतलाजी

मारवाड़ में एक कहावत है कि आधे में देवी-देवता और आधे में खेतला। अर्थात् लोक देवताओं में खेतला का स्थान सबसे ऊपर है। वस्तुत: यह 'क्षेत्रपाल' है और इसे मुख्य ग्रामदेवता कहा जा सकता है। इन्हें जगदम्बा का पुत्र माना जाता है। गेहूं की घूघरी, गुड़, आटे तथा घी की मातर एवं नारियल की चटखों का प्रसाद चढ़ाया जाता है। गांवों के लोग अपने नवजात शिशुओं की पांच साल तक चोटी रखते हैं जिसे ननिहाल में उतारा जाता है। इस अवसर पर माता अपने बच्चे को खेतलाजी के थान पर ले जाती है और बाल उतरवाती है। इसे खेतला उतारना कहते हैं।

लोक संस्कृति का दिग्दर्शन: सरदार राजकीय संग्रहालय

इमरान अली
अधीक्षक पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, जोधपुर वृत

लोक संस्कृति, इतिहास, जनजीवन, साहित्य और संस्कृति से लेकर सदियों से जारी सभी प्रकार की परंपराओं और सम सामयिक धाराओं-उप धाराओं की जीवन्त झलक का दिग्दर्शन कराने की दृष्टि से संग्रहालयों की भूमिका सर्वोपरि है। इस दृष्टि से राजकीय एवं निजी संग्रहालयों द्वारा पुरातन विरासतों से वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों से रूबरू कराने की दिशा में शासन की ओर से संचालित संग्रहालयों में जोधपुर का सरदार राजकीय संग्रहालय देश के अग्रणी संग्रहालयों में शामिल है। हरियाली का सौन्दर्य बिखेरते उम्मेद उद्यान में अवस्थित जोधपुर का यह संग्रहालय अपनी भौगोलिक स्थिति, शिल्प और स्थापत्य, विभिन्न दुर्लभ ऐतिहासिक विरासतों के साथ ही कई खासियतों की वजह से देश-दुनिया के जिज्ञासुओं, शोधार्थियों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

इस संग्रहालय में मारवाड़ के हस्तशिल्पियों के सधे हुए हाथों से सृजित विभिन्न आकार-प्रकार की कलात्मक वस्तुओं के संग्रह के साथ ही हर दीर्घा में पुरातन कालीन आयामों पर सामग्री, चित्र और प्राचीन काल की स्मृतियों की याद दिलाने वाले ऐसे कई बिम्ब हैं जिन्हें देखकर हर कोई सदियों पुराने जमाने में खोने लगता है। सन् 1909 में लार्ड किचनर के जोधपुर आगमन पर तत्कालीन महाराजा सरदार सिंह द्वारा मारवाड़ के कुशल कारीगरों को आमंत्रित कर उनके द्वारा निर्मित कलात्मक वस्तुओं का अवलोकन कराया गया। कलात्मक वस्तुओं की यह अनुपम प्रदर्शनी इस संग्रहालय का मूलाधार रही। सन् 1935 में डीडवाना के सेठ रामकुमार श्री मंगनीराम बांगड़ ने वर्तमान संग्रहालय भवन का निर्माण करवाया, जिसका उद्घाटन 17 मार्च 1936 को भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड विलिंगटन द्वारा किया गया। विस्तृत इस संग्रहालय में नौ दीर्घाएं हैं जिनमें मारवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अमूल्य पुरा सम्पदा एवं प्राचीन कलात्मक वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है।

स्मारक वस्तु दीर्घा

यह दीर्घा संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर स्थित है। इसमें संग्रहालय भवन के निर्माणकर्ता सेठ श्री रामकुमार, श्री मगनीराम बांगड़ व इस संग्रहालय के प्रथम संग्रहाध्यक्ष पं. श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ, महाराजा सरदार सिह का आदमकद चित्र प्रदर्शित है। निमाज से प्राप्त 9वीं व 10 वीं शताब्दी की त्रिमुखी शिव शक्ति की प्रतिमा प्रदर्शित है।

लघुचित्र दीर्घा

लघु चित्र कला मुग़ल दरबार में प्रशिक्षित कलाकारों द्वारा लगभग 17 वीं शताब्दी के आस-पास जोधपुर में लायी गयी। यह चित्र छोटे आकार के फलक पर कूची से किया गया बेहद पेचिदा और नाजुक कार्य है। रंगों को एक विशेष प्रकार से खनिज पदार्थो, पौधों, बहुमूल्य रत्नों, शंखों-सीपियों और असली सोने-चांदी आदि को हाथ से पीसकर मिश्रित कर बनाया जाता है। भारतीय लघुचित्र कला के विकास का ज्यादातर श्रेय ईरानी चित्रकला परम्परा को दिया जाता हैं। यह कला मुगल शासन काल के दौरान अपने चरम शिखर पर रही। उस समय लघुचित्रों के कितने ही समूह उत्पन्न हुए, जैसे कि दक्खिनी, जैन, मुग़ल, पाला, पहाड़ी और राजस्थानी। संग्रहालय की लघु चित्र दीर्घा में विभिन्न प्रकार के लघुचित्र प्रदर्शित हैं। इनमें श्रीकृष्ण लीला, राग-रागिनियों, बारहमासा, मंगलमूर्ति भगवान गणेश की जन्म पत्रिका, कावड़, भगवान जगन्नाथ आदि के चित्र, देवी के विभिन्न रूपों तथा सुनहरी कार्य युक्त आकर्षक प्राकृतिक रंगों से निर्मित अन्य लघुचित्र प्रदर्शित हैं।

अस्त्र-शस्त्रागार दीर्घा

अस्त्र एवं शस्त्रागार दीर्घा में किसी समय युद्ध और शिकार के दौरान पहने जाने वाले रक्षात्मक परिधान और शस्त्रास्त्र प्रदर्शित हैं। आधुनिक अस्त्र-शस्त्र हजारों वर्षो से प्रयोग किये जा रहे अस्त्र-शस्त्र के परिष्कार और तकनीकी सुधार की परिणति का नतीजा है। जैसे-जैसे अस्त्र-शस्त्र को अधिकाधिक विनाशकारी उपयोग में लिया जाने लगा, वैसे-वैसे उन्नत सुरक्षा देने वाले रक्षात्मक उपकरण भी बनाये जाने लगे। जब भारत ने यूरोप के साथ व्यापार करना शुरू किया, तब पश्चिमी देशों के लोकप्रिय, बेहद विनाशकारी आग्नेयास्त्रों की पहुंच भारत में भी बढ़ने लगी। इस दीर्घा में प्राचीन बन्दूकें, पिस्तौल खन्ज़र, गुप्ती, तलवारें, ढालें, भाले, हेलमेट, तोप के गोले, बन्दूकों के बेनट, अंकुश, कुल्हाड़ियां, ज़िरह बख्तर आदि प्रदर्शित हैं। इसी दीर्घा में हवाई जहाज, नावों के मॉडल, दूरबीन व प्रथम विश्व युद्ध के फोटोग्राफ प्रदर्शित हैं।

मूर्ति दीर्घा

सिन्धु घाटी सभ्यता के साथ प्रारंभ हुई भारतीय मूर्तिकला अपनी लयात्मकता के कारण जानी जाती है, जो कला, वास्तु कला और काया के बीच एक गहरा अन्तर्सम्बन्ध पैदा करती है। हिन्दू, बौद्ध और जैन कलाओं के बीच मौलिक भिन्नताएं और समानताएं उनकी मूर्तिकला और कलात्मक दृष्टि से ही प्रकट हो जाती हैं। पत्थरों से तराशी गयी और वर्षो की उपेक्षा सह चुकी, खुदाई में मिली मूर्तियां लौकिक कला का एक ऐसा रूप है जो गूढ़ प्रतीकों और आध्यात्मिक सम्बन्धों के जरिये समानता और भिन्नता की हदों को पार कर जाती है। इस दीर्घा में मण्डोर दुर्ग से प्राप्त 4-5 वीं शताब्दी के तोरण स्तम्भ पर

कृष्ण की विभिन्न लीलाओं जैसे कृष्ण द्वारा अंगुली पर गोवर्धन पर्वत धारण करना, दधि मंथन, शकट भंग, धेनुकासुर वध, कालिया दमन, कृष्ण-सुदामा के साथ मनोविनोद, वृषभ रूप में अरिष्टासुर नामक दैत्य से युद्ध तथा केशी निषुदन का अद्भुत चित्रण है। आगोलाई से प्राप्त शेषशायी विष्णु की भीमकाय प्रतिमा 10 वीं शताब्दी की है जिसमें भगवान विष्णु शेषशैय्या पर निद्रासन में हैं, जिनके चरणों के पास लक्ष्मी विराजमान है, सिरहाने गदा उत्कीर्ण है। किराडू (बाड़मेर) से प्राप्त विष्णु प्रतिमा 12 वीं शताब्दी की है जो स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस प्रतिमा की ऊपरी बांहों के दोनों तरफ पंख उत्कीर्ण है। भगवान योगनारायण की काले पत्थर की अति विचित्र मूर्ति प्रदर्शित है। इसी दीर्घा मे सिक्के भी प्रदर्शित हैं। इनमे सोने, चांदी, सीसा, तथा तांबे के गुप्तकालीन, मुगलकालीन व ब्रिटिश कालीन सिक्के प्रदर्शित हैं। इसके अतिरिक्त ओसियां, देवांगना, बाप (जोधपुर), चन्द्रावती (सिरोही) तथा निमाज (पाली) से प्राप्त कई उत्कृष्ट प्रस्तर प्रतिमाओं को भी प्रदर्शित किया गया है।

जैन कला दीर्घा

जैन धर्म का प्रादुर्भाव 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व, भगवान महावीर के साथ माना जाता है, जिन्हें जैन लोग 24 वें तीर्थकर मानते हैं। इस दीर्घा में प्रदर्शित खींवसर नागौर से प्राप्त जीवन्त स्वामी की 10 वीं शताब्दी की आदमकद प्रतिमा है। अलंकरणों से सुसज्जित, सिर के ऊपर छत्र के दोनों तरफ हाथी अंकित हैं। यह प्रतिमा कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। दीर्घा में ओसियां से प्राप्त जीवन्त स्वामी व पार्श्वनाथ की बड़ी प्रतिमाएं, जालौर के सांचौर कस्बे से प्राप्त जैन तीर्थंकरों की धातु प्रतिमाएं भी प्रदर्शित हैं। जैन चित्र विज्ञप्ति पत्र एवं जम्बूद्वीप का नक्शा प्रदर्शित है। चित्रों, दीर्घपट्ट आदि से लेकर ब्रह्माण्ड विषयक रेखाचित्रों एवं मूर्तियों में तीर्थकरों का प्रतिरूप जैन धर्म के सदाचारों को प्रतिबिम्बित करता है।

मानचित्र एवं साम्राज्य दीर्घा

इस दीर्घा मे रियासतकालीन जोधपुर राज्य की विभिन्न तहसीलों के नक्शे प्रदर्शित हैं, जिनमें बाली, पाली, सादड़ी, परबतसर,

डीडवाना, नागौर, बिलाड़ा, जैतारण आदि तहसीलों के मानचित्र प्रदर्शित हैं। बिजली उत्पादन यन्त्र मॉडल भी आकर्षण का केन्द्र है।

राजा–महाराजाओं के चित्र

इस दीर्घा में राठौड़ राजपूत शासकों के आदमकद चित्रों के साथ ही मारवाड़ के राजा–महाराजाओं, विभिन्न शासकों के आदमकद चित्र प्रदर्शित हैं। ये आदमकद चित्र रियासतकालीन राजा–महाराजाओं के सम्मान में भेंट स्वरूप दक्ष व कुशल चित्रकारों द्वारा सुनहरी छटा व प्राकृतिक रंगों से भरी चित्रकारी के अनूठे उदाहरण हैं। इन व्यक्तिगत चित्रों से राजस्थान के राज परिवारों के अतीत की स्पष्ट झलक मिलती है। यहां अश्व पर सवार महाराजाओं के चित्र हैं। राजसी ठाठ–बाठ में उनके तेल चित्र और हाथी दांत पर लघुचित्र हैं। राठौड़ राजपूतों ने 13 वीं शताब्दी के मध्य में अपना शासन प्रारम्भ किया था और 1459 में जोधपुर बसाकर अपनी राजधानी बनायी। इस दीर्घा में जोधपुर के संस्थापक राव जोधा, राव रिडमल, राव गांगा, राव मालदेव, जसवन्त सिंह द्वितीय, सर प्रताप सिंह, महाराजा उम्मेद सिंह, महाराजा हनवन्तसिंह के चित्र प्रदर्शित हैं।

सजावटी कला दीर्घा

सजावटी कला दीर्घा में राज्य के शिल्प और वस्त्र उत्पादन की शानदार विरासत के दर्शन होते हैं। इस दीर्घा में मकराना से प्राप्त संगमरमर की कलात्मक वस्तुएं प्रदर्शित हैं। इन पर किया गया सुनहरी

समस्त छायाचित्र – डॉ. दीपक आचार्य, उप निदेशक, जोधपुर

काम हर किसी को मुग्ध कर देते हैं। इसके साथ ही जैसलमेरी पत्थर से निर्मित कलात्मक वस्तुएं, सांभर से प्राप्त नमक से निर्मित विश्वविख्यात वस्तुएं, मेड़ता से प्राप्त हाथी दांत की वस्तुएं हैं। इनमे रेलवे स्टेशन सहित, चौपड़ एवं शतरंज की गोटियां हैं वहीं सोजत एवं रायपुर से निर्मित लकड़ी की वस्तुएं हैं, जिनमें तश्तरियां और लाख की पॉलिश वाले विभिन्न प्रकार के खिलौने हैं। इसी कक्ष में सीप से निर्मित कलात्मक वस्तुएं भी प्रदर्शित हैं, जिनमें इत्रदानियां एवं फोटो एलबम मुख्य हैं। इस दीर्घा में ईशर गणगौर, सुनहरा कृष्ण–झूला प्रदर्शित है, जो इस दीर्घा का मुख्य आकर्षण है।

शिकार एवं प्रकृति दीर्घा

इस दीर्घा मे जोधपुर के विभिन्न प्रकार के दुर्लभ जानवरों को स्टफ कर प्रदर्शित किया गया हैं। इसमें शेर, मगरमच्छ, घड़ियाल, भेड़िया व सूअर आदि के सिर मुख्य हैं। इसी दीर्घा में दो बाघों को लड़ते हुए दिखाया गया है। विभिन्न प्रकार के पक्षियों को स्टफ कर प्रदर्शित किया गया है। वनस्पतियों के संरक्षण के लिये उनको दबाकर व सुखाकर दीर्घा में प्रदर्शित किया गया है।

लोकप्रियता की ओर अग्रसर है संग्रहालय

संग्रहालय के प्रति अब देशी–विदेशी पर्यटकों के साथ ही विद्यार्थियों, जिज्ञासुओं, इतिहास अध्येताओं और आम नागरिकों का रुझान भी उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। हाल ही जोधपुर जिला कलक्टर की अभिनव पहल के अन्तर्गत स्कूली बच्चों को संग्रहालय दिखाने के लिए तय शुदा कार्ययोजना का सूत्रपात किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत जुलाई माह से अब तक जोधपुर शहर की 52 निजी एवं राजकीय स्कूलों के 3 हजार 728 विद्यार्थी इस संग्रहालय का नि:शुल्क अवलोकन कर चुके हैं। बच्चों के अभिभावकों का भी इसके प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है। संग्रहालय के प्रति आमजन से लेकर देशी–विदेशी पर्यटकों की रुचि में भी इजाफा हो रहा है। वर्ष में केवल एक दिन धुलण्डी को छोड़कर साल में शेष 364 दिन यह संग्रहालय देखने के लिए खुला रहता है।

थेवा कला

अंकित शर्मा
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

राजस्थान का प्रतापगढ़ थेवा कला की वजह से अपना विशिष्ट स्थान रखता है। थेवा कला विभिन्न रंगों के कांच पर सोने की मीनाकारी को कहते हैं।

इस कला में पहले कांच पर सोने की बहुत पतली वर्क लगाकर उस पर बारीक जाली बनाई जाती है, जिसे थारणा कहा जाता है, फिर

कांच को कसने के लिए चांदी के बारीक तार से फ्रेम बनाया जाता है, जिसे वाडा कहते है। इसके बाद इसे तेज आग में तपाया जाता है, जिससे शीशे पर सोने की कलाति उभर जाती है। थेवा कला में आभूषणों के अलावा सजावटी सामान भी बनाए जाते हैं।

थेवा आभूषण बनाने वाले स्वर्णकारों में सुप्रसिद्ध शिल्पकार श्री नाथू सोनी के परिवार को प्रतापगढ़ के तत्कालीन शासक सामंत सिंह ने राजसोनी की उपाधि प्रदान की थी, इसलिए आज भी इन परिवारों को राजसोनी कहा जाता है। इस कला में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए प्रतापगढ़ के श्री महेश राजसोनी को पद्मश्री प्रदान किया गया।

थेवा कला पर नवम्बर, 2002 में पांच रुपये का डाक टिकट जारी किया गया। राजस्थान थेवा कला संस्थान प्रतापगढ़ को जी-आई टेग प्रमाण पत्र भी मिल चुका है। थेवा कला का उल्लेख एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका में भी किया गया है।

फड़ चित्रकला शैली

पन्नालाल मेघवाल
पूर्व संयुक्त निदेशक, जनसंपर्क

राजस्थान में फड़ चित्रकला शैली को अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फड़ चित्रकार श्रीलाल जोशी के पूर्वजों ने विकसित किया। सर्व प्रथम राजमहलों की दीवारों पर आधृत एवं सज्जित किन्तु मौन-मूक इस कला को कलाकारों ने कपड़े के केनवास पर सुर-ताल-लय में स्वरबद्ध किया। मेवाड़ी में कपड़े के टुकड़े पर चित्रण को फड़ कहते है जो संस्कृति के पट (वस्त्र) का ही अपभ्रंश है। पड़ या फड़ का तात्पर्य पढ़ने या बाँचने से भी लगाया गया है। सर्वाधिक फड़ें देवी-देवताओं में पाबूजी राठौड़, देवनारायण, दुर्गा, गोगाजी, दशामाता, सूरजनारायण, पथवारी, डाडा बावजी, महादेवजी, रामदेवरा, भंवरा बावजी, शीतला माता आदि मुख्य हैं। ये फड़ें जीवनधर्मी, आदर्शमय एवं अनुष्ठानिक होते हुए अपनी मूल पीठिका में लोक मंगल की धार्मिक भावना लिए होती हैं। ये देवी- देवता स्वधर्मपालन और जन कल्याण में लगे लोगों की आस्था और विश्वास में अभिवृद्धि करती हैं। इसके अलावा महिलाओं के पूज्य त्यौहारों की पारम्परिक कथाएं जैसे- नागपंचमी, करवा चौथ, गणगौर, श्रवण कुमार आदि का भी फड़ों में चित्रांकन होता है। गीत गोविन्द, महाभारत, रामायण, कुमार सम्भव, पंच कल्याण आदि से लेकर ऐतिहासिक गाथाओं, जैसे- पृथ्वीराज चौहान, हाडी रानी, पद्मिनी, जौहर, महाराणा प्रताप, अमरसिंह राठौड़, हल्दी घाटी, संयोगिता हरण, चन्दवरदाई, पृथ्वीराज रासो, गोरा-बादल, मूमल, ढोला मारू आदि विषयक गाथाओं पर भी फड़ों में सुन्दर चित्रांकन किया जा चुका है।

राजस्थान की लोक संस्कृति में पड या फड़ बांचने या पढ़ने की विशेष परम्परा थी। सामूहिक फड-वाचन किसी खुली जगह या चौपाल में पूर्ण श्रद्धा व आस्था के साथ होता था। लगभग तीस फुट लम्बी और पाँच फुट चौड़ी फड़ बांसों के सहारे खुली जगह या चौपाल में तान दी जाती थी। फड़ में चित्रित कथा को सुर-ताल तथा लय के साथ गायन

के रूप में पढ़ा जाता था। इसके सुरीले गायक को भोपा कहते थे, जो कि गाते समय छडी की सहायता से फड़ पर चित्रित दृश्यों को समझाता था। प्राचीनकाल में भोपे गांव-गांव में जाकर वीरों की शौर्य गाथा, विरुदावली को गीतों में रचकर सुनाते थे। फड़ में उन्हीं विरुदावलियों, कथाओं को चित्रित कर इन्हें दृश्य-श्रव्य बना दिया। भोपे के साथ भोपण तथा उसके अन्य साथी भी होते थे। यदि फड़ रात में बांची जाती थी तो भोपण हाथ में एक डण्डे पर लटकता एक दीपक लिए रहती थी, जिसके उजाले में फड़ चित्र चमकते थे। इस प्रकार गायी गई घटना तथा चित्र में ऐसा सामंजस्य होता था कि श्रोता पर गहराई तक असर पड़ता था। भोपे के अन्य साथी ढोलक, मंजीरा, अलगोजा, थाली, चींपिया, जंतर, रावणहत्था आदि लोक वाद्य बजाते थे। मुख्य गायक भोपा लाल रंग की कोर लगी अंगरखी धोती और साफा बांधकर अपने उल्लासपूर्ण स्वरों में घटना के अनुरूप उतार-चढ़ाव का क्रम साधे रहता था। इस प्रकार कथा-गाथा को सुर-ताल-लय में बांधते भोपा-भोपण और श्रद्धालु मंत्रमुग्ध हो फड़ का देखते सुनते थे। उल्लेखनीय है कि सुप्रसिद्ध

लोक नायक पाबूजी का बोध चिन्ह भाला है जबकि देव नारायण का बोध चिह्न सर्प है। सर्वाधिक लोकप्रिय पाबूजी की फड़ है किन्तु देवनारायण जी की सवारी फड़ सबसे लम्बी होती थी। राजस्थान की फड़ चित्रकारी पूर्ण श्रद्धा भक्ति व आस्था के साथ व्यावहारिक रूप में उपयोग में ली जाती थी। देवताओं के सो जाने की मान्यता से चातुर्मास

में फड़-चित्रण नहीं होता था। पुनः देवउठनी एकादशी से फड चित्रण कार्य आरम्भ होता था।

फड़ चित्रण में एक ओर जहां फड़ शैली की परम्परागत सीमाएं कलाकार को बांधकर रखती थीं वहीं दूसरी ओर रंगों के प्रयोग की भी अपनी सीमाएं थीं। प्रायः लाल, पीला, हरा, काला, आसमानी, भूरा, एवं त्वचा का रंग भी नारंगी जैसा प्रयुक्त होता है। शौर्य गाथा चित्रण में लाल रंग प्रधान होता है। प्राचीनकाल में प्राकृतिक या पत्थर के रंगों का प्रयोग होता था जो वनस्पतियों से प्राप्त होते थे। विभिन्न प्रकार के रंग विशेष पत्थरों को पीसकर उनमें गोंद या सरेस मिलाकर तैयार होते थे। जंगार से हरा, हरताल से पीला, हींगलू से लाल और हरमच से भूरा रंग बनाते थे। पत्थरों को पीस कर उनमें गोंद मिले रंग जहां चित्रों को विशेष रंग देते थे। गोंद या सरेस मिलने से रंगों का पक्कापन बढ़ता था। यह बरसों तक फीके नहीं पड़ते तथा इतने चमकीले होते हुए भी आंखों को चुभते नहीं थे। फड़ चित्र शैली के चित्रों में आकृति थोड़ी मोटी और गोल, आंखें बड़ी-बड़ी तथा नाक अन्य शैलियों की अपेक्षा छोटी व मोटी होती है। राजस्थान फड़ शैली के श्रीलाल जोशी लोक कला क्षेत्र के एक मात्र ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने वंशानुगत फड़ चित्रांकन में रंग संयोजन का आधार पारम्परिक रखा किन्तु फोक आर्ट और फाइन-आर्ट को आत्मसात किया।

राजस्थान री पाग, बढ़ावे सब रो मान

आज भी जीवंत है सवा सेर सूत सर पर बाँधने की पुरातन परंपरा

आकांक्षा पालावत
जनसम्पर्क अधिकारी

मरुभूमि राजस्थान रंग-रंगीली संस्कृति, अनुपम साहित्य, पुरातात्विक धरोहरों, परिवेशीय वैविध्य के साथ ही शौर्य-पराक्रम से भरे गौरवशाली इतिहास और गर्वीली परम्पराओं की अनूठी श्रृंखला के कारण देश-दुनिया में अपनी विशिष्ट और विलक्षण पहचान रखता है। मरुधरा अपने भीतर सदियों से सहेजे हुए हैं लोक सांस्कृतिक रस और रंग, जो साल भर किसी न किसी उत्सव, पर्व और त्योहार से लेकर सामाजिक एवं पारिवारिक आयोजनों में मुखर होकर अपने वैशिष्ट्य को पूरे उत्साह, उमंग एवं उल्लास के साथ प्रवाहमान रहकर जन-जन और परिवेश को महा आनंद की भावभूमि प्रदान करते रहते हैं। यहां के पहाड़ों से लेकर मैदानों, पठारों और रेतीले सरहदी इलाकों तक राजस्थान की लोक संस्कृति की सुमधुर स्वरलहरियां नर्तन करती हुई प्रतिध्वनित होती रहती हैं वहीं नदियां, नहरें, तालाब, झीलें और अन्य जलाशयों से क्षेत्र विशेष की परंपराओं के जाने कितने ही प्रपात सदैव झरते रहकर मरुभूमि का महिमागान करते रहते हैं।

भौगोलिक विशेषताओं के साथ ही मरुभूमि का लोक जीवन भी उतना ही बहुरंगी और उल्लासित कर देने वाला है। परंपरागत परिधानों, आभूषणों और अवसर विशेष पर पहने जाने वाले कलात्मक वस्त्रों का भी अपना अलग ही संसार है। इन्हीं में मान-मर्यादा और सम्मान की प्रतीक पाग या पगडी अथवा साफा है, जो जीवन के कई-कई रंगों और अवसरों से परिचित कराता है।

यहां की पाग-पगड़ियों का तो कहना ही क्या। हर कोई चाहता है इसे धारण कर गर्व का अहसास करें और पुरातन श्रेष्ठ परंपराओं से अपना नाता जोड़ता हुआ गौरवशाली इतिहास के संवाहक के रूप में अन्यतम पहचान बनाए। यह राजस्थान है जो हर मामले में सिरमौर रहा है और इसी शीर्ष को महिमामण्डित करते हुए गौरव का अनुभव होता है। इस धरा पर प्राचीन काल से 'सवा सेर सूत' सिर पर बांधने की प्रथा सदियों से विद्यमान है। फैशनपरस्ती और आधुनिकताओं भरे वैश्वीकरण के मौजूदा दौर में भी पाग-पगड़ियों एवं साफों का वजूद उसी सम्मान के साथ बना हुआ है जैसा कि सदियों से यह स्वाभिमान और गर्व को अभिव्यक्त करता रहा है। वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन के साथ ही लोक परंपरा में यह पाग और पगड़ी कई तरह से जीवनोपयोगी एवं सहयोगी हैं। 'अनेकता में एकता' का उद्घोष करते रहे राजस्थान और देश में यही चीज हैं जिनसे व्यक्तित्व, धर्म, जाति-सम्प्रदाय और क्षेत्र विशेष से लेकर शुभाशुभ अवसरों, पर्व-

त्योहारों आदि की थाह पायी जाती रही है। इसके साथ ही आर्थिक और सामाजिक स्तर का संक्षिप्त विवरण भी मिल जाता है। तरह-तरह के रंगों की पाग के भी अलग-अलग निहितार्थ होते हैं। पाग का रंग उसके घर-परिवार की कुशलक्षेम का समाचार भी देता है। परम्पराओं और रिवाजों के साथ-साथ पाग, पहनने वाले के सिर को मरुधरा की अत्यधिक गर्मी से भी बचाती है और प्राय: पाग का तकिये या कुएं से पानी खींचने की डोरी के रूप में भी उपयोग किया जाता है।

मारवाड़ में तो पाग-पगड़ी का सामाजिक रिवाज आदि काल से प्रचलित रहा है। कहा जाता है कि राजस्थान में 12 कोस पर बोली बदलती है, उसी प्रकार 12 कोस पर साफे के बांधने के पेच में भी फर्क आ जाता है। प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न जातियों से जुड़ी पाग-पगड़ियों के रंगों में, बांधने के ढंग में एवं पगड़ी के कपड़े में विभिन्नताएं होती हैं।

यह राजस्थानी पहनावे का अभिन्न अंग है। पुराने जमाने से बड़ों या अतिथियों के सामने खुले सिर आना अशुभ और अभद्र माना जाता रहा है। राजस्थान में पगड़ी के बांधने के ढंग, पेच एवं पगड़ी की कसावट देख कर यह अन्दाज लगाया जा सकता है कि वह व्यक्ति कैसा है? उसकी पृष्ठभूमि क्या है? अर्थात् पाग-पगड़ी व्यक्ति की शिष्टता, चातुर्य व विवेकशीलता की परिचायक होती है।

मान-मर्यादा और स्वाभिमान सूचक है पाग

राजस्थान में पगड़ी केवल सौंदर्य और अलंकरण के लिए ही नहीं बांधी जाती बल्कि पगड़ी के साथ मान, प्रतिष्ठा, मर्यादा और स्वाभिमान जुड़ा हुआ रहता है। पगड़ी का अपमान स्वयं का अपमान माना जाता है। प्राचीन काल में पगड़ी के मान की रक्षा के लिए कई बार तलवारें म्यान के बाहर हुई, अनेक समझौते हुए, झगड़े संधि में बदले, टूटे सम्बन्ध बने तथा दुश्मन पाग बदल कर भाई बने। पगड़ी की प्रतिष्ठा का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि व्यापार में या कोई भवन किराये पर लेने से पूर्व दी जाने वाली राशि को पगड़ी कहा जाता है, अर्थात आज भी पगड़ी अगाध और अटूट विश्वास का प्रतीक है।

रंग-रूप के अनुरूप मिलती है नाम की पहचान

स्थानीय भाषा में इसे पेंचा, पाग या पगड़ी कहा जाता है। लम्बाई में बड़ी है तो ''पाग'', छोटी है तो ''पगड़ी'' तथा रंगीन हो और अन्तिम छोर जिसे ''छेला'' कहते हैं, झरी के बने हों तो ''पेंचा'' कहलायेगा। पेचा सिर्फ एक रंग का होता है। यदि वह बहुरंगा है या जरी का काम हो तो उसे ''मदील'' कहते हैं। मदील किसी भी रंग की हो सकती है, पर बहुरंगी नहीं। लोहे की है तो ''कनटोप'', सोने की है तो उसे ''मुकुट'' और हाथ भर का कपड़ा बन्धा है तो ''चिन्दी'' भी कहा जा सकता है। लोक भाषा में पाग-पगड़ी के अनेक नाम यहां प्रचलित हैं - जैसे पोतीयो, साफो, पगड़ी, पाग, फालियो, घूमालो, फेंटो, सेलो, लपेटो, शिरोत्राण, अमलो, पगड़ी इत्यादि। वहीं प्राचीन साहित्य में पाग के लिये ''उष्णीस'', ''शिरो वेष्टन'', ''शिरोधान'', ''शिरस्राण'' इत्यादि नामों का उल्लेख मिलता है।

पाग की सज्जा को चार चांद लगाते हैं आभूषण

पगड़ी की शोभा बढ़ाने के लिए कई प्रकार के आभूषण भी होते है, जैसे सरपेच, कलंगी, चन्द्रमा आदि। समय के साथ राजस्थान की वेशभूषा में अनेक परिवर्तन आये हैं, लेकिन आज भी तीज-त्यौहारों-पर्वो पर, शादी-ब्याह में पाग-पगड़ियों का प्रयोग होता है। आजकल विभिन्न प्रकार के समारोहों, सम्मेलनों, सम्मान कार्यक्रमों में इनका बहुतायत से इस्तेमाल देखा जाने लगा है।

सदियों तक होता रहेगा गौरवगान

राजस्थानी बड़े गर्व के साथ अपने परिधानों को धारण करते हैं। शायद यही कारण है कि देश-दुनिया भर के लोग हमारे रीति-रिवाजों, पहनावे, परंपराओं और लोक संस्कृति की ख़ासियतों की और आकर्षित होते रहे हैं। पाग-पगड़ियों का जमाना सदियों से चला आ रहा है और इनकी लोकप्रियता एवं लोक मान्यता को देखते हुए कहा जा सकता है कि आने वाली सदियों तक पाग-पगड़ियों का गौरवशाली एवं सम्मानजनक अस्तित्व बना रहेगा।

लोक संस्कृति की समृद्ध परम्पराओं का शहरः बीकानेर

हरि शंकर आचार्य
सहायक निदेशक, जनसंपर्क

संवत् 1545 के बैसाख माह की दूज को राव बीका द्वारा स्थापित शहर बीकानेर, अपनी स्थापना के इतने वर्ष बाद आज भी सौहार्द और अपनेपन की मिसाल है। यह ऐसा शहर है, जहां सभी धर्म और जाति के लोग मिल जुलकर रहते हैं। एक-दूसरे के सुख-दुःख के भागीदार बन कर सदैव खड़े दिखते हैं। इस अपनायत का मूल है, यहां की लोक संस्कृति और समृद्ध परंपराएं। सालभर लोक संस्कृति को जीने वाला अलबेला शहर बीकानेर, फाल्गुनी बयार के बीच रम्मतों के लिए जाना जाता है, तो भादवे में यहां भरने वाले मेले जन-जन में नई ऊर्जा का संचार करते हैं। सावन में बीकानेर के सैकड़ों शिवालयों में भक्ति रस का संचार होता है तो पोष की 'हाड कंपा' देने वाली सर्दी में मूक प्राणियों के प्रति सेवा की भावना बीकानेर को विशिष्ट स्थान दिलाती है।

होली के अवसर पर बीकानेर में मंचित होने वाले लोक नाटक, जिन्हें रम्मतों के नाम से जाना जाता है, सदियों से आमजन के मनोरंजन के साथ, ऐतिहासिक विरासत को समझने का महत्त्वपूर्ण साधन रहे हैं। शहर के पाटों पर रात-रात भर खेली जाने वाली इन रम्मतों में वीर रस प्रधान अमर सिंह राठौड़ की रम्मत, भक्त पूरण मल की रम्मत और फक्कड़ दाता की रम्मतें सबसे ज्यादा लोकप्रिय हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में भी इनके प्रति उत्साह कम नहीं होना, इनकी सबसे बड़ी खूबी है। रम्मत खेलने वाले लोक कलाकार बसंत पंचमी से इनका अभ्यास प्रारम्भ कर देते हैं और होली से एक सप्ताह पूर्व खेलणी सप्तमी तक यह दौर चलता रहता है। इन रम्मतों के परिप्रेक्ष्य में अच्छी बात यह है कि युवा भी इनसे जुड़ने लगे हैं, जो कि अगले कई दशकों तक इन परंपराओं को पोषित करने के दृष्टिकोण से सुखद भी है।

बीकानेर की होली के बारे में कहा जाता है कि यहां होली जिंदादिल लोगों को त्योहार है और जो जिंदा रहता है, वह पूरे उत्साह के साथ होली खेलें। पिछले दो-तीन दशकों से बीकानेर का फागणिया फुटबॉल भी आमजन के उत्साह का केन्द्र बन चुका है। इस 'मैत्री फुटबॉल मैच' को खेलने देवलोक से देवता, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर के नेता, उद्योगपति व खिलाड़ी आते हैं। यह 'स्वांग' होते हैं, जो विशिष्ट और अतिविशिष्ट लोगों का रूप धारण कर खेलते हैं।

दुनिया में अनूठी है यहां की 'पाटा संस्कृति'

परकोटे में बसा बीकानेर का पुराना शहर अपनी 'पाटा संस्कृति' के लिए पूरी दुनिया में विशेष पहचान रखता है। 'पाटे' वास्तव में लकड़ी के बड़े तख्त हैं, जो शहर के लगभग प्रत्येक चौक-मोहल्ले में सदियों से पड़े हैं। यह पाटे न सिर्फ वैचारिक आदान-प्रदान के मुख्य केन्द्र हैं, बल्कि इन पाटों पर बैठे शहर के मौजीज लोग यहां से गुजरने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर नजर रखते हैं। इन पाटों को महज 'हथाई' का केन्द्र

नहीं मानते हुए, इन्हें बीकानेर की संस्कृति का अभिन्न अंग माना जाए, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वास्तव में बीकानेर रातों को जागने वाला शहर है। इन पाटों पर सबसे अधिक 'रमक-झमक' देर शाम शुरू होती है, जो आधी रात तक बदस्तूर जारी रहती है।

नई ऊर्जा का संचार करते हैं मेले-मगरिए

बीकानेर उत्सवधर्मी शहर है, इसमें कोई दो राय नहीं है। यहां हर क्षण को उत्सवी माहौल में जिया जाता है। भादवे के मेलों के दौरान यह उत्सव चरम पर होता है। बीकानेर का पूनरासर हनुमान का मेला, सियाणा, कोडाणा और तोलियासर का भैरव मेला और आसोज में जन-जन की आस्था का केन्द्र देशनोक करणी माता का 'पैदल जातरुओं'' की सेवा भावना से सराबोर होता है। वैसे, बीकानेर के हजारों लोग रुणिचा स्थित बाबा रामदेव के मेले में जाते हैं। यहां का जेठा-भुट्टा और गेबना पीर का मेला भी बीकानेर के साम्प्रदायिक सद्भाव को और अधिक प्रगाढ़ता देता है। बिश्नोई सम्प्रदाय के गुरु जम्भेश्वर का मेला, सुसवाणी माता का मेला और जसनाथ मंदिर में भरने वाला मेला बीकानेर की उत्सवधर्मिता को साकार करते हैं।

सावण बीकानेर......

सावण महीने में जहां बरसात परवान पर होती है, तो यहां के शिव मंदिरों में बहती भक्ति की रसधार परमानंद की अनुभूत करवाने वाली होती है, वहीं लगभग इन सभी शिव मंदिरों में बने तालाबों में 'गंठों' और 'गोठ' का दौर चलता है, जो किसी भी व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षिक कर लेता है। कुल मिलाकर यह समय और अधिक बीकानेर की लोक संस्कृति, परम्पराओं और विरासत से साक्षात् करने का दौर होता है।

जहां पूरा परकोटा एक छत है

बीकानेर, दुनिया का एकमात्र ऐसा शहर है, जहां का पूरा परकोटा एक छत है। राज्य सरकार द्वारा बाकायदा, परकोटे को छत मानते हुए, सामूहिक विवाह पर अनुदान दिया जाता है। वास्तव में, बीकानेर के 'पुष्करणा ब्राह्मण समाज' द्वारा दो वर्ष के अंतराल से आयोजित होने वाला सामूहिक विवाह अनूठा अवसर होता है। जब एक ही दिन में शहर में दो सौ से अधिक विवाह होते हैं। इस दिन घर-घर में उत्सवी माहौल होता है। प्रत्येक गली-मोहल्ले से बारात निकलती है यह विवाह पूर्ण सादगी से होते हैं।

परम्पराओं का निर्वहन करने वाला शहर

मकर संक्रांति पर बहिन-बेटियों के ससुराल 'घेवर' देना हो या सावणी तीज पर 'सत्तू' देने की परम्परा, बीकानेर को अपनी लोक संस्कृति की जड़ों से जोड़ने वाली होती है। इस लेन-देन से सामाजिक ताने-बाने को और अधिक प्रगाढ़ता मिलती है। गणगौर का पर्व भी बीकानेर में पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है।

खान-पान भी है लोक संस्कृति का अभिन्न अंग

बीकानेर एक ओर जहां पापड़, भुजिया और रसगुल्लों के लिए जाना जाता है, वहीं यहां की लच्छेदार रबड़ी और मलाई, पंचधारी के लू, कचौरियां और कड़ाही का दूध भी आमजन में खासा लोकप्रिय है। पुराने शहर की चायपट्टी, कचोरियों और अन्य नमकीन के विक्रय का सबसे बड़ा स्थान है। एक अनुमान के मुताबिक बीकानेर शहर में प्रतिदिन लगभग एक लाख कचौरियां बनती और विक्रय होती हैं।

कुल मिलाकर बीकानेर लोक संस्कृति और परम्पराओं को पल्लवित और पोषित करने के साथ इन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करने वाला शहर है। आज की भागमभाग भरी जिंदगी में बीकानेर की यह परम्पराएं और यहां रहने वाले लोगों की दिनचर्या अध्ययन योग्य है। बदलते समय के बावजूद बीकानेर ने खुद को बदलाव से दूर रखा है, जो यहां की सबसे बड़ी खूबी है।

सरहद पर दुर्लभ लोकवाद्यों का अनूठा खजाना

डॉ. दीपक आचार्य
उप निदेशक, जनसम्पर्क

भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परंपराओं में सांगीतिक पक्ष को आदिकाल से लोक जीवन के उल्लास व अन्तस के आनंद का पर्याय माना जाता रहा है। कला-संस्कृति-संगीत की यह त्रिवेणी ऐसी ही है जो शाश्वत आनंद का समंदर उमड़ाने वाली है। इसीलिए इन तीनों ही कारकों का परस्पर समन्वय मानव सभ्यता की शुरुआत से ही बना हुआ है। भारतीय मूर्तिकला की आदिम परम्परा में संगीत का अहम् स्थान है। यही कारण है कि देवी-देवताओं, यक्ष, गंधर्व, किन्नरों से लेकर सभी प्रकार की मूर्तियों में से बहुसंख्य प्रतिमाएं किसी न किसी वाद्य से सुसज्जित हैं। इन वाद्यों का उपयोग स्वर्ग से लेकर पृथ्वी तक के तमाम लोकों में होता रहा है। देवों से लेकर मानव जाति तक के लिए ये वाद्य दिली सुकून के माध्यम रहे हैं। अन्तर्मन में आनंद की सरिताएं बहाने से लेकर सामाजिक एवं सामूहिक पर्व-उत्सवों, मेलों-त्योहारों और कई परम्पराओं का अहम् हिस्सा बने रहने वाले ये वाद्ययंत्र आज भी हमारी पुरातन संगीत परंपरा व इसके वैभव के साक्षी हैं।

अनुपम एवं दुर्लभ वाद्ययंत्रों का दिग्दर्शन

ऐसे कई प्रकार के अनुपम एवं दुर्लभ वाद्ययंत्रों का एक खजाना भारतवर्ष की पश्चिमी सीमा पर रेगिस्तान के समंदर में है। जैसलमेर जिला मुख्यालय पर अवस्थित राजकीय संग्रहालय में एक से बढ़कर एक वाद्ययंत्रों को संग्रहीत किया हुआ है वहीं यहां प्रदर्शित पुरातन मूर्तियों में भी वाद्ययंत्रों का भरपूर उपयोग देखा जा सकता है। स्वर-व्यंजनों का पूरा संसार दिखलाने वाला यह संग्रहालय देश भर में अपनी तरह का अनूठा संग्रहालय है जहां प्राचीनतम लोक वाद्यों की झलक पाने देशी-विदेशी सैलानियों, शोधार्थियों, संगीत प्रेमियों से लेकर स्वर सम्राटों व स्वर साम्राज्ञियों तक की आवाजाही बनी रही है। संगीत के इन विभिन्न श्रेणियों के कद्रदानों को यहां आकर नवीन जानकारी मिलने के साथ ही मन की शांति का अहसास होता है।

देशी-विदेशी कद्रदानों के लिए आकर्षण का केन्द्र

जैसलमेर का यह राजकीय संग्रहालय दुर्लभ लोक वाद्यों के बेजोड़ संग्रह की वजह से देशवासियों में तो गर्व एवं गौरव का बोध कराता ही है, सात समंदर पार से आने वाले पर्यटकों के लिए भी जबरदस्त आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। ये पुरातन लोक वाद्य मौन रहकर भी प्राचीन संगीत परम्परा के वैभव और गौरवशाली अतीत की गाथाओं का बखान करते प्रतीत होते हैं।

विलक्षण है- 'कला में संगीत' दीर्घा

संग्रहालय में पुरा सामग्री का व्यापक संग्रहण तो है ही, इसके एक हॉल में प्राचीन वाद्यों की झलक दिखाने वाली एक अनूठी दीर्घा भी

स्थापित है जिसका नाम 'कला में संगीत' दिया गया है। इसमें लोक वाद्यों का सुरक्षित संग्रह होने के साथ ही प्राचीन सांगीतिक परम्परा की मूर्तियां व बहुरंगी तस्वीरें हैं जिनमें विभिन्न अवसरों पर लोकवाद्यों के उपयोग का दिग्दर्शन कराया गया है। इस दीर्घा में भारतवर्ष के विभिन्न कालखण्डों की संगीत परम्परा, पौराणिक मिथकों, राग दरबारियों, देवी-देवताओं, शादी-ब्याह व मांगलिक पर्वो, आंचलिक संगीत आदि से जुड़ी सामग्री का समावेश है।

कृष्ण लीलाओं का मनोहारी चित्रण

द्वापरयुगीन झलकियों में राधा कृष्ण कुंज में मुरलीवादन में मस्त कृष्ण, वीणावादन करते हुए कृष्ण, नृत्य मुद्रा में राधा-कृष्ण के साथ ही कृष्णलीला का एक मनोरम लघुचित्र है जिसमें बालकृष्ण मैया यशोदा की गोद में हैं तथा वादक मृदंग, तुरही व नगाड़े बजाते दिख रहे हैं और सन्नारियां मंगलगान कर रही हैं। इसी तरह का श्री कृष्णलीला से जुड़ा एक और लघुचित्र है जिसमें श्रीकृष्ण के साथ वीणा धारण किये हुए एक महात्मा नृत्य करते दिखाई दे रहे हैं।

रियासती संगीत काल से साक्षात्

कलादीर्घा में दरबारी संगीत की ऐतिहासिक झांकियाँ हैं। इनमें मुगल बादशाह संगीत का आनंद लेते हुए, गायक गान पेश करते व वाद सारंगी वादन करते हुए चित्रित हैं। इसी तरह एक अन्य चित्र में एक नवाब को संगीत का मजा लेते हुए दर्शाया गया है। कई चित्र ऐसे प्रदर्शित हैं जिनमें मृदंग व मंजीरा वादन सहित नृत्यांगना, नृत्य करते हुए वादकगण, नर्तक-नर्तकी स्तंभ, संगीत की मस्ती में खोये नायक-नायिका मृदंग बजाते हुए तथा नायक वीणा धारण किये हुए दर्शाया गया है। एक जगह स्त्रीवादक वीणा बजा रही है व नायक संगीत का आनंद लेता दिख रहा है। इसी प्रकार के एक अन्य चित्र में मृदंग व वीणा वादन करती एक-एक स्त्री, संगीत प्रस्तुतियां देता समूह है तथा नायक पूरी मस्ती के साथ संगीत के आनंद में निमग्न है।

सुर-ताल के सूक्ष्म तत्वों का चित्रण

विभिन्न राग-रागिनियों, बारहमासा से जुड़े कई प्राचीन चित्र संग्रहालय की कला-संगीत दीर्घा को समृद्ध व उत्कृष्ट बनाये हुए हैं। इसमें रागिनी गुणकली के लघु चित्र में संगीत का आनंद लेती नायिका चित्रित है। बारहमासा के लघुचित्र में नायक-नायिका के साथ में वीणा व मृदंगवादक नारियां दर्शायी गई हैं। राग मेघ से संबंधित लघुचित्र में नायक-नायिका संगीत के स्वरों में खोये हुए चित्रित है। रागिनी टोडी के लघु चित्र में हाथ में वीणा लेकर नृत्य करती नायिका दर्शायी गई है। रागिनी असावरी का एक लघु चित्र भी दीर्घा में प्रदर्शित है जिसमें पर्वत के शिखर पर एक स्त्री बीन बजा रही है और बीन की धुन पर 21 सर्प फन उठाये चित्रित हैं। चरवा नाम से प्रदर्शित चित्र में सारंगी व मृदंग बजाते साजिन्दे दर्शित हैं। देवताओं के चित्रों में नृत्यरत भैरव का लघु चित्र है वहीं बाघासन पर विराजमान शिव के सम्मुख स्त्रीवादक वीणा एवं मृदंग बजाते हुए दिखाये गए हैं।

लोकजीवन का संगीत संसार

जैसलमेर के संग्रहालय में वीणाधारी स्त्री प्रतिमा है जो काष्ठ की बनी हुई है। मिट्टी से बने चार सुंदर फलक हैं। इनमें पहले फलक पर दुल्हा-दुल्हन जात देने जाते हुए तथा वादक मृदंग बजाते हुए दिखाये गये हैं। दूसरे फलक मे नगाड़े बजाते वादक समूह तथा तीसरे फलक में बीन बजाता हुआ सपेरा दिखाया गया है। इसी प्रकार मिट्टी के ही बने एक अन्य फलक में सारंगी वादक समूह दर्शाया गया है।

आंचलिक लोक वाद्यों का संग्रह

कला दीर्घा का एक हिस्सा पूरी तरह आंचलिकता को समर्पित है। इसमें जैसलमेर अंचल से प्राप्त सुशिरवाद्यों में शहनाई, मुरली, पुंगी जोड़ी, अलगोजा, सतारा, नड़ आदि, तंत्री वाद्यों में रावणहत्था, देशी वीणा, कमायचा, चिंकारा, सारंगी, सिन्धी सारंगी, स्वरमण्डल आदि हैं जबकि जैसलमेर क्षेत्र में प्राप्त अवनद्ध वाद्यों में डमरू, ढोलक, चंग नगाड़ा, ढोल, दंगली ढोल आदि के साथ ही अन्य वाद्यों में मोरचंग समूह, खड़ताल समूह, हारमोनियम आदि बड़े ही सलीके से प्रदर्शित हैं।

इस प्रकार की दुर्लभ सामग्री संजोने वाले जैसलमेर संग्रहालय को देखने जो भी आता है वह नई जानकारियां पाकर अपनी जैसलमेर यात्रा को धन्य मानता है। इस संग्रहालय की गूंज देश-विदेश तक है।

सिरोही:
सारणेश्वर महादेव का मेला

सुश्री हेमलता सिसोदिया
जनसंपर्क अधिकारी

कोरोना काल के दो साल बाद देवझूलनी एकादशी पर शहर में राजसी ठाठ बाट के साथ रेवाड़ी निकाली गई। पश्चिमी राजस्थान का रेबारी समाज का सबसे बड़ा सारणेश्वरजी मेला भरा जाता है। शाम को पैलेस से शाही अंदाज में ठाकुरजी की पालकी पद्मनाथ मंदिर से शुरू होती है, अन्य मंदिरों की पालकियां भी जुड़ती हैं, और आखेलाव तालाब पर स्नान के बाद सभी पालकियों के ठाकुरजी की आरती की जाती है। पद्मनाथ मंदिर की पालकी के पैलेस पहुंचने के साथ ही पूर्व नरेश रघुवीर सिंह देवड़ा द्वारा रेबारी समाज के लोगों के लिए मेले की घोषणा की जाती है। दूसरे दिन सर्वसमाज के लिए मेला होता है।

दूसरे दिन जिलेभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते है एवं एक दिन पूर्व रात को देवासी समाज के नाम रहता है और रेबारी समाज के लोग अपनी पूर्ण वेशभूषा में नजर आते हैं। रातभर मंदिर परिसर में सारणेश्वर के जयकारे गूंजते हैं। सवेरे से ही श्रद्धालुओं के आने का क्रम शुरू हो जाता है और दोपहर तक मंदिर परिसर में भारी भीड़ जमा जाती है। दिनभर मंदिर में भजन-कीर्तन आदि धार्मिक कार्यक्रम के चलते रेबारी समाज की महिलाओं द्वारा गीत गाने के साथ लूर लेकर सारणेश्वर महादेव के प्रति अगाध श्रद्धा का परिचय देते हैं। हर साल देवझूलनी एकादशी को इस मेले का आयोजन होता है। जिसमें पहले दिन देवासी समाज के लोग शामिल होते हैं। मेले की खासियत यह है कि इसमें समाज के लोग एक-दूसरे से मुलाकात करते हैं। हाल चाल जानते हैं और जो परिवार में बड़ा होता है, उससे आशीर्वाद लेते हैं। परंपराओं के इस मेले में ऐसे भी नजारे देखने को मिलते हैं, जब बड़े को देखते ही छोटे उसका आशीर्वाद लेने दौड़ पड़ते हैं।

कोरोनाकाल के दो साल बाद भरा मेला, पाली, जालौर, सिरोही से पहुंचे देवासी समाज के लोग

कोरोना काल के दो साल बाद समाज की धर्मशाला में रातभर भजन समाजबंधुओं ने आराध्यदेव सारणेश्वरजी के मेले में सिरोही, जालौर कीर्तन का दौर रहा। सारणेश्वर मंदिर भगवान को चूरमे का भोग लगाया जाता है।

बोलीचाली रा गुनाह माफ, भाइयों म्हारा राम-राम के साथ विदाई

मेले की समाप्ति के साथ देवासी समाज के लोग यह कहते हुए लौट गए... बोलीचाली रा गुनाह माफ, भाइयों ने म्हारा राम-राम रे। इधर, सवेरे रेबारी समाज धर्मशाला में सम्मेलन का होता है जिसमें समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार और कुरीतियों को खत्म करने पर चर्चा व समाज के विकास और एकजुटता पर जोर दिया जाता है।

ENTREPRENEURIAL EDUCATION IN RAJASTHAN

Bhunesh Mathur

Entrepreneurial and managerial skills are a very important skills which are required by every young individual hence must be taught at a very young age from class ninth. Now a days this has become an employability skill.

Under Mukhyamantri Laghu Udhyog Protsahan Yojna from December 2019, the establishment of micro, small and medium units became easy, which offered loans with substantial subsidies. For establishment and expansion of existing business and diversification or modernizing of old machineries, five to eight percent subsidy for a loan upto 10 crores is given on the interest. In this scheme 15,625 applicants were provided loan of Rs. 3951.29 crores.

Hence action has to be taken to strongly consider, to introduce this as a promising subject with an explanation, that in remaining four years of schooling (from 9th), a student can become a self-made entrepreneur (small or big). Let us discuss that in ITI colleges Entrepreneurship is taught as a subject, at this nascent stage the student is aware of his/her future, they become ready to join the job market or become an entrepreneur to earn livelihood and a very little dependence on parents or family.

The introduction and teaching of Entrepreneurship and Professional Management skills will reduce the heavy dependence on assured job too. So, it is a strong belief that if the students are trained from very beginning they can definitely turn around a successful entrepreneur and managers of self-owned business units.

When more and more students at school and college are motivated to start their own set up of small business, problem of unemployment, creation problems of jobs saturation would go away. Rather the job seekers in turn would become job creators. We have just to break the myth deeply rooted in our mindset.

Various schemes to create employment opportunities by Rajasthan government must be regularly highlighted like in agriculture, service sectors, trading and manufacturing at a very low investment many small units can be set up .

Entrepreneurship and Professional Management skills are taught in Diploma in Paramedical which is delivering sound knowledge and after completing the course many students opened their own investigation laboratories.

Online portal for registration of MSME in Rajasthan can be done at rajudyogmitra.rajasthan.gov.in, the MSME can register themselves at a click and certificate of registration will be provided online.

Various finance providing schemes must be introduced and ease of getting loans from scheduled banks and private banks needs to be addressed. A detailed project report must be in support with the request for loan. A paradigm shift can be witnessed in near future. Small units like spices packing, flour mills, computer and software repairs, beauty salons, designing and tailoring clothes, medical stores, medical laboratories, food and tiffin services, are to name the few.

In modern era negotiation skills, communication skills, control on one's emotions, personality enhancement are becoming need of the day, in order to be a successful entrepreneur. Rajasthan state is endowed by nature in term of minerals, man power, education, health, culture and good governance. Government of Rajasthan is not keeping any stone unturned in its endeavour. Youth of Rajasthan is also capable and reliable in terms of entrepreneurial qualities and in generating employment.

आदिवासी अंचल में ग्रामीण पर्यटन और प्राकृतिक सौन्दर्य का बेजोड़ नमूना : ओगना डैम

देवीसिंह सैनी
स्वतंत्र लेखक

राजस्थान कला और संस्कृति की महक बिखेरता अनुपम स्थल है। मरूधरा वैसे तो थार के सुनहरी रेत के समंदरनुमा धोरों के लिए जानी जाती है। रंग-बिरंगे परिधान, हरियाली चुनर की धानी ओढ़े पहाड़ पठार आदि भी इस अंचल की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। यहां का प्रकृतिक सौन्दर्य बरबस ही हर किसी को आकर्षित कर लेता है। विश्व के प्राचीन पर्वतों में से एक अरावली पर्वत शृंखला के एक छोर पर आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में हरियाली की चादर ओढ़े पहाड़ तो दूसरी ओर हल्दी घाटी की सोंधी महक बिखेरती आन-बान और शान की प्रतीक हल्दी घाटी मेवाड़ की धरती के वीर सपूत महाराणा प्रताप की याद दिलाती है।

उदयपुर से 70 किलोमीटर की दूरी पर बसे माउंट आबू रोड स्थित गोगुंदा से झाड़ोल के इस बांध को ओंगना डैम कहते हैं। 48 किलोमीटर ऊंचा मिट्टी से बना यह पहला डैम है जिसके बीच के टापूनुमा द्वीप बरसात के दिनों में स्विट्जरलैण्ड जैसी अनुभूति कराते प्रतीत होते है। गोगुन्दा से ओगना की तरफ जाते हुए ऊंचे पहाड़ों और नदियों के बीच घुमावदार रास्ते अद्‌भुत आनन्द की अनुभूति कराते हैं। वर्षा ऋतु में इसका सौन्दर्य चरम पर होता है। आदिवासी बाशिन्दों के लिए जल संग्रहण का उपयोगी स्रोत है ओंगना डैम। इसके समीप राम कुण्डा सरोवर है जहां बारह महीने निर्बाध झरना बहता रहता है। लगभग 500 फुट नीचे बहता हुआ झरना जल तरंग की ध्वनि उत्पन्न करता है। झरने तक पहुंचने के लिए आदिवासियों ने घुमावदार सीढ़ियां बना रखी हैं।

बाहुबली झरना जहां हुई राजस्थानी फिल्म की शूटिंग

प्रकृति की गोद में ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों के बीच बसा है रामकुंडा सरोवर गांव। शूटिंग के बाद इस स्थल के प्रति पर्यटकों के आकर्षण में इजाफा हुआ है। यहां स्थित झरना बाहुबली झरने के रूप में लोकप्रिय

हो गया और काफी पर्यटक यहां आने लगे हैं। अहिंसा की राह पर बवंडर मचाती फिल्म ''बाहुबली राजस्थानी'' की शूटिंग यहां की गई है। राजस्थानी फिल्मों के निर्माता-निर्देशक विपिन तिवारी ने राजस्थानी फिल्म ''बाहुबली राजस्थानी'' बनाने की परिकल्पना के साथ यहां शूटिंग की। शूटिंग क्या हुई दूर-दराज से पर्यटक यहां आने लगे और इसकी हरियाली छटा में पिकनिक मनाने लगे हैं। फिल्म में हल्दीघाटी का युद्ध बड़े परदे पर दिखाये जाने की योजना है। समाज की कुरीतियों पर आघात करती गांधीवादी दर्शन और अहिंसा पर आधारित इस फिल्म में जल संग्रहण और बरसाती पानी को सहेजने के लिए भी प्रेरित किया गया है। गौरतलब है कि राजस्थान सरकार राजस्थानी सिनेमा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश सरकार द्वारा ''राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति-2022'' लागू की गई है। इससे प्रदेश में राजस्थानी फिल्म निर्माण उद्योग और सिनेमा जगत से जुड़े लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

पंच पर्वों का प्रतीक

दीपोत्सव

कविता जोशी
सहायक निदेशक, जनसंपर्क

दीप हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। दीप ज्योर्तिमय सूर्य का ही नहीं अपितु ईश्वर का भी प्रतीक है। दीपोत्सव का प्रादुर्भाव वेदों से है। ''ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योति स्वाहा'' दीप व सूर्य का सम्बन्ध स्पष्ट गोचर है। सूर्य अथवा ईश्वर से प्रार्थना, मनोकामना सिद्धि के लिए दीपक जलाकर पूजन करने का प्रावधान वेदों में निहित है। खुशी व्यक्त करने के लिए भी दीपक जलाकर प्रसन्नता व्यक्त की जाती है। हिन्दी की लोकोक्ति भी है। ''घी के दीप जलाना''। अर्थात प्रसन्नता जाहिर करना।

दीपोत्सव नाम कैसे पड़ा

प्राचीन समय में किसान वर्षा ऋतु के बाद व शीत ऋतु के आगमन के मध्य फसलों की तैयारी कर आनंद विभोर हो दीप जलाकर खुशियां मनाते व नाचते गाते थे। तभी से दीपोत्सव की शुरुआत हुई होगी। अपनी खुशियों को व्यक्त करते करते यह दीपोत्सव धार्मिक आस्था से जुड़ गया और लक्ष्मी पूजन धन प्राप्ति के लिए और श्री राम के अयोध्या लौटने की कहानी से जुड़कर दीपावली बन गया। आज समस्त भारत में लोकमंगल का यह पर्व दीपावली के नाम से आस्था और श्रद्धा के साथ धूम-धाम से मनाया जाता है। अनेक विषमताओं विभिन्नताओं के बावजूद कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ल द्वितीया तक पंच दिवसीय दीपावली पर्व हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

स्वास्थ्य और वैज्ञानिक दृष्टि से भी इस दीपोत्सव में सन्देश छिपे हैं

परम्परा के साथ स्वास्थ्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इस पर्व में विशेष महत्त्व छुपा हुआ हैं। वर्षा ऋतु के पश्चात लोग अपने घरों की साफ सफाई में जुट जाते हैं। कूड़ा-करकट अनुपयोगी सामान बाहर निकाल देते हैं। घरों में रंग-रोगन, लिपाई-पुताई से सभी ग्रामीण एवं शहरी लोग अपने घर को पवित्र व स्वच्छ करने लग जाते है। जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है। कि इस पर्व का प्रथम उद्देश्य या संदेश स्वच्छता व निरोग है। कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी से मनाये जाने वाले इस पंच दिवसीय पर्व के प्रथम दिन त्रयोदशी को लोक भाषा में धनतेरस भी कहा जाता है। त्रयोदशी के अगले दिन कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को रूप चौदस के नाम से जाना जाता हैं इस दिन महिलाएं पूजा स्थल पर दीपक जलाकर अपने केश धोती हैं और उबटन आदि लगाकर स्नान कर नए वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित होती है। रूप लक्ष्मी से रूप सौन्दर्य की कामना करती है। एक कहावत के अनुसार श्री कृष्ण ने नरकासुर राक्षस का संहार कर एक हजार देव, गंधर्व, मानव कन्याओं को नारकीय जीवन से मुक्त कराया था। इसलिए इस दिन को नरक चौदस भी कहा जाता हैं। अभिप्राय यह है कि आलस्य, क्रोध व लोभ नरकासुर असुर के ही स्वरूप हैं और इनसे मुक्ति की कामना करते हुए दीप जलाए जाते हैं। कई प्रांतों में इसे छोटी दीपावली भी कहा जाता है। इस दिन तेल-मर्दन, स्वच्छ जल स्नान, कृष्ण-वस्त्र परिधान तथा दीपदान (प्रज्वलन) चार विधानों को प्रमुखता दी जाती है। दीपावली का त्योहार लक्ष्मीपूजन तक ही सीमित नहीं है। दीपावली उपार्जन तथा विवेक से समुचित उपयोग का सुदंरतम संदेश लेकर आती है और यह संदेश मिलता है कि स्वयं प्रकाशमान होकर औरों को प्रकाशित करें। लक्ष्मी जी के साथ गणेश जी का भी पुजन किया जाता है। जिससे यह संदेश मिलता है कि सम्पन्नता के लिए क्षमता योग्यता बढ़ाने तथा मनोयोग पूर्वक परिश्रम करने की आदत डालें। अनावश्यक व्यय से बचें। गणेश जी के साथ रिद्धि सिद्धि स्वतः ही हदृयागंन में विराजमान हो जाएगी। सरस्वती पूजन से विद्या कौशल कुशाग्र बुद्धि की मनोकामना सिद्ध होती है। खुशी को व्यक्त करने के लिए ही आतिशबाजी भी की जाती है।

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा का विधान है। इस दिन श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली से उठाकर प्रजा की रक्षा की। इसलिए श्री कृष्ण के नाम का दीपक जलाकर पूजा अर्चना की जाती है। वैश्य वर्ग द्वारा इस दिन नया वर्ष भी मनाया जाता है। वर्ष शुभ हो लाभकारी हो इस लिए दवात, लेखनी व बहियों की पूजा कर दीपक जलाया जाता है। इसी कारण इसे दवात पूजा भी कहा जाता है। श्रीकृष्ण की पूजा कर नाना प्रकार के व्यजंन बनाकर भोग लगाया जाता है। जिसे अन्नकूट के नाम से जाना जाता है। भाईदूज कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीय तिथि दीपावली के पंच दिवसीय पर्व का समापन समारोह का दिन होता है।

पुण्य तिथि पर विशेष

भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री

इंदिरा गांधी

(19 नवंबर 1917–31 अक्टूबर 1984)

योगेश 'नवीन'
स्वतंत्र लेखक

विश्व की प्रशंसित नारी का नाम है इंदिरा गांधी। जिस किसी को उनके संपर्क में आने का अथवा उनसे बातचीत करने का या उनको सुनने का अवसर मिला, उसे वे आत्मीयता से पूर्ण एक सहृदय महिला लगी। इंदिरा गांधी का जन्म इलाहाबाद में 19 नवम्बर, 1917 को हुआ था। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू की पुत्री एवं पं. मोतीलाल नेहरू की पौत्री थी।

श्रीमती इंदिरा गांधी के जन्म के समय देश बड़ी विकट परिस्थितियों से जूझ रहा था। यूरोपीय महाभारत का संधि–पत्र तैयार हो रहा था तथा कूटनीति एवं भारतीय सेनाओं के बल पर प्राप्त विजय से उन्मत्त हो अंग्रेज सरकार अधीनस्थ उपनिवेशों की दासत्व शृंखला को भी सुदृढ़ करने की चेष्टा कर रही थी। भारत द्वारा जन–धन से सहायता करने का पुरस्कार दिया अंग्रेजों ने रॉलेट एक्ट और जलियाँवाला कांड के रूप में। यहीं से आया देश में तूफान – सविनय आज्ञा–भंग आंदोलन, त्याग, बलिदान और हृदय–परिवर्तन की एक आंधी जिसने समूचे देश में एक उत्तेजना फैला दी। गांधीजी के आह्वान पर छात्र विद्यालय छोड़कर सड़कों पर आ गये, वकीलों ने वकालत और डॉक्टरों ने डॉक्टरी छोड़ दी। सरकारी नौकरों ने अपनी नौकरियां छोड़ दी और गांधीजी के साथ हो लिये। 'नाइट', 'राय बहादुर', 'राजा साहब' जैसे खिताबधारियों ने इन खिताबों को दासता का प्रतीक मानकर त्याग दिया।

बालिका इंदिरा ने इस तूफान को आते और संपूर्ण भारत के राजनीतिक आकाश पर छाते हुए देखा। जुलूस, नारे, सत्याग्रह, सभा, जेल, जुर्माना, बायकाट जैसे कितने की शब्द उन्हें बचपन से सुनाई पड़े और इंदिरा गांधी का बाल–सुलभ मन–मस्तिष्क इन शब्दों का अर्थ समझने का प्रयास करता रहा। पिता पं. जवाहर लाल नेहरू कभी जेल में होते तो कभी भारत मां की पराधीनता की बेड़ियां काटने के लिए प्रदर्शन–जुलूस और सभाओं में व्यस्त होते। ऐसी परिस्थितियों में इंदिराजी की प्रारंभिक शिक्षा सुव्यवस्थित रूप से नहीं हो सकी किंतु पारिवारिक वातावरण की पाठशाला में उन्होंने ऐसी शिक्षा प्राप्त की, कि उन्हें हर तरह से योग्य बना दिया।

जिस उम्र में अधिकांश बच्चे अबोध होते हैं, उन्हें अपने आसपास की दुनिया से कोई सरोकार नहीं होता और खाने–पीने एवं खेलों में ही व्यस्त रहते हैं, उस आयु में इंदिरा गांधी काफी समझदार हो गई थीं और उन्हें अनेक प्रकार के अनुभव हो चुके थे। 9–10 वर्ष की उम्र में उन्होंने एक 'वानर सेना' का गठन किया। शहर के हजारों बालक–बालिकाएं उसके सदस्य बन गये। इस 'वानर सेना' का नेतृत्व बालिका इंदिरा ने बड़े साहस और सतर्कता के साथ किया। जुलूस के रूप में 'वानर सेना' के दो–ढ़ाई हजार सदस्य जब दो कतारों में नारे लगाते हुए चलते तो सड़कों पर देखने वालों की भीड़ जमा हो जाती और वे 'वानर सेना' की सफलता की दुआएं करने लगते, आशीर्वादों के सुमन बिखरने लगते। इस वानर सेना ने सत्याग्रहियों की बहुत सहायता की।

1934 में श्रीमती इंदिरा गांधी को गुरु रवीन्द्र के 'शांति निकेतन' में भेजा गया। इंदिरा जी ने बड़े मनोयोग से यहां विद्याध्ययन आरंभ किया किंतु कुछ ही समय बाद अपनी बीमार मां की देखरेख के लिए उन्हें वापस इलाहाबाद बुलवा लिया गया। अपनी माता का इलाज करवाने हेतु वे उन्हें लेकर जर्मनी गई किंतु कमला जी की हालत दिन–प्रतिदिन बिगड़ती ही चली गई। 28 फरवरी, 1936 को कमला जी का स्वर्गवास हो गया। ऑक्सफोर्ड की प्रवेशिका–परीक्षा की तैयारी के लिए इंदिरा जी इंग्लैण्ड गई। शिक्षा ग्रहण करने हेतु वे वहीं रही। वहां फिरोज गांधी के साथ–साथ कुछ अन्य देशभक्त युवक भी अध्ययन करने हेतु गये हुए थे। श्री फिरोज गांधी से श्रीमती इंदिरा गांधी का पहले से परिचय था। मार्च, 1941 में वे दोनों विवाह–बंधन में बंध गये।

15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ और पं. जवाहर लाल नेहरु स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। जवाहर लाल जी के प्रधानमंत्री बनते ही श्रीमती इंदिरा गांधी पर अपने व्यस्त पिता की देखभाल का बोझ आ पड़ा। 1960 में फिरोज गांधी की हृदय गति रुक जाने से असामयिक मृत्यु हो गई। तब से वे पूर्णत: अपने पिता का सहयोग करने लगी किंतु थोड़े ही समय बाद 27 मई, 1964 को पं. जवाहर लाल नेहरु का निधन हो गया। अब इंदिरा गांधी को पारिवारिक रूप से अकेलापन महसूस हुआ और राजनीतिक क्षेत्र में उनके आदर्श पिता का साया भी उन पर से उठ चुका था। ऐसे समय में इंदिरा गांधी ने बड़े साहस से काम लिया और अपने को टूटने नहीं दिया वरन् वे पूर्ण मनोयोग से देश के प्रति समर्पित हो गई।

पं. जवाहर लाल नेहरु की मृत्यु के बाद श्री लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने। शास्त्री जी के मंत्रीमंडल में इंदिरा गांधी ने सूचना एवं प्रसारण मंत्री का पद ग्रहण किया जिसका उन्होंने सुचारू रूप से संचालन किया और अपनी प्रशासनिक कुशलता का परिचय दिया। 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। तब इंदिरा गांधी ने सैनिकों का होंसला बढ़ाया और देशवासियों को तन-मन-धन से देश-सेवा हेतु प्रेरित किया। 1966 में शास्त्री जी के निधन के बाद उन्हें सर्वसम्मति से नेता चुना गया। प्रधानमंत्री बनने के बाद इंदिरा गांधी ने देश की समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और देश के आर्थिक ढांचे को मजबूत करने का निश्चय किया। अमीरों और गरीबों के बीच की खाई पाटने के लिए तथा समाजवाद के लिए उन्होंने सर्वप्रथम 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। एक महिला के ऐसे साहसिक कदम उठाने पर संपूर्ण विश्व दंग रह गया।

देशवासियों ने भी अपने प्रधानमंत्री की भूरि-भूरि प्रशंसा की किंतु एक महिला का राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ना उस समय के कुछ राजनीतिज्ञों को गवारा नहीं हुआ। पुराने नेता जो इंदिरा गांधी की प्रगतिवादी नीति के समर्थक नहीं थे, एक-एक करके उनसे अलग होते गये। इंदिरा जी फिर भी नहीं झुकी। इंदिरा गांधी के साहस, कार्य कुशलता एवं प्रगतिवादी नीतियों से जनता का परिचय हो चुका था। परिणामस्वरूप इंदिरा गांधी को भरपूर समर्थन प्राप्त हुआ।

1971 में पाकिस्तान ने पुन: भारत की सीमाओं पर आक्रमण कर दिया। इंदिरा गांधी ने साहस के साथ परिस्थितियों का सामना किया। उन्होंने ना अमरीका की परवाह की, ना चीन और अन्य राष्ट्रों की चिंता। उन्हें अपने देशवासियों पर विश्वास था और यहां के जवानों की शक्ति से वे पहले ही परिचित हो चुकी थीं। भारतीय सेना ने पूर्व और पश्चिम के सभी मोर्चो से शत्रु को पीछे खदेड़ना शुरू किया। भारतीयों के शौर्य व अदम्य साहस के आगे पाकिस्तानी सेना टिक नहीं सकी और उसे मुंह की खानी पड़ी। युद्ध में भारत की और विरोधियों के आगे इंदिरा गांधी की एक बार फिर विजय हुई। विपक्षियों ने इंदिरा जी के साहसिक कदम

की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इंदिरा गांधी की मान्यता थी कि साहसी व्यक्तित्व के लिए जोखिम उठाना अतिआवश्यक है।

श्रीमती इंदिरा गांधी के व्यक्तित्व ने उन्हें विश्व की सर्वाधिक प्रशंसित नारी बना दिया था। भारत जैसे विशाल देश की अनगिनत समस्याओं का उन्होंने बड़े साहस के साथ सामना किया। वे निरन्तर इन समस्याओं के निदान के लिए जूझती रही और भारत को विकास के मार्ग पर अनवरत् आगे बढ़ाती रही। मंजिल अभी दूर थी, इंदिरा गांधी अपने दृढ़ कदमों से समय के साथ आगे बढ़ रही थी, किंतु 31 अक्टूबर, 1984 को नियति के क्रूर हाथों ने साहस की इस प्रतिभा को हमेशा के लिए छीन लिया।

श्रीमती इंदिरा गांधी जो कहती थी, उसे करके ही दिखाती थी। गरीबी को वे देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा मानती थी। उन्होंने समाजवाद का मार्ग अपनाया और हमेशा गरीबी-उन्मूलन हेतु प्रयास करती रही। उन्हें अपने देश भारत एवं इसकी सभ्यता और संस्कृति पर गर्व था। इंदिरा गांधी कला में गहरी रूचि थी। अपने विदेश भ्रमण के दौरान भी कुछ समय निकाल कर वे वहां की कला और संस्कृति के केन्द्रों को देखने जाती और लेखकों व कलाकारों से बातचीत करती। उन्हें प्रकृति से बेहद प्रेम था और पर्यावरण संरक्षण के लिए उन्होंने काफी प्रयास किये। विश्व के जुझारू नेताओं में उनकी गिनती थी और वे इंदिरा गांधी का लोहा मानते थे।

आज के नेता इंदिरा गांधी के संघर्षमय एवं साहसिक जीवन से बहुत कुछ सीख सकते हैं। स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी आज भी अमर हैं।

मिशन सुरक्षित बचपन

संतोष कुमार मीना
जनसंपर्क अधिकारी

प्रदेश में बाल अपराधों की घटनाओं की रोकथाम तथा बाल संरक्षा की दिशा में बूंदी पुलिस ने राज्य में पहला नवाचार करते हुए जिले में 'मिशन सुरक्षित बचपन' शुरू किया है। बाल अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस द्वारा प्रथम चरण में चिह्नित 17 ग्राम पंचायतों में मिशन के तहत चौपालों का आयोजन किया जा रहा है। स्कूलों में पोक्सो और जेजे एक्ट (जुवेनाइल जस्टिस) की व्यापक जानकारी बच्चों एवं किशोरों को दी जा रही है।

बूंदी जिला पुलिस अधीक्षक श्री जय यादव की पहल पर बूंदी पुलिस की ओर से शुरू किया गया मिशन बाल अपराध की रोकथाम के लिए प्रदेश का पहला नवाचार है, जो राज्य के अन्य जिलों के लिए भी मिसाल बन रहा है। मिशन की शुरुआत जिले के देलूंदा गांव से हुई।

आदर्श बाल संरक्षण ग्राम होगा जिला स्तर पर सम्मानित

देलूंदा गांव में मिशन सुरक्षित बचपन के शुभारंभ अवसर पर जिला कलक्टर डॉ. रविन्द्र गोस्वामी ने जिला पुलिस की इस मुहिम की सराहना करते हुए घोषणा की है कि 'आदर्श बाल संरक्षण ग्राम' घोषित होने पर जिला प्रशासन की ओर से गांव को जिला स्तर पर सम्मानित किया जायेगा ।

आंकडों के वैज्ञानिक अनुसंधान, विश्लेषण के बाद मिशन की शुरुआत

जिले में बाल अपराधों के लिए शुरू किए गए 'मिशन सुरक्षित बचपन' से पहले जिले में विगत तीन वर्ष में हुई बाल अपराधों की घटनाओं, स्थानों और आंकड़ों का वैज्ञानिक अनुसंधान किया गया। प्रकरणों के विश्लेषण में पाया गया कि सोशल मीडिया और शिक्षा की कमी से अपराधों में बढोत्तरी हुई। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार इन तीन सालों में 490 प्रकरण पोक्सो एक्ट के दर्ज हुए। ऐसे में मिशन के माध्यम से जागरुकता लाकर बाल अपराधों की रोकथाम के लिए मिशन की शुरूआत की गई है।

इन गांवों और कस्बों से हुई मिशन की शुरुआत

जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों के ग्राम व कस्बों को मिशन में शामिल किया गया है। केशवराय पाटन, तीरथ, चितावा, सीन्ता, सूनगर, लाडपुर, झालीजी का बराना, लोहली, रेबारपुरा, डाबी, बुधपुरा, धनेश्वर, लाखेरी , बड़ाखेड़ा, पीपल्या में भी 'मिशन सुरक्षित बचपन' के तहत बच्चो को बाल अपराधों की जानकारी व इससे होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में व कानूनी जानकारी देकर जागरूक कर मिशन का शुभारंभ किया गया।

बाल सरंक्षण आदर्श गांव बनाने की ली शपथ

कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर मिशन में शामिल पंचायतों में निवासरत समाज और ग्राम पंचायत के सदस्य ने बच्चों को सुरक्षित माहौल देने एवं पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर अपने गांव को बाल संरक्षण आदर्श गांव बनाने की शपथ ली।

सुरक्षित बचपन समितियां बनाई

मिशन सुरक्षित बचपन के लिए प्रत्येक गांव में समितियों का गठन किया गया है। इनमें थानाधिकारी, विशेष किशोर इकाई पुलिस अधिकारी, बीट कॉनिस्टेबल, सुरक्षा सखी, पुलिस मित्र, सरपंच, वार्ड पंच, विद्यालय के शिक्षक, प्रत्येक समाज के 2 प्रबुद्धजन को शामिल कर बच्चों को सुरक्षित माहौल प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

मिशन सुरक्षित बचपन में बच्चियों व किशोरियों की सुरक्षा पहली प्राथमिकता है। इस अभियान में जागरुकता और कानून की जानकारी की कमी को पूरा किया जाएगा।

मिशन को लेकर जिले के ऐसे क्षेत्रों को चिह्नित किया गया है, जिनमें जागरूकता की कमी के चलते बाल अपराध घटित हुए है। अधिकतर मामलों में ऐसे अपराध में शामिल व्यक्ति आदतन अपराधी नहीं होते हैं। ऐसे में इन अपराधों की रोकथाम के लिए मिशन सुरक्षित बचपन चलाया गया है। इस मुहिम के जरिए पोक्सो और जेजे एक्ट की जागरूकता के लिए इसे पाठ्य पुस्तकों में जोड़ने का भी प्रयास किया जा रहा है।

जूना किला, बाड़मेर

जूना किला बाड़मेर जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मध्यकाल में लगभग 10वीं-11वीं सदी में जूना की स्थापना की गयी। यह नगर चारों ओर से पहाड़ों से घिरा है। जूना किले में केवल एक मार्ग से ही प्रवेश किया जा सकता है इसलिए सामरिक और सुरक्षा की दृष्टि से ये महत्त्वपूर्ण स्थल है।

आलेख व छाया: अभय सिंह, सहायक जनसंपर्क अधिकारी

Postal Regd. No. Jaipur City/413/2020-22
Registered with Registrar of Newspapers of India under R. No. 56175/1991

तस्वीर बदलाव की

राजस्थान सरकार के फ्लैगशिप कार्यक्रम और अन्य योजनाओं की विस्तृत जानकारी
https://jankalyan.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

#DIPRRajasthan

प्रकाशक व मुद्रक – सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक, पुरुषोत्तम शर्मा द्वारा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के लिए, शासन सचिवालय, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित
सम्पादक – श्रीमती अलका सक्सेना, मै. कृष्णा प्रिन्टर्स, डी-14, सुदर्शनपुरा, जयपुर से मुद्रित, 'राजस्थान सुजस'–पृष्ठ संख्या 60, लागत मूल्य 30.56 रुपये • 4,80,000 प्रतियां